अणुव्रत

अहिंसक-नैतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक

वर्ष : 54 ■ अंक 20 ■ 16–31 अगस्त, 2009

❑ हम स्वयं हैं अपने सुख-दुख के कर्त्ता	*आचार्य महाप्रज्ञ*	3
❑ आज की आवश्यकता - मितभाषिता	*प्रो. प्रेम मोहन लखोटिया*	6
❑ महिलाओं की प्रगति	*भूपेन्द्र कुमार मूथा*	8
❑ युद्ध-समर्थकों बोलो, जवाब दो	*स्वामी वाहिद काज़मी*	10
❑ शुद्ध पर्यावरण - समृद्धि का आधार	*भूरचंद जैन*	11
❑ निज भाषा उन्नति का मूल	*जसविंदर शर्मा*	12
❑ अंतराल पीढ़ियों का मिट सकता है	*रामनिवास लखोटिया*	14
❑ मासूमों पर कहर	*नरेन्द्र देवांगन*	16
❑ चलो चलें उस पार कबीरा	*डॉ. निज़ामउद्दीन*	18
❑ विधायिका बनाम न्यायपालिका	*सत्यनारायण सिंह*	20
❑ सबसे बड़ा रुपया	*डॉ. बी.एन. पांडेय*	21
❑ हमारे कदम डगमगा तो नहीं रहे	*धर्मचंद जैन 'अनूजाना'*	22
❑ स्वतंत्र देश का आत्मचिंतन	*प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा*	23
❑ भय का दूसरा नाम है ईश्वर	*लक्ष्मी रानी लाल*	25
❑ कब आएगा भारतीय राजनीति में प्रकाश पर्व?	*गोवर्धनलाल पुरोहित*	26
❑ नदी की धार में - शिबू टी.	*रजनीकांत शुक्ल*	28
❑ हमारा विगत और वर्तमान	*प्रो. महेन्द्र रायजादा*	30

♦ संपादक ♦
डॉ. महेन्द्र कर्णावट

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

■ स्तंभ

❑ संपादकीय	2
❑ अणुव्रत अधिवेशन सूचना	7
❑ राष्ट्र चिंतन	15
❑ झाँकी है हिन्दुस्तान की	17
❑ कविता	19, 22
❑ प्रेरणा	24
❑ अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह	31
❑ अणुव्रत आंदोलन	33–39
❑ कृति	40

■ *सदस्यता शुल्क :*

- **एक प्रति** : बारह रु.
- **वार्षिक** : 300 रु.
- **त्रैवार्षिक** : 700 रु.
- **दस वर्षीय** : 2000 रु.

■ *विज्ञापन सहयोग:*

- **मुख पृष्ठ रंगीन 4** : 10,000 रु.
- **मुखपृष्ठ रंगीन 2–3** : 8,000 रु.
- **साधारण पृष्ठ पूरा** : 3,000 रु.
- **साधारण पृष्ठ आधा** : 2,000 रु.

■ *शुल्क भेजने का पता :*

अणुव्रत महासमिति, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-2 (भारत)

- **फोनः** 23233345, 23239963
- **फैक्सः** (011) 23239963
- **E-mail: anuvrat_mahasamiti@yahoo.com**

स्वतंत्रता दिवस पर हो संकल्प हमारा

अश्लीलता, नग्नता, बलात्कार और नारी सम्मान के संदर्भ में पिछले माह जो घटित हुआ और इसे लेकर जिस तरह की राजनीति खेली गई क्या वह स्वयं अशुचिता एवं बेशर्माई की चरम सीमा नहीं है। बलात्कार जैसे घिनौने-घृणित अपराध पर पीड़िता को मुआवजा देने और उसे धन से तौलने की वृत्ति नारी सम्मान की अवमानना ही तो है।

उत्तरप्रदेश में बढ़ती नारी असम्मान की घटनाओं के क्रम में जिस तरह से एक महिला नेता द्वारा अनर्गल प्रश्न उछाले गये और दूसरी महिला नेता द्वारा दिये गये कमोबेश वैसे ही जवाब से उत्तेजना बढ़ी और नारी सम्मान का मुख्य मुद्दा राजनीति में उलझ गया। छोटे और बड़े पर्दे पर भी नारी असम्मान का यह क्रम वर्षों से जारी है और इन वर्षों में तो नग्नता-अश्लीलता का प्रदर्शन अपनी चरम सीमा पर है। इस संदर्भ में निर्माताओं का यह कहना कि ''दर्शक जो देखना चाहते हैं उसे ही हम पर्दे पर उतार रहे हैं'' हमारी रुग्ण और आपराधिक मानसिकता का परिचायक है।

आज छोटे पर्दे अर्थात् टेलीविजन का प्रवेश हर घर में हो चुका है, जिस पर दिखाया जा रहा है कम कपड़ों में लिपटा नारी बदन, परिवार नियोजन के उत्तेजक विज्ञापन, एक दूसरे के कपड़े उतारते नर-नारी हाथ, नारी को गिराने की कुटिल चालें, आलिंगन और चुम्बनबद्ध शरीर, शराब और सिगरेट का सेवन करती नाजुक कलाइयां, रियलिटी शो के नाम पर उत्तेजक एवं अश्लील सवाल-जवाब और गर्म होता समूचा फिल्मी संसार।

छोटे और बड़े पर्दे की इस हरकत से हमारी परम्परागत सभ्यता और संस्कृति पर हमला हुआ है जिसका परिणाम चहुंओर दिखाई दे रहा है। हमारी संस्कृति सिमटी जा रही है और आयातित संस्कृति अपने पांव पसार रही है। परम्परागत भारतीय पहनावा, रीति-रिवाज, पर्व-त्यौहार, बोलचाल की भाषा, रहन-सहन सभी कुछ बदलता जा रहा है। गौरवमयी भारतीय संस्कृति को बचाने के लिए आवश्यक है कि इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिंट मीडिया पर लगाम लगे। मीडिया जीवन की सच्चाइयों तथा पाठकों-दर्शकों की पसंद के नाम पर जो सामग्री परोस रहा है उससे स्वस्थ समाज का सपना कभी भी पूरा नहीं हो पायेगा।

स्वतंत्रता की 62 वीं वर्षगांठ पर हम और हमारी सरकार यह इच्छाशक्ति जाहिर करें कि हम सभी गौरवमयी भारतीय संस्कृति को बलवती और आगे बढ़ाने की दिशा में संकल्पबद्ध होते हैं

- हम नग्नता-अश्लीलता से युक्त फिल्मों-धारावाहिकों को नहीं देखेंगे, उनका बहिष्कार करेंगे।
- हम अश्लील साहित्य का क्रय-विक्रय नहीं करेंगे और न ही उसका स्वाध्याय करेंगे।
- हम भारतीय भाषाओं एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी का दैनिक जीवन में उपयोग करेंगे।
- हम भारतीय पर्व-त्यौहारों को परंपरागत ढंग से आयोजित करेंगे।
- हम परंपरागत पहनावे, रीति-रिवाजों को बढ़ावा देंगे।
- हम व्यसनमुक्त एवं आडंबरमुक्त जीवन जीएंगे।
- हम संयुक्त परिवार को बढ़ावा देंगे।
- हम नारी-सम्मान को सुनिश्चित करेंगे।
- हम हिंसा का प्रतिकार करेंगे।

राष्ट्रीय स्वाभिमान और गौरवमयी संस्कृति की सुरक्षा के लिए हमें इतना तो करना ही होगा। क्या हम सभी इस दिशा में प्रयाण कर स्वच्छंद होती स्वतंत्रता को असली आजादी में बदल पायेंगे?

◆ **डॉ. महेन्द्र कर्णावट**

हम स्वयं हैं अपने सुख-दुख के कर्त्ता

प्रतिकूल परिस्थिति आयी, व्यक्ति को दुःख हो गया। अनुकूल परिस्थिति आयी, व्यक्ति को सुख हो गया। वह निमित्त बना। किन्तु सुख-दुःख का संवेदन वह परिस्थिति नहीं करती। सुख-दुःख का संवेदन व्यक्ति स्वयं करता है। सुख-दुःख का अर्जन व्यक्ति स्वयं करता है।

● आचार्य महाप्रज्ञ ●

हमारी दुनिया में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है, जिसने दुख न भोगा हो। प्रत्येक व्यक्ति कभी सुख और कभी दुःख भोगता रहता है। आदमी सुख चाहता है, दुःख नहीं। चाही वस्तु मिले तब तो ठीक बात है पर अनचाही वस्तु मिलती है तब प्रश्न होता है कि यह दुःख कहां से आया? जहां से सुख आया, वहां से दुःख आया। जैसे सुख आया, वैसे ही दुःख आया। स्रोत दोनों का एक है। एक ही दरवाजे से दोनों आते हैं। एक ही दरवाजा है, उसमें से आदमी भी आ गया, कुत्ता भी आ गया, गधा भी आ गया। दोनों का स्रोत एक है। फिर प्रश्न होता है कि आदमी सुख चाहता है, सुख के लिए उद्यम करता है, सामग्री जुटाता है पर दुःख नहीं चाहता। वह क्यों आता है? इसका उत्तर मिला कि अपनी आत्मा ही सुख को करने वाली है, अपनी आत्मा ही दुःख को करने वाली है। दूसरा कोई न सुख करने वाला है और न दुःख करने वाला है। क्या सुख-दुःख करने वाला ईश्वर नहीं है? दूसरा कोई नहीं है। आत्मा स्वयं है। बात तो उलझी हुई है कि ईश्वर को तो कर्ता नहीं माना, आत्मा को तो कर्ता मान लिया तो ईश्वर को ही कर्ता मान लेते। इस पर जैन दर्शन ने अपना चिंतन प्रस्तुत किया कि मूल तत्त्व का कर्ता कोई नहीं है। न आत्मा है, न परमात्मा है। सुख और दुःख ये कोई मूल तत्त्व नहीं है। ये तो पर्याय हैं। यह एक अवस्था है। मनुष्य भी मूल तत्त्व नहीं है। मूल तत्त्व है आत्मा। मनुष्य है एक पर्याय। एक अवस्था। मूल तत्त्व है परमाणु। यह घर बना, कपड़ा बना, बर्तन बना, घड़ा बना, जितनी चीजें बनीं, ये मूल तत्त्व नहीं हैं। मूल तत्त्व है परमाणु। मूल तत्त्व है आत्मा। परमाणु का कर्ता कोई नहीं है। आत्मा का कर्ता कोई नहीं है। किन्तु परमाणु में अवस्थाएं होती रहती हैं। परमाणु अपनी अवस्थाओं का स्वयं कर्ता है। पुद्गल भी कर्ता है। आत्मा अपनी अवस्थाओं की कर्ता है। फर्क इतना ही है कि आत्मा इच्छापूर्वक कर्ता है और अवचेतन है वह स्वभावतः कर्ता है। वह इच्छापूर्वक नहीं कर सकता। आत्मा चेतना है, ज्ञान है, इसलिए जब चाहे तब सुख करता है, जब चाहे तब दुःख करता है। अपनी इच्छा के साथ करता है। प्रश्न होगा कि क्या दुःख की भी कोई इच्छा करता है। इस विषय में जैन दर्शन ने बहुत गहरा मंथन किया है। जो सुख की इच्छा करता है, वह दुःख की इच्छा जरूर करता है। जो जीने की इच्छा करता है, वह मरने की इच्छा जरूर करता है। सुख-दुःख का जोड़ा है। जीवन-मरण का जोड़ा है। एक की इच्छा नहीं होती। इच्छा होगी तो दोनों की होगी और नहीं होगी तो दोनों की ही नहीं होगी। दोनों आते हैं। जो व्यक्ति सुख की इच्छा करता है, वह दुःख की इच्छा करता है। जरूर करता है।

गौतम स्वामी ने युग पुरुष महावीर से पूछा भंते! दुख कौन करता है? भगवान् ने उत्तर दिया अपनी आत्मा करती है। दुःख आत्मा के द्वारा कृत है, दूसरे के द्वारा कृत नहीं है। यह आत्म-कर्तृत्व का सिद्धांत है। सारा दायित्व स्वंय पर है। दूसरा कोई इसके लिए उत्तरदायी नहीं है। सारा उत्तरदायित्व स्वयं व्यक्ति पर है।

बहुत बार ऐसा होता है कि व्यक्ति अच्छा काम करता है। कोई पूछता है कि किसने किया तो उत्तर देगा कि मैंने किया। जब कोई गलत काम हो गया, बुरा काम हो गया, पूछेगा कि किसने किया तो कहेगा कि पता नहीं या कहेगा कि अमुक ने कर दिया। बुरे काम का उत्तरदायित्व आदमी अपने ऊपर लेना नहीं चाहता। अच्छे काम का दायित्व अपने पर ही ओढ़ना पसंद करता है, दूसरे को देना नहीं चाहता। यह एक स्वाभाविक मनोवृत्ति है। किन्तु इस विषय में जैन दर्शन का सिद्धांत है कि अच्छा-बुरा जो जैसा है, प्रत्येक कार्य के लिए व्यक्ति स्वयं उत्तरदायी है। न कोई पदार्थ उत्तरदायी है। व्यक्ति स्वयं उत्तरदायी है। अपने उत्तरदायी का भार भी स्वयं को वहन करना होगा।

इस स्थिति में एक नयी चेतना का विकास होता है। अपना कर्तृत्व और अपना दायित्व निर्वाह करें तो फिर दोषारोपण की वृत्ति समाप्त हो जाती है। निमित्त हो सकता है। दो बातें हैं। एक निमित्त और एक साक्षात् कर्तृत्व। निमित्त दुनिया में बहुत सारे हैं। प्रतिकूल परिस्थिति आयी, व्यक्ति को दुःख हो गया। अनुकूल परिस्थिति आयी, व्यक्ति को सुख हो गया। वह निमित्त बना। किन्तु सुख-दुःख का संवेदन वह परिस्थिति नहीं करती। सुख-दुःख का संवेदन व्यक्ति स्वयं करता है। सुख-दुःख का अर्जन व्यक्ति स्वयं करता है।

शरीर शास्त्रीय दृष्टि से मनुष्य के मन में दो परते हैं एक सुख के संवेदन की और एक दुःख के संवेदन की। एक नियंत्रण की और एक खुलावट की। व्यक्ति के मन में आता है, यह काम कर लूं। परिस्थिति आयी क्रोध करने की। मन में आया क्रोध कर लूं। किन्तु हमारे मस्तिष्क में ऐसी अवस्था है, ऐसी प्रणाली है, वह कहेगा कि अभी नहीं। अभी क्रोध क्यों करते हो? अभी देखो। अभी क्रोध मत करो। जरा प्रतीक्षा करो। दोनों प्रणालियां साथ-साथ काम कर रही हैं। यदि यह नियंत्रण की प्रणाली न हो, तो आदमी आपा खो बैठे। यह प्रणाली बार-बार रोकती है।

कर्मशास्त्र में भी दो बातें हैं। दो विरोधी बातें साथ में चलती हैं। एक आवरण, दूसरा अनावरण। यानी हमारे ज्ञान का आवरण भी है और अनावरण भी। आवरण है, उससे हम पूरी बात को नहीं जानते। किन्तु अनावरण है, इसलिए जानते भी हैं देखते भी हैं और नहीं भी देखते हैं। क्योंकि दर्शन का आवरण भी है और दर्शन का अनावरण भी है। हम सुख भी भोगते हैं और दुःख भी भोगते हैं। क्योंकि सात वेदनीय कर्म का उदय भी है और असात वेदनीय कर्म का उदय भी है। दोनों एक साथ नहीं होते। दोनों विरोधी शक्तियां एक साथ नहीं आतीं। जब एक उदय में आती है तो दूसरी शांत हो जाती है। दूसरी उदय में आती है, तो पहली शांत हो जाती है।

हमारी चेतना में मूर्च्छा भी है और जागरूकता भी है। यानी मोह का उदय भी है और मोह का उपशमन भी है। दोनों बातें हैं। मोह उपशांत है, इसलिए हम अच्छा आचरण करते हैं। मोह का उदय है, इसलिए मिथ्या आचरण भी करते हैं। दोनों विरोधी बातें साथ में चलती हैं। अच्छा नामकर्म है, हम अच्छे- अच्छे पुद्गलों का अनुभव करते हैं। बुरा भी है, बुरे का भी अनुभव करते हैं। सम्मान भी पाते हैं और असम्मान भी पाते हैं। हमारे शरीर में भी दो सूक्ष्म विरोधी परते हैं। हमारे मस्तिष्क में भी दो विरोधी परतें काम कर रही हैं। दोहरा व्यक्तित्व हमारी प्रकृति है, निसर्ग है। हमारे शरीर में भी हमारा दोहरा व्यक्तित्व है और हमारे स्थूल मस्तिष्क में भी दो व्यक्तित्व हैं। कभी एक प्रकट होता है और कभी लगता है कि वही आदमी बहुत बुरा है। एक आदमी डाकू भी रहा और कभी संत बन गया। कभी संत, कभी डाकू। कभी डाकू और कभी संत। यह कोई नयी बात नहीं, नयी घटना नहीं। जो डाकू है, उसके पीछे संत भी बैठा है और जो संत है, उसके पीछे डाकू भी बैठा है। ये दोनों बातें हमारे साथ-साथ हो रही हैं। यह एक निसर्ग है। इसीलिए आत्मा सुख और दुःख दोनों की कर्ता है। हम स्वयं सुख और दुःख दोनों के कर्ता हैं। दूसरा कोई सुख-दुःख देने वाला नहीं है।

हमारे पास प्रवृत्ति के तीन साधन हैं मन, वचन और शरीर। सारी प्रवृत्तियां इन तीनों के माध्यम से होती हैं। अच्छा मन, अच्छी प्रवृत्ति। अच्छा वचन, अच्छी प्रवृत्ति। अच्छा शरीर का प्रवर्तन, अच्छी प्रवृत्ति। मन की बुरी प्रवृत्ति, वचन की बुरी प्रवृत्ति और शरीर की बुरी प्रवृत्ति। जैसी प्रवृत्ति होती है, वैसा हमारा अनुबंध हो जाता है। संस्कार का निर्माण होता है। ऐसे पुद्गलों का आकर्षण होता है और वे पुद्गल अनुबंध स्थापित कर लेते हैं। हमारे साथ रह जाते हैं, जुड़ जाते हैं और फिर अपनी रासायनिक प्रक्रिया को प्रकट करते हैं। यह सारी रासायनिक प्रक्रिया है। आज का शरीरविज्ञान का विद्यार्थी जानता है कि शरीर में जैसा रसायन बनता है, वैसा भाव बनता है, वैसा आचरण बनता है, वैसा ही उसका व्यवहार होता है। आदमी हिंसा करता है। क्यों करता है? क्योंकि हिंसा को पैदा करने वाला रसायन काम कर रहा है। नाड़ी तंत्र का जैसा रसायन बना, वैसा ही वह आचरण करने लग जाता है। ठीक यही प्रक्रिया हमारे सूक्ष्म शरीर में होती है। जिस प्रकार के संस्कार का अनुबंध हमने कर लिया, वे परमाणु वैसे ही रसायन को पैदा करेंगे और वे रसायन हमारे भावों का निर्माण करेंगे। एक पूरी शृंखला है। यह स्थूल शरीर है, इसके भीतर है सूक्ष्म शरीर और उसके भीतर है एक सूक्ष्मतर शरीर। हमारे सारे संस्कार, परमाणुओं के अनुबंध उस शरीर में रहते हैं। सारा लेखा-जोखा वहां है। दूसरा कोई नियंता नहीं है। नियम है, किन्तु नियंता नहीं है। नियम अलग बात है और नियंता अलग बात है। बहुत सारी बातें नियम से चलती हैं। कोई नियंता नहीं होता। पानी बरसा, बूंदे गिरीं और घास उग आयी। अंकुर उग आया। कौन निंयता है? कोई नियंता नहीं है। यह नियम है। भूमि उर्वरा है। पानी मिला और घास उग आई। यह एक नियम है। दो शक्तियां मिलीं, बिजली पैदा हो जाएगी। सकारात्मक और नकारात्मक इन दोनों शक्तियों के मिलते ही बिजली पैदा हो जाएगी। जो बिजली आदमी पैदा करता है, उसका तो नियंता आदमी है। बिजली पैदा करने वाला तो आदमी है। जो बिजली यहां पैदा हुई, वही बिजली बादलों में है। उसका कोई नियंता नहीं। यह प्रकृति का नियम है। सारा संसार नियमों से चलता है।

एक आदमी डाकू भी रहा और कभी संत बन गया। कभी संत, कभी डाकू। कभी डाकू और कभी संत। यह कोई नयी बात नहीं, नयी घटना नहीं। जो डाकू है, उसके पीछे संत भी बैठा है और जो संत है, उसके पीछे डाकू भी बैठा है। ये दोनों बातें हमारे साथ-साथ हो रही हैं। यह एक निसर्ग है। इसीलिए आत्मा सुख और दुःख दोनों की कर्ता है।

दो प्रकार के नियम होते हैं एक जागतिक नियम और दूसरा सामयिक नियम। यह मनुष्य के द्वारा बनाया जाता है या पदार्थ के योग से बनता है। सत्य की खोज का अर्थ है नियम की खोज। विज्ञान का विकास नियमों के आधार पर हुआ है, जिस व्यक्ति को पता चला, एक सचाई प्रकट हो गई। हजारों-हजार नियम हैं इस संसार में। हमारे शरीर में भी हजारों नियम हैं। बहुत सारे नियम हैं। नियम का पता चला और नयी बात सामने आ गई।

कुछ काम स्वभाव के द्वारा होते हैं और कुछ काम क्रिया के द्वारा होते हैं। कार्य-करण का भाव सर्वत्र लागू नहीं होता। जो कार्य होता है, उसका कारण होता ही है। यह बात सब जगह लागू नहीं होती। सीमित क्षेत्र में यह बात लागू होती है कि कार्य बना तो उसका कोई कारण है। पर कुछ ऐसे हैं जो कार्य है ही नहीं। मूल तत्त्व कार्य नहीं। वे न कारण हैं और न कार्य हैं। वे अपने-आप में तत्त्व हैं। कारण तो फिर भी बन सकते हैं, पर कार्य बिल्कुल नहीं। जितनी अवस्थाएं होती हैं, जो परिवर्तन होते हैं, उनमें भी बहुत प्रकार के परिवर्तन होते हैं। कुछ परिवर्तन किया हुआ होता है और कुछ परिवर्तन अपने-आप होता है, स्वभाव से होता है, काल के द्वारा होता है। एक आदमी पैदा हुआ, वह बूढ़ा होगा। बुढ़ापा कौन लाया? किसने बूढ़ा

बनाया? कोई बूढ़ा बनाने वाला नहीं है। यह काल का नियम है। प्रत्येक वस्तु एक कालावधि के बाद पुरानी हो जाती है। प्रत्येक वस्तु एक कालावधि के पश्चात् समाप्त हो जाती है। यह काल के द्वारा किया हुआ है, किसी व्यक्ति या नियंता के द्वारा किया हुआ नहीं है। किसी दूसरे का नियंत्रण नहीं है। कहीं है काल का नियंत्रण, कहीं है स्वभाव का नियंत्रण, कहीं है व्यक्ति का अपना नियंत्रण। अलग-अलग प्रकार की वस्तुएं, अलग-अलग परिस्थितियां और अलग-अलग नियमन। एक ही कोई शक्ति नियंता नहीं है। अपने भाग्य का नियंता व्यक्ति स्वयं है। नियमन की सहायक सामग्री सारा संसार है। उसमें वस्तु निमित्त बनती है, क्षेत्र निमित्त बनता है, काल निमित्त बनता है, और भी हजारों चीजें निमित्त बनती हैं। किसी ने गाली दी और गुस्सा आ गया। किसी ने अप्रिय बात कही और क्रोध आग गया। किसी ने आज्ञा का अतिक्रमण किया और क्रोध आ गया। निमित्त हजारों मिल सकते हैं, पर करने वाला व्यक्ति स्वयं है। वह चाहे तो नियंता बन सकता है और चाहे तो कर्ता बन सकता है। क्रोध पर नियंत्रण भी कर सकता है और क्रोध कर भी सकता है। ये दोनों स्थितियां उसके हाथ में हैं। जैन दर्शन ने बहुत महत्त्वपूर्ण सूत्र दिया कि तुम स्वयं अपने भाग्य के विधाता हो। तुम्हारे भाग्य का विधाता कोई दूसरा नहीं है। तुम्हारे भाग्य की बागडोर तुम्हारे हाथ में है। दूसरा कोई उसे थामे हुए नहीं है। न किसी से आजीजी करो और न किसी पर दोषारोपण करो। न तो ऐसा सोचो कि अमुक आदमी ने हमारे भाग्य को बिगाड़ दिया। जब यह सिद्धांत समझ में आता है, तब व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा होता है। अपने आचरण पर उसका ध्यान आकर्षित होता है कि मैं किस प्रकार आचरण करूं? कहीं मेरे आचरण के द्वारा, मेरे व्यवहार के द्वारा मेरा भाग्य कुंठित हो रहा है। बहुत महत्त्वपूर्ण बात है। इस प्रसंग में एक बड़ी मार्मिक कहानी है।

दो सगे भाई किसी ज्योतिषी के पास गए। ज्योतिषी बड़ा अनुभवी था उसने दोनों को देखा। छोटे से उसने कहा तुम्हें कोई राज्य मिलने वाला है। तुम बड़े शासक बनोगे। बड़े भाई से कहा सावधान रहना। कोई बड़ी विपत्ति आने वाली है। दोनों को बता दिया। एक बहुत खुश हुआ। दूसरा बहुत उदास हो गया। दोनों घर पर आ गए। दोनों सगे भाई। दूसरे ने सोचा कि ज्योतिषी ने कहा है, इसलिए विपत्ति तो आने वाली है। मुझे क्या करना चाहिए? ठीक है, कष्ट तो आएगा। पर मैं पहले ही क्यों न संभल जाऊं? संभल गया। पूरा जागरूक बन गया। बुरी आदतें छोड़ दीं। अच्छे काम में लग गया। अच्छे आचरण में लग गया। पहले वाले ने सोचा अब चिन्ता की क्या बात? राज्य मिलने वाला है। दुनिया भर के जितने व्यसन थे, उसने सब शुरू कर दिए। धन को उजाड़ना शुरू कर दिया। शराब पीना शुरू कर दिया। मांस खाना शुरू कर दिया। दुनिया की सारी बुराइयों में लिप्त हो गया।

एक जागरूक बन गया और दूसरा प्रमादी बन गया। हुआ यह कि किसी राजा का पुत्र मर गया। पीछे कोई था नहीं। राजा ने सोचा, बूढ़ा हूं। व्यवस्था करूं। पुराने जमाने में कुछ पद्धतियां होती थीं। पद्धति अपनायी और उसमें बड़ा भाई उत्तीर्ण हो गया। बड़ा भाई राजा बना तो छोटे को बात अजीब लगी। उसने ज्योतिषी को बुलाया और कहा कि आपने उल्टी बात बता दी। ज्योतिषी ने कहा हमने उल्टी बात नहीं बताई थी। ठीक बताई थी। उस समय जो होने वाला था, वही बताया। दोनों बताओ कि मेरे बताने के बाद तुम दोनों ने क्या-क्या किया? दोनों भाइयों ने अपनी-अपनी कहानी सुनाई। ज्योतिषी ने कहा मैं क्या करूं? ज्योतिष का जो नियम था उसी के आधार पर मैंने बताया था। तुमने बुरा आचरण किया। तुम्हें राज्य मिलने वाला था, किन्तु बुरे आचरण के कारण नियम बदल गया और दूसरा लागू हो गया। इसे विपत्ति आने वाली थी। किन्तु इसने इतना अच्छा आचरण किया कि विपत्ति बदल गई और इसने सौभाग्य का वरण कर लिया।

यह नियमों का नियंत्रण, बदलना हमारे हाथ में है। इसलिए महावीर ने कहा कि प्रमत्त मत बनो। सतत जागरूक रहो। प्रमत्त है, उसे भय है। आज ऐसा लगता है कि सब कुछ है, सारी संपदा है, किन्तु नियम कब बदल जाए, क्या पता? जो प्रमादी है, उसके लिए हर क्षण खतरा उपस्थित हो सकता है। किन्तु जो अप्रमादी है उसे कहीं से भी भय नहीं होता। बुरी से बुरी होने वाली घटना, बुरी से बुरी होने वाली बात टल जाती है और नियम बदल जाता है।

इन सारे संदर्भों में हम फिर इस सिद्धांत पर विचार करें कि हम स्वयं अपने भाग्य के कर्त्ता हैं, सुख-दुःख के कर्ता हैं और हम स्वयं अपने नियंता है। कोई दूसरा कर्त्ता नहीं है। कोई दूसरा नियंता नहीं है। केवल नियम है। नियम को समझकर चलें। अगर हम उन नियमों को जान लें किस नियम से सुख होता है, किससे दुःख होता है। आश्रव से दुःख होता है। आश्रव से सुख होता है, पाप का बंध होता है। जब शुभ आश्रव होता है, तब पुण्य का बंध होता है। अशुभ आश्रव होता है तो पाप का बंध होता है। ये नियम हैं। आश्रव का एक नियम है और इसका प्रतिपक्षी नियम है संवर। जब संवर होता है तब न दुःख होता है और न सुख होता है। वहां चैतन्य का विकास होता है। केवल जागरण होता है। बंध एक नियम। आश्रव एक निमय। पुण्य एक नियम। पाप एक नियम। संवर एक नियम और मोक्ष भी एक नियम। ये सारे नियम हैं। यह नियमों का सिद्धांत जब समझ में आता है, तब व्यक्ति बहुत जागरूक बन जाता है। पुराने संस्कारों को कैसे क्षीण किया जाए, अच्छे संस्कारों का कैसे निर्माण किया जाए, और कैसे बुरे को समाप्त किया जाए ये सारे नियम प्रकट हो जाते हैं। यह एक पूरी नियमों की श्रृंखला है। जब आत्म-कर्तृत्व, अपना नियंत्रण यह नियम समझ लिया जाता है तो उसके साथ सैकड़ों-सैकड़ों नियमों की एक पूरी श्रृंखला हमारे ध्यान में आ जाती है। व्यक्ति उन नियमों की श्रृंखला में अपने आपको संभाल ले, अपने आपको संवार ले, तो उसका कल्याण हो जाता है।

आज की आवश्यकता - मितभाषिता

• प्रो. प्रेम मोहन लखोटिया •

आज संवाद का युग है। हर बात को खोल कर बताने, फैलाने और स्पष्ट करने के लिए शब्दों, चित्रों एवं अन्य सहायक साधनों की पूरी सहायता लेने का युग है। अब मौन अप्रासंगिक ही नहीं, किसी छुपे अपराध का संकेत है। संवाद-दक्षता एक प्रकार की वाचालता की योग्यता है, प्रभावशाली रूप से व्यावहारिक कला है। हमारे पूरे भूमंडल में, पर्यावरण सुरक्षा के अंतर्गत ध्वनि-नियंत्रण की चेतना है परंतु आतंकी धमाकों के साथ बातूनी कलरव भी है, बैठकी शोर भी है और द्वन्द्व के अनगिनत आवेश भी हैं। 'अन्याय के विरुद्ध चुप नहीं बैठना चाहिए' वाली उक्ति का अपरिमित परिधि-विस्तार हुआ है। अब शरीफों और सत्संग में भी चुप रहना मूढ़ता का संकेत है।

एक उक्ति सुनी थी अपने बचपन में कि ज्यादा मुंह खोलोगे तो कान बंद हो जाएंगे, दिल गूंगा हो जाएगा और दिमाग बहरा हो जाएगा। हमारे दादा-दादी, माता-पिता और अग्रज बार-बार हमें यही सिखाते थे। तब कभी-कभी संत विद्वत्जन घर में आते थे या हम उन्हें सुनने जाते थे, तो मुग्ध, तन्मय होकर कान सुनते, बातें चुपचाप हृदय में उतर जाती थीं। भली भांति सुनने से, आधी शंकाएं तो मुंह खोल कर पूछे बगैर ही मिट जाती थी और आधी के बारे में प्रायः एक ही अनुशंसा मिलती थी चिंतन करो, स्वयं खोजो - जिन खोजा तिन पाइयां, गहरे पानी पैठ। कम बोलने से मनुष्य आध्यात्मिक हो जाता है, व्याधिमुक्त हो जाता है।

अब हम आध्यात्मिक होने के लिए गुरु-गुरु के पास भटकते हैं, व्याधियों से त्राण पाने के लिए चिकित्सकों के पास डोलते हैं। जिज्ञासाओं के नाम पर हमारे पास संदेह होते हैं। हम गुरु के शिष्य बन जाते हैं, चिकित्सक के स्थाई क्रेता। उसके भक्ति-भाव में। डूब जाते हैं, परावलंबी हो जाते हैं किन्तु न तो आध्यात्मिक गहराइयों में उतर पाते हैं और ना ही तनसा मनसा स्वस्थ रह पाते हैं। पहले मौन स्वाभाविक था और अब मौन दुर्लभ तो हुआ ही, बड़े कठिन प्रयास के साथ एक कार्यक्रम की तरह निभाना पड़ता है। खुले अधरों पर गीत नहीं उभरता, अब उभरते हैं वैचारिक प्रक्षेपास्त्र अथवा दिल की भड़ास और बढ़ती है सांसारिक तृष्णा और बीमारी।

अब हम सप्रयास चाहते हैं कि हमारे घर का छोटे से छोटा शिशु भी खूब बोला करे किलकारी में अनूठे संवाद करे। वह कम बोलता है तो हमें उसे चिकित्सक के पास ले जाना होता है। माता, पिता, भाई, बहन, स्वजन और परिजन बच्चे से खूब बोलते हैं और बुलवाते भी हैं। उसकी वाणी की परेड करवाते हैं। बच्चे अनजाने में ही अपनी उम्र से बड़े हो जाते हैं और बढ़ती उम्र के साथ कम गंभीर। एक दो बच्चे ही घर में होने में शोर मचा रहता है। बच्चे से पहले बुलवाओ और फिर शोर मचाओ यह दीखता है पर नहीं दीखती घर में होने वाली अन्य आवाजें जिनमें अन्य मानवीय आवाजें अनवरत रहती हैं। कल्पना करना ही कठिन है कि संयुक्त परिवार में प्रायः दो दर्जन बच्चों के बावजूद भी दादी का मीठा-मीठा हरजस सुन जाता था मगर घर के बड़े जब कोई चिंता या मुश्किल की बात करते तो किसी को पता भी नहीं चलता था। ऐसा निष्फिक्र बचपन अब किसे नसीब? बच्चे पहले साक्षी होते हैं घर के वाक्-युद्धों के!

'बोलना चांदी है तो मौन सोना है।' अरे पागल, सबके बीच बैठ कर चुप रहना अपनी छवि खोना है। तुम नहीं बोलोगे तो ज्ञान की मणियों से वंचित रह जाएंगे सब लोग..... इसलिए....., उछल कर, औरों की बात काट कर, सत्ता के साथ बोलो..... संभव हो तो औरों को बोलने का मौका ही मत दो। अब डायलॉग भी मारो और अद्भुत नाट्यशैली की रोचकता के साथ कहो। संवाद गुरुओं से प्रशिक्षण लो.... अपने व्यक्तित्व को निखार दो। गांधी की तरह से बोलने वाला, शब्दों में आत्मा का तेज रखने वाला अब 'एम.पी.' भी नहीं बन सकता, महान् नायक बनना तो दूर। धर्माधिकारी हो तो कुछ दृश्य-श्रव्य वाला हंगामा भी करो, अपने साथ भक्तों को नचवाओ, उनसे तीव्रतम स्वर में कीर्तन करवाओ धर्म का डंका बजवाओं सो भी पौ फटने के साथ-साथ, आधी रात में भी। उसको अत्यन्त प्रभावशाली और मोहक तरीके से कहो जो तुम कभी अभ्यास करने वाले नहीं हो। आजकल का ट्रेंड यानी शैली यही है।

किन्तु हमारे कालजयी लेखन और हमारी प्रदर्शक मनीषा ने तो ऐसा कभी नहीं कहा। उनका मंतव्य तो कुछ और ही था और इस विषय में आज तक संसार की सारी संस्कृतियां एकमत हुआ करती थीं। सारे धर्म और आस्था-पंथ, सारे शासन और प्रबंध शास्त्र एक सी ही अनुशंसा किया करते थे। सुनने में तन्मयता और बोलने के लिए परम धैर्य को ही कल्याणकारी बताया करते थे।

याद आता है कि कहीं पढ़ा था और फिर गुना था कि बहुभाषिणो न श्रद्धधाति लोकः। संस्कृत काव्य की अनुपम कृति कादम्बरी में महाकवि बाणभट्ट ने पहले कहा 'अहा! क्या सुख है देना उपदेश औरों को!' 'सुखमुपदिश्यते परस्य'। पर-उपदेश सरल भी है और स्वयं के अभिमान को ऊंचा उठाने वाला भी। बाद में पता चलता है कि यह महाकवि की वक्रोक्ति है। हम अपने आस-पास आजकल प्रवचनकारियों, महाबुद्धिवादियों, वाक्-पटुओं और बड़बोलों की भीड़ प्रायः देखते हैं।

पहले पहले उनसे खूब प्रभावित भी हो जाते हैं। धीमे-धीमे उनका लोकाचार देखते हैं, उनकी व्यवहार-विसंगतियों से आमने-सामने होते हैं, तब हमें उनसे वितृष्णा होती है, हमारा विश्वास उन पर से हट जाता है। इस परिणति के लिए बाद में बाणभट्ट ने मंतव्य दिया ज्यादा बोलने वाले लोग अपना आदर गंवा देते हैं। यह भी एक विडंबना है कि ज्यादा बोलने की आदत धर्म-गुरुओं और पंथ-प्रचारकों से आरंभ हुई। फिर इनका सघन प्रयोग दलीय राजनीतिक करने लगे और विस्तार-काल में उपभोक्ता-संस्कृति और विज्ञापनीय शैली के सर्वव्यापी प्रसार में विपणनकर्ता व्यापारी करने लगे।

रही सही कमी दृश्य-श्रव्य उपकरणों ने पूरी कर दी। अब कथन-शोर जोर पर है और मौनी को मूढ़ समझा जाता है। वाक्-चातुर्य, सद्भाव-गांभीर्य और विवेचन-विशदता को तज कर, छल की तिकड़म का प्रचलन बढ़ा है। 'छिछला उछला', 'थोथा चना, बाजै घना' जैसी कहावतों से अब उबरना आवश्यक है। फिर, कम बोलने से चिंतन निर्बाध और निर्णय सार्थक होते हैं।

यह सत्य है कि संवाद की क्रांति के इस युग में हम में से हर एक को संवाद-दक्ष होना परमावश्यक है और इसका एक आधार है वाक्-चातुर्य जिसका प्रशिक्षण लेना आज एक शैक्षणिक आयाम का विषय है परन्तु मौन और मितभाषिता का व्यावहारिक अभ्यास भी कम महत्त्व की बात नहीं है। पर्यावरण के हर क्षेत्र में में हम हमारे पारम्परिक आचरण संहिता की ओर लौटने में ही हमारी सभ्यता का विस्तार और हमारी समस्याओं का निस्तार मानने लगे हैं तो क्यों नहीं भाषण और संवाद-वादरता के विषय में भी यह सच नहीं हो? बोल-बोल कर हम वैमनस्य, द्वन्द्व और अहम् की टकराहट इस कदर बढ़ाने लगे हैं कि मितभाषिता किंवा वाणी-संयम ही एकमात्र निदान लगता है। हम खुद ही कहते हैं कि हम सुनते सुनते थक गए, बीमार हो गए। देखिएगा आतंक या दुर्घटना के समय अथवा विद्रोह बलवे के समय जितना शब्द या वाद शोर नहीं होता जितना उनके हो जाने के बाद और फिर जो वैर या वैमनस्य होता है, उसके घाव भरने में दीर्घ समय लग जाता है और कभी-कभी तो ऐतिहासिक दीर्घा में पत्थर संभाल कर रख दिए जाते हैं जिनको कई-कई सालों बाद फिर से उछाला जाता है।

प्रगति का जो भी आयाम कहिए, मेरी समझ में मितभाषिता आज की एक अत्याज्य और अपरिहार्य आवश्यकता है धर्मगुरुओं, राजनीतिकों और विपणनकारियों के लिए ही नहीं अपितु हर स्तर और हर क्षेत्र के संयोजक और कार्यकर्ता के लिए। आधे झूठे से जगत को ज्यादा बोल-बोल कर पूरा झूठा बनाने से अब बचना चाहिए क्योंकि बनाए इसे कोई, झेलना तो हम सबको ही पड़ेगा। कुछ छोटे छोटे से सूत्र शायद काम आ जाएं 'जो ज्यादा बोले, उसकी कम सुनो' और 'जो अच्छा बोले, उसको अपने जीवन में गुनो' 'जो करो सो कहो और जो कहो सो करो'। हर भाषा में बड़ी से बड़ी बात कहने के लिए कुछ संक्षिप्त शब्द हैं। उनका प्रयोग करना आना ही होगा सच्ची संवाद-दक्षता क्योंकि वे वैमनस्य की जगह माधुर्य की सृष्टि करेंगे और फिर तन, मन और सम्बन्ध सभी स्वस्थ रहेंगे। देह आध्यात्मिकता का केन्द्र बनेगी और आपके कथन लोक-हित के निमित्त।

विद्या विहार, ख–61–अ, भवानी नगर, सीकर रोड, जयपुर – 302023

अणुव्रत अधिवेशन

2, 3, 4 अक्टूबर 2009 को

लाडनूं में

महिलाओं की प्रगति

• भूपेन्द्र कुमार मूथा •

जीवन की घोर संघर्षमयी घटनाएं मनुष्य जीवन में साहस का पथ प्रदर्शित करती हैं। साहस भरी घोर अंधेरी निशा में दीपक की टिमटिमाती लौ अंधकार से भरे मार्ग में प्रकाश के पुष्पों को बिछा देती है एक दीपक भी अपने प्रकाश द्वारा अंधेरे से संघर्ष करके विजयश्री की माला पहन लेता है तो क्यों नहीं अतुल साहस की मीनार नारी अपने संघर्षमय जीवन को प्रकाश में नहीं बदलेगी। प्रागैतिहासिक काल से ही भारतीय नारी परंपरागत रूप से दोहरी जिम्मेदारियां निभा रही हैं।

एक ओर वह पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर परिवार, समाज एवं राष्ट्र की सांस्कृतिक, कलात्मक एवं रचनात्मक जिम्मेदारियों को सुचारू रूप से वहन कर रही है वही आवश्यकता पड़ने पर सुरक्षा की घड़ियों में विश्व के सामने अनेक शौर्यपूर्ण कार्यों के माध्यम से कठिन चुनौतियों का दृढ़ता से सामना कर रही है। जिनके संबंध में अनेकों स्वर्णिम पृष्ठ भावी संततियों का सदैव मार्ग प्रदर्शन कर रहे हैं।

भारत का स्वच्छ एवं स्पष्ट मानचित्र विदुषियों एवं वीरांगनाओं की ख्याति को माप कर नारी शिक्षा की आवाज को जन-जन के सम्मुख प्रस्तुत किया है। परन्तु विगत शताब्दियों में भारत पर हुए भीषण आक्रमणों ने यहां की समस्त वैभवता को नष्ट कर दिया एवं अमानवीय क्रूरतापूर्ण कृत्यों के द्वारा यहां की समुन्नतियों को समाप्त किया है, जिसका भार नारी को अशिक्षा, अज्ञानता एवं रूढ़िवादिता के रूप में वहन करना पड़ा। देश की स्वतंत्रता के पश्चात् संविधानानुकूल समानता का अधिकार प्राप्त कर नारी को बराबर का दर्जा दिया गया।

आज विश्व में पुनः भारतीय नारी ने उसी पूर्व आदर्श को कायम रखते हुए विश्व के सशक्त जनमत का भार अपने कंधों पर वहन कर विश्व के कर्णधारों की इस अभिशंका को निर्मूल साबित कर दिखाया है कि नारी पुरुष से निर्बल है। नारी जाति का उत्थान ही वास्तव में राष्ट्रीय उत्थान की प्रथम सीढ़ी है। इस सीढ़ी के द्वारा विकास के अनेक नये आयाम खुल सकते हैं। नारी शिक्षा एवं जागृति की दिशा में अभी सशक्त प्रयास आवश्यक है।

जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में एक पुरुष को शिक्षित करेंगे तो देश को एक अच्छा नागरिक मिलेगा किन्तु एक महिला को शिक्षित करेंगे तो वह पूरे परिवार को शिक्षित कर राष्ट्र को अनेक सुयोग्य नागरिक दे सकेगी हम अपनी सांस्कृतिक धरोहर और इतिहास को पलट कर देखेंगे, तो स्त्रियों की सम्मानित स्थिति का अहसास होगा। वैदिक काल में महिलाओं को ज्ञानार्जन का अधिकार था। वे शास्त्रार्थ कर सकती थी। ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता'' की धारणा यथार्थ में चरितार्थ होती थी। स्त्रियों को वेदाध्ययन एवं यज्ञ संपादन का समान अधिकार प्राप्त था। सामाजिक व धार्मिक कार्य स्त्री के बिना सम्पन्न नहीं हो सकते थे। लेकिन उत्तर वैदिक काल में धार्मिक आडंबरों की अतिरेकता के कारण स्त्रियों के अधिकार सीमित व मर्यादित हो गये। पाणिनी के अनुसार स्त्रियों को शिक्षार्जन का अधिकार तो था, पर नारी पिता, भ्राता, पति और पुत्र के संरक्षण में ही विचरण कर सकती थी।

समय का चक्र अपनी गति से घूमता हुआ महिलाओं की उस सामाजिक, शैक्षणिक स्थिति के पास आ खड़ा हुआ है, जहां उसकी स्थिति पतन के गर्त में गिरती नजर आने लगी। आर्थिक रूप से तो वह वैसे ही परावलम्बित निर्भर थी, शेष स्वतंत्रता व समानताएं भी चारदीवारी में सीमित हो गई। चूल्हा-चाकी, बच्चों-पति की सेवा करना ही स्त्रियों का परम धर्म माना जाने लगा। पतिव्रता की पदवी से विभूषित तभी किया जाता जब वह पति के समीप छाया बनकर रहती। प्राचीन काल से मध्य युग पर दृष्टि डालें तो महिलाओं की दीन-हीन दशा का ही वर्णन मिलता है। मुगल शासन में प्रशासन चलाने के कार्य में कुछ महिलाओं का योगदान था। शेष स्त्री समाज पर्दा प्रथा जैसी कुप्रथाओं में जकड़ा हुआ था। औरतें शिक्षार्जन केवल घर में ही करती थी। उन्हें घरेलू कार्यों में दक्ष बनाने पर अधिक जोर दिया जाता था।

मुगल साम्राज्य के पतन की स्थिति ने ब्रिटिश शासन के साथ हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक पर्यावरण में परिवर्तन की बाढ़ सी ला दी। कुछ समाज सुधारकों ने भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों के विरुद्ध बिगुल बजाया। राजस्थान में बाल विवाह, लड़की को पैदा होते ही मार देने की प्रथा, सती प्रथा, विधवाओं का पुनर्विवाह न करने की प्रथा आदि बड़ी कुप्रथाएं समाज में गहरी जड़ें जमाए थीं। इन्हें दूर करने के लिए यथोचित कानून बनाए गये तथा कई कानूनों में संशोधन किए गये। ब्रिटिश काल में ही लड़कियों की पढ़ाई के प्रयास किए गये।

महिला स्वतंत्रता आंदोलन सन् 1960 में उद्‌भुत हुआ। एक दशक में इस आंदोलन ने जोर पकड़ा और स्त्रियों के लिए शिक्षा तथा रोजगार के समान अधिकारों की मांग विश्वव्यापी स्तर पर कर दी। ''विमेन लिब'' के नारे ने भारतीय महिलाओं में भी प्राण संचार किये हैं। मूल अधिकारों और नीति निर्देशक तत्वों में आर्थिक सामाजिक परिवर्तन के साथ महिलाओं के कल्याण

की बात की गई। स्त्रियों में शिक्षा प्रसार के साथ उनकी दशा में सुधार परिलक्षित हुआ लेकिन तुलनात्मक रूप से देखें तो स्त्रियों की कुल दशा सुधरने की अपेक्षा बिगड़ी ही है। ऐसा क्यों? पाश्चात्य संस्कृति व सभ्यता का अनुकरण करते हुए हमारे यहां की महिलाओं ने शिक्षार्जन कर विभिन्न क्षेत्रों में पदार्पण किया है। पश्चिम देशों की स्त्रियों ने चूल्हा-चौका छोड़ रिश्ते-नाते के बंधनों को तोड़, पुरुषों के साथ सभी कार्य करने की ठानी। इस धुन का सकारात्मक परिणाम भी निकला। सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं में वे ऊंचे से ऊंचे औहदों पर पहुंच गई। रूस-चीन आदि साम्यवादी देशों में तो महिलाओं ने कल-कारखानों में भारी भरकम मशीनरी से लेकर ट्रक ड्राईवरों तक का कार्य सुचारू रूप से संभाल लिया।

चूंकि हमारे देश की अधिकांश जनसंख्या गांवों में बसती है, अतः वहां की औरतों में महिला स्वतंत्रता आंदोलन का प्रभाव कम देखा गया। शासन-प्रशासन में स्त्रियों की दखल स्पष्टतः देखी जा सकती है। सन् 1951 में अन्ना मल्होत्रा के आई.ए.एस. में आने के साथ महिलाओं के लिए भारतीय प्रशासनिक सेवा में भी मार्ग खुल गए। इससे पूर्व आई.सी.एस. में महिलाओं का प्रवेश निषिद्ध था। राजस्थान प्रशासनिक सेवा में भी सन् 1957 में प्रथम महिला अधिकारी आई। इसके बाद संख्या में वृद्धि हुई है। लेकिन प्रशासनिक सेवाओं में महिला अधिकारी केवल दो प्रतिशत ही हैं। डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, जज, मजिस्ट्रेट व वकील बनना तो सामान्य बात हो गई। आज हमारे देश के सर्वोच्च पद (राष्ट्रपति पद) पर महिला ही है। राज्यपाल, मुख्यमंत्री के पद भी महिलाओं से अछूते नहीं रहे हैं। प्रतिभा पाटिल के राष्ट्रपति बनने से या कुछ महिलाओं के उच्च पदों पर आने से यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता है कि सभी महिलाएं विकास व प्रगति की राह पर हैं। आज आम महिलाएं तो सामान्य जीवन बिताती हुई घर-परिवार का ध्यान रखती हैं। कानून-कायदों का ज्ञान तो इनका विषय भी नहीं बना है। जबकि पाश्चात्य देशों ने महिला स्वतंत्रता की अति का फल चख कर इसका परिणाम भी जान लिया है।

बैटी फ्रीडैन जैसी स्वतंत्रता समर्थक महिला ने ''सुपर वीमेन'' की परिकल्पना औरतों के सामने रखी। स्वयं बैटी फ्रीडैन ने देश-विदेश की यात्रा से उच्च पदों पर आसीन महिलाओं से वार्ता कर पाया कि उन महिलाओं ने जीवन का एक पक्ष खो दिया है। स्वतंत्रता व आत्मनिर्भरता ने उनको पारिवारिक सुखों से वंचित कर दिया है। वे इस पर पश्चाताप कर रही हैं। ऐसी स्वतंत्रता तो हमें नहीं चाहिए। महिलाओं का व्यक्तित्व संतुलित रह सके, ऐसी स्वतंत्रता व समानता की हिमायत की जा सकती है। हमारे सांस्कृतिक व सामाजिक आदर्शों ने सदैव स्त्रियों का सम्मान किया है। आज पुनः आदर्श मूल्यों की पुनर्स्थापना की आवश्यकता है। अन्य देश हमारे सांस्कृतिक आदर्शों में अपनी समस्याओं का समाधान ढूंढते हैं। फिर क्यों न हम अपनी धरोहर को सहेज कर रखें?

महिलाएं यानि देश का आधा भाग अशिक्षा-अज्ञान के अंधकार में रहे, इससे बड़ा दुर्भाग्य देश का और क्या हो सकता है? यद्यपि समय-समय पर पंचवर्षीय योजनाओं में शिक्षा प्रसार के अनेक कार्यक्रम रखे गये लेकिन वांछित फल नहीं निकला। इसके लिए समाज को पुनः संभलना पड़ेगा। संविधान में उल्लेख कर देने से या कानून बना देने से महिलाओं का स्तर ऊंचा नहीं उठ सकता। इसके लिए वातावरण तैयार करना होगा। पॉलिटिकों लीगल फ्रेमवर्क के साथ 'कल्चर कांपलेक्स' में भी स्त्रियों की व्यावहारिक भूमिका को स्वीकार करना होगा। मां, पत्नी व बेटी की परंपरागत भूमिका के साथ उसके व्यक्तिगत अस्तित्व को भी स्वीकार करना होगा। जिसके व्यक्तिगत अस्तित्व में ममता, समता, क्षमता तीनों विद्यमान हैं। ममता के उजागर होते ही स्नेह का दरिया बहने लगता है समता की प्रतिध्वनि सुनाई देते ही कष्टमयी घड़ियों को सहने की क्षमता भी प्राप्त कर लेती है। समानता की न्यायधीश बनकर पुत्र-पुत्रियों के संरक्षण की समुचित व्यवस्था समान रूप से करती है। उन्हें प्रारंभ से ऐसे संस्कारों का प्रतिरोहण किया जाये ताकि आगे जाकर वे महिलाओं का उचित आदर कर सकें। दहेज-प्रथा, भ्रूणहत्या का निषेध स्वयं महिलाओं को ही करना होगा। विधवा विवाह को प्रोत्साहन देना होगा। एक दूसरी महिला या किसी की बहू-बेटी पर टीका-टिप्पणी करने वाली औरतें ही होती हैं। बाद में वह गली-मुहल्ले व समाज में चर्चा का विषय बनती है। दान-दहेज के लिए बहुओं को यातनाएं देने में सास यानि महिला का ही योगदान रहता है। यदि घर की बड़ी-बूढ़ी बुजुर्ग महिलाएं अपनी बेटियों-बहुओं को सस्नेह सम्मान से रखें, तो स्त्रियों की दशा स्वतः ही बदलने लगेगी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कहा भारत का धर्म पुरुषों से नहीं, स्त्रियों से कायम रहेगा। लेकिन स्त्रियां अपने ही सहजातीय धर्म से ईर्ष्या की अग्नि में जलकर अपना पतन कर रही हैं। निन्दा, ईर्ष्या, परदोष की दृष्टि ही उन्नति में बाधा पहुंचा रही है, लेकिन यदि महिलाओं को प्रगति की दिशाओं का उद्घाटन करना है तो साहस की पतवार लेकर आगे बढ़ना होगा।

हर मार्ग कांटों से कष्टों की अनुभूति करवाता है लेकिन उसके साथ संघर्ष व साहस की मीनार ही बाधाओं को दूर कर सकती है। एक-दूसरे को ऊंचा उठाने की भावना से अशिक्षित नारी को शिक्षा का दीपक निरहंकार की बाती एवं सम्मान के तेल के संग जलना होगा। जिससे पिछड़ा नारी समाज इस युग के साथ अपने कदम मिलाकर चल सकेगा एवं बेरोजगारी व गरीबी की समस्या भी कम हो सकेगी।

तेरापंथ भवन, 3–4, आचार्य श्री तुलसी मार्ग, गांधीनगर, बैंगलोर – 560009

युद्ध-समर्थकों बोलो, जवाब दो !

• स्वामी वाहिद काज़मी •

इस लेख के जागरूक पाठकों को शायद आश्चर्य होगा कि आज जब सारी दुनिया को अहिंसा की सबसे अधिक आवश्यकता है, कुछ विकसित राष्ट्र अपने चालाकी भरे ढंग से हिंसा की शिक्षा के समर्थक हैं! मैं बहुत विनम्रतापूर्वक आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूं कि नासा द्वारा छोड़ा गया अंतरिक्ष यान 'फीनिक्स' 680 मिलियन किलोमीटर की उड़ान तय करके मंगल ग्रह की सतह पर सानन्द, सकुशल उतर कर वहां जीवन की खोज में व्यस्त रहा। तब इसी युग में धरती पर युवकों को हिंसा की शिक्षा भी दी जा रही है! जी नहीं, मैं तालीबानों या खूंखार आतंकवादियों की बात नहीं कर रहा! क्षुब्ध करने वाली बात यह है कि हिंसा की शिक्षा भी ऐसे पवित्र ग्रंथों के द्वारा दी जाती है, जो धर्मशास्त्र कहे जाते हैं। और ऐसे व्यक्तियों के द्वारा दी जा रही है, जो धर्म-पुरोहित कहलाते हैं। हिंसा यानी वही क्रिया जिसकी अंतिम परिणति और सबसे ख़तरनाक रूप किसी जीवन का अंत करना होता है! धर्मशास्त्रों, संत-वाणियों, मनीषीजनों के मूल वचनों के विपरीत अपनी मनमानी व्याख्या करके, अपने मतलब की बात प्रचारित करने की आदत, मानव जाति की सबसे पुरानी कुटेव है। अब देखते चलिए!

ब्रिटिश सेना में हिन्दू धर्म के पहले पुरोहित कृष्ण अभी, अफगानिस्तान और इराक़ जाने वाले सैनिकों को 'महाभारत' का पाठ पढ़ाने में लगे हैं। वह युद्धग्रस्त देशों में जाने वाले सैनिकों को उपदेश देते हैं कि किस तरह युद्ध उनका परम कर्म है। बताता चलूं कि अभी, कसौली (हि.प्र.) के मूल निवासी हैं। वह ब्रिटिश सेना के इराक़ और अफगानिस्तान जाने वाले हिन्दू सैनिकों को युद्ध की आवश्यकता के बारे में समझाने के लिए भागवद्गीता के उद्धरणों का उपयोग करते हैं। ब्रिटेन की सेना में चार सौ सत्तर हिन्दू सैनिक हैं। अभी कहते हैं 'मैं उन्हें बताता हूं कि भगवान ने उन्हें अपने देश और विश्व-शांति के लिए एक अवसर प्रदान किया है। उन्हें यह जानने की ज़रूरत है कि वह किसी को सिर्फ ड्यूटी पूरी करने के लिए नहीं मार रहे हैं।'

'दि टाइम्स' के अनुसार नौकरी के लिए ब्रिटिश रक्षा मंत्रालय में अभी का जब साक्षात्कार हुआ तो उनसे पूछा गया कि यदि कोई सैनिक युद्ध में न जाना चाहे तो वे उससे क्या कहेंगे? इस पर अभी का उत्तर था 'ड्यूटी हमारी प्राथमिकता है। यह हमारा कर्म है और हमें इसका सामना करना ही पड़ेगा!' उन्होंने अख़बार से कहा 'सैनिक जानते हैं कि उन्हें देश की सीमाओं से बाहर देखने का मौका मिला है।'

सन् 1986 में बाईस वर्षीय कृष्ण अभी ब्रिटेन के न्यूवैसल स्थित मंदिर आए थे। लगभग दो दशक तक वह वहां रहकर हिन्दू धर्म, संगीत व भारतीय भाषाएं सिखाने का कार्य करते रहे। सन् 2005 में ब्रिटिश सेना ने उन्हें धर्म पुरोहित नियुक्त किया! ब्रिटिश सेना उन्हें अब काफी व्यस्त रखती है।

अभी जी! ब्रिटिश शासन की मोटे वेतन वाली चाकरी बजाकर कमाते-खाते रहिए! बाकी हिंसा (जिसका सबसे 'सभ्य' रूप युद्ध है) से कभी भी शांति नहीं आती है। मरने-मारने के लिए गीता को नीतिशास्त्र बनाना एक धंधेबाज चालाकी, चतुराई से अधिक कुछ भी नहीं है! युद्ध कहीं भी, कभी भी, किसी के बीच भी हो! वह हिंसा के सिवा कुछ नहीं होता! किसी की वह निपट मूर्खतापूर्ण उक्ति कि 'शांति के लिए युद्ध अनिवार्य है।' किसी जंगली और बर्बर मानसिकता का प्रमाण तो है, सच्चाई नहीं। यदि हिंसा से शांति होती, हिंसा रूपी युद्ध मानवता के लिए उपयोगी होता तो महात्मा गांधी मूढ़ नहीं थे कि अहिंसा का उपयोग कर एक ऐसा चमत्कार कर दिखाया, जो विश्व की आंखों ने कभी नहीं देखा था! इससे कुछ फर्क नहीं पड़ता कि फिर भी सियासत के चालबाजों की न तो आंखें हमेशा के लिए खुलीं और न देखती-भालती आंखों पर पड़ा पर्दा उठा!

यह तो हुई दोस्तो, उस विदेश की चर्चा, ब्रिटिश शासनकाल में जिसकी सेनाओं और सैनिकों ने हमारे देश के स्वतंत्रता प्रेमी रणबांकुरों, क्रांतिकारियों पर क्या-क्या अत्याचार नहीं ढाये। अब थोड़ी-सी चर्चा अपने ही देश की भी!

हिसार की रामलीला कमेटी के तत्वावधान में चलती श्री रामकथा। इसके छटे दिन, अग्रसेन भवन में, बालयोगी संजीव कृष्ण ठाकुर ने, पता है पिछले दिनों क्या कहा था? उनके आप्तवचन भी सुनते चलिए! बोले 'युद्ध किसी को अच्छा नहीं लगता, किंतु युद्ध भी जीवन की एक आवश्यकता है। अगर हम शांति चाहते हैं तो हमें हमेशा युद्ध के लिए तैयार रहना चाहिए। शांति हमेशा शस्त्रों से होती है, न कि शास्त्रों से। आवश्यक है कि शस्त्रों और शास्त्रों में समन्वय हो।' अब ऐसों से क्या कहा जाए! मुझे तो उस पार के संजीदा और समझदार शायर अनीस अहमद की नज़्म का यह अंश याद आता है

ये एटमी हथियार और बारूद कैसा है?
इसे खाने से क्या भूखों का खाली पेट भरता है?
इसे पीने से क्या प्यासों की प्यास बुझती है
भला इससे कोई उरियां बदन को ढांक सकता है?
बमों से आई है खुशबू कभी सरसों के फूलों की?
कभी मिसाइलों की आंख में अहसास देखा है?
कभी राकेट ने बख़्शा किसी आबाद बस्ती को?
कभी बन्दूबग ने भी प्यार का पैग़ाम दाग़ा है?

युद्ध के समर्थकों बोलो! युद्धप्रेमियों जवाब तो दो!

10 राज होटल, पुल चमेली,
अम्बाला छावनी – 133001 (हरियाणा)

शुद्ध पर्यावरण - समृद्धि का आधार

• भूरचंद जैन •

मनुष्य ने अपनी आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नित्य नये-नये वैज्ञानिक आविष्कार करने आरंभ किये। विज्ञान के आविष्कार का सीधा प्रभाव प्राकृतिक सम्पदा पर पड़ा। प्रकृति के साथ छेड़छाड़ ने आविष्कार को अवश्य जन्म दिया। साथ ही कई प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं ने जन्म लिया जो भयंकर विनाश को लेकर आईं। जिनमें तूफान, अकाल, भूकम्प, भूचाल, ज्वालामुखी का फटना, ने तो तांडव ही मचा दिया। ऐसी प्राकृतिक विपदा में अपार जान-माल की हानि ने इन्सान को झकझोर कर रख दिया है। अपार धन खर्च कर किये गये निर्माण कार्य एवं भवन देखते ही देखते भूकम्प के प्राकृतिक थपेड़ों ने धराशायी कर दिए। कहीं-कहीं तो भीषण बाढ़ उसे अपने साथ ही बहाकर ले गयी। ज्वालामुखी की आग में जलकर नाश हो गये। तूफान उसे मटियामेट करता हुआ उड़ा ले गया। इस सबके पीछे प्राकृतिक वातावरण को दूषित करना ही है।

आये दिन इन्सान अपने स्वार्थ हेतु प्रकृति से छेड़छाड़ करता आ रहा है। इसी क्रम में इन्सान ने सबसे अधिक पर्यावरण को नुक्सान पहुंचाने के लिए वन-सम्पदा को ही काटना शुरू कर दिया है। हरे-भरे वृक्ष काटकर उसकी अमूल्य लकड़ी का उपयोग निर्माण कार्यों के साथ ईंधन के रूप में जलाने में किया जा रहा है। धीरे-धीरे वन-सम्पदा का ह्रास होने लगा। जिसके कारण सदियों से हरे-भरे वन विरान बन गये हैं। जिसमें विचरण करने वाले, रहने वाले पशु-पक्षियों के सामने मौत मंडराने लगी। वर्षा कम होने लगी। वर्षा के पानी को रोकने की वनों में क्षमता क्षीण होने लगी। जिसके कारण कम वर्षा ने अकाल जैसी भीषण प्राकृतिक आपदा को जन्म दिया।

बढ़ती आबादी के कारण नई बस्तियां बसाने, निर्माण कार्य करने, सड़कों का फैलाव, बांधों का बनाना, औद्योगिक बस्तियों स्थापित करने, हवाई पट्टियों का निर्माण आदि कई प्रकार के विकास कार्यों के नाम पर वन-सम्पदा को नष्ट कर वहां कंकरीट रूपी जंगल बना दिए। इस कारण हरे-भरे पेड़-पौधे इन्सान की कुल्हाड़ी की मार के आगे धराशाही होने लगे। इस कारण वन-सम्पदा के अभाव में पर्यावरण दूषित होने लगा। लोगों को शुद्ध हवा एवं शुद्ध वातावरण मिलना बंद हो गया। जिसके कारण कई प्रकार की बीमारियों ने इन्सान को जकड़ लिया। अंधाधुंध वन-सम्पदा की कटाई के कारण कई पौधों का पैदा होना बंद हो गया जिससे मिलने वाली प्राण-पौषक औषधियों का अभाव उत्पन्न हो गया। हरे-भरे पेड़ों की अंधाधुंध कटाई करने को पाप की संज्ञा दी गयी है। अणुव्रत प्रवर्तक ने पर्यावरण सुधार के लिये हरे-भरे पेड़-पौधों को नहीं काटने के लिए लोगों से संकल्प लेने पर विशेष बल दिया है ताकि हमारी वन-संपदा का विनाश होना रुक जाय। क्योंकि वनों द्वारा इन्सानों को शुद्ध वातावरण एवं स्वास्थ्य लाभ मिलता है। साथ ही नाना प्रकार के फल-फूल, औषधियां आदि जीवन की आधारभूत वस्तुएं भी प्राप्त होती हैं।

आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से एक ओर हरे-भरे वृक्षों की रक्षा का संकल्प कराते हुए साथ ही पानी के अपव्यय को नहीं करने का संकल्प लेने पर भी जोर दिया है। आज विश्व में बढ़ते वैज्ञानिक आविष्कारों ने प्राकृतिक जल सम्पदा को सबसे अधिक दूषित कर दिया है। वर्षा के अभाव से पानी का संकट विश्व भर में उत्पन्न होने लगा है। भूमि का दोहन कर पानी निकालकर उसके दुरुपयोग ने भविष्य में जल समस्या को उत्पन्न कर दिया है। आज भी पानी के जो प्राकृतिक स्त्रोत हैं उन्हें औद्योगिक उत्पादन की उत्सर्जित गंदगी, दूषित जल आदि से प्रदूषित किया जा रहा है। गंगा जैसी पवित्र नदी भी इससे अछूती नहीं रह पाई है।

पानी के अभाव में लोगों के सामने पीने के पानी की एक गंभीर समस्या खड़ी हो गई है। इस बढ़ती समस्या को जानते हुए भी लोग पानी की बर्बादी, फिजूल पानी के बहाव पर रोक नहीं लगा रहे हैं। अपने दैनिक जीवन में भी आधुनिक भौतिक साधनों के उपयोग में पानी का बेरहमी के साथ अपव्यय कर रहे हैं। जिसके कारण आये दिन विश्व भर के कई भागों में पानी की कमी के समाचार सुनने को मिलते हैं। पानी को अमूल्य मानते हुए इसके अपव्यय को कम करने की चीख पुकार सभी ओर से सुनाई देने लगी है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन के जयघोष में इन्सान को पानी का अपव्यय नहीं करने के लिए संकल्प लेने पर विशेष बल दिया है ताकि भविष्य में पानी के अभाव में इंसान को दर-दर की ठोकरें खाने के लिये मजबूर नहीं होना पड़े और प्यास से मरना न पड़े। अणुव्रत आंदोलन ने पर्यावरण के प्रति सभी को जागरूक रहने के लिये चौकस किया है। वन-संपदा, जल एवं वायु का शुद्धिकरण रहेगा उतना ही यह इंसानों, जीवों आदि के लिये लाभदायक रहेगा। यदि वर्तमान में ऐसे ही चलती रही प्रकृति के साथ छेड़छाड़ को समय रहते नहीं रोका गया तो नाना प्रकार की कठिनाइयां इन्सान एवं सभी जीवों को बेमौत मरने पर बाध्य करेंगी। अतः पर्यावरण शुद्धि हेतु अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी द्वारा दिये गये सूत्र को आत्मसात करना पड़ेगा कि "जब पर्यावरण शुद्ध रहेगा तो समृद्धि अपने अपने आप रहेगी।"

जूनी चौकी का बास,
बाड़मेर (राजस्थान)

निज भाषा उन्नति का मूल

• जसविंदर शर्मा •

ज्ञान आयोग के प्रमुख सैम पित्रोदा ने कहा है कि देश में लोगों को अंग्रेजी आने से ही नौकरी के ज्यादा मौके मिलेंगे। भारत को इससे भयभीत नहीं होना चाहिए। सारा संसार अंग्रेजी भाषा की ताकत का अहसास पूरी शिद्दत से कर रहा है। सैम जल्द ही सरकार से एक सिफारिश करने वाले हैं कि देशी भाषा को बॉय-बॉय करिये क्योंकि अंग्रेजी को अपनाने से ही देश का उद्धार हो सकता है।

सैम पित्रोदा वह किरदार हैं जो राजीव गांधी के सहयोगी रहे और भारत में कम्प्यूटर लाने का सारा श्रेय सैम को ही जाता है। अब भारत के भविष्य को लेकर वह बहुत ही चिंतित हैं। सैम ने अंग्रेजी के हक में बोलते हुए एक उदाहरण दिया कि इंफोसिस के पास नौकरियों के लिए पंद्रह हजार आवेदन आए मगर इन में से सिर्फ दो सौ लोगों को ही अंग्रेजी आती थी। कितनी शर्म की बात है। इधर हम लोग चिल्ला रहे हैं कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा क्यों नहीं मिल पा रहा। असली दिक्कत तो यह है कि हिन्दी पढ़ने से नौकरी नहीं मिलती।

यह सोचकर दुनिया के कुछ देशों को कुछ अजीब-सा लग सकता है कि भारत को अंग्रेजी, स्थानीय मातृभाषा या हिन्दी में प्राथमिक स्तर के बच्चों को शिक्षा देनी चाहिए। इस बात पर लगातार मंथन करते हम दूसरे देशों से पिछड़ते जा रहे हैं। यह प्रश्न उन देशों के वाशिन्दों को तो और भी अजीब लग सकता है जिन पर कभी किसी साम्राज्यवादी ताकत का शासन नहीं रहा। अंग्रेजी के प्रति हमारा अतिरिक्त मोह इसलिए भी है क्योंकि हमने गुलामी के इतने बरस देखे हैं और जंजीरों से हमें लगाव हो गया है। अपनी मातृभाषा बोलने या लिखने में हमें शर्म आती है। यह हमारी हीनभावना का परिणाम है। अपना अज्ञान व पिछड़ापन ढकने के लिए हम बार-बार अंग्रेजी की शरण में चले जाते हैं।

दक्षिण कोरिया की आबादी महज चार करोड़ है और उनकी प्रति व्यक्ति आय दस हजार अमेरिकी डॉलर से बहुत ज्यादा है। फिनलैंड व डेनमार्क की आबादी आधा करोड़ है और स्विटजरलैंड की जनसंख्या तो एक करोड़ को ही छू रही है। इन सभी देशों में बच्चों को उनकी मातृभाषा में ही हर प्रकार की शिक्षा दी जाती है। भारतीय राज्यों की तुलना में कम आबादी व बेहद छोटे क्षेत्रफल वाले अन्य यूरोपीय देश मसलन जर्मनी व फ्रांस भी अपने देश के भावी कर्णधारों को अपनी मातृभाषा में ही अध्ययन करवाते हैं।

अंग्रेजी एक भाषा ही तो है। वह कोई वैतरणी या अमृतकलश तो नहीं है कि जिसे सीखने या बोलने मात्र से ही हम समृद्ध हो जाएंगे और हमारी सारी समस्याएं हल हो जाएंगी। हिन्दी के साथ ऐसा बेहूदा मजाक भी तो नहीं होना चाहिए। इस विशाल भारत को एकता के सूत्र में पिरोने वाली भाषा सिर्फ हिन्दी ही है जो जन-जन की प्राण-संजीवनी है। इसे सजने, संवरने व विकसित होने में बाधा डालने वाली दोगली सरकारी नीतियों पर सार्थक बहस होनी चाहिए।

जापान का उदाहरण है। आबादी के लिहाज से जापान उत्तरप्रदेश की आबादी से भी कम ठहरता है। कितना सुखद आश्चर्य है कि सभी स्तरों व हर प्रकार के पठन-पठन या काम-धंधे को चलाने में वे लोग जापानी भाषा का सफलतापूर्वक प्रयोग बड़े गर्व के साथ करते हैं। ये सभी देश बहुत ही उन्नत हैं तथा हर लिहाज से कामयाब देश हैं।

यदि इन देशों के नौनिहाल अपनी मातृभाषा में ज्ञान अर्जित करने के बाद जीवन में किसी प्रकार की असफलता का मुंह नहीं देखते तो क्या कारण है कि भारत में सर्वत्र ऐसी भ्रांतियां फैली हुई हैं कि अंग्रेजी सीखे बिना रोजगार या जीवन में उन्नति करने के अवसर नहीं मिल सकेंगे। क्या इसके पीछे कोई सुनियोजित योजना या राजनीति नहीं है कि अंग्रेजी सीखने वाले ही शासन करते रहें। अंग्रेजों के राजकाज में तो यह सब जायज था मगर अब तो देश को आजाद हुए आधी सदी से भी ज्यादा वक्त बीत चुका है।

किस भाषा में प्राथमिक स्तर तक शिक्षा दी जाए, यह प्रश्न इन दिनों बहस का विषय बन चुका है क्योंकि शिक्षा पर केन्द्रीय सलाहकार समिति की एक उपसमिति ने कारगर सुझाव दिया है कि बच्चों को उनकी अपनी मातृभाषा में पढ़ाई करवाई जाए ताकि अच्छे परिणाम सामने आ सकें।

भारतीय मध्यम वर्ग की मनोदशा अंग्रेजी भाषा को लेकर कुछ ज्यादा ही भ्रमित है। उनकी आत्मा तक यह तथ्य घर कर चुका है कि अच्छी गुणवत्तापूर्ण

शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी ही है और सिर्फ यही भाषा वह वैतरणी है जो बच्चों के कैरियर में पंख लगा सकती है। वैश्वीकरण के इस दौर में इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि जब-जब अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिता करने का प्रश्न उठेगा, विदेशी भाषा खास तौर पर अंग्रेजी ही सहायता करेगी।

छोटे बच्चे कई भाषाएं एक साथ सीख सकते हैं। मातृभाषा में पढ़ने-लिखने में उन्हें खास दिक्कत नहीं आनी चाहिए। इससे उनकी प्रतिभा में भी निखार आएगा। दूसरी या तीसरी भाषा वे कितनी जल्दी और कितनी दक्षता से सीख पाएंगे, यह इस बात पर निर्भर करता है कि ये भाषाएं उन्हें कितने मनोयोग से सिखाई जाती हैं।

हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्थापित करने के ढोंग में हर साल सरकारी दफ्तरों में करोड़ों रुपये फूंके जाते हैं। दर्जनों स्कीमें चलती हैं। मगर केन्द्र या राज्य सरकारों ने इस काम को कभी गंभीरता से नहीं लिया। अब पंजाब को ही देख लीजिए। यहां शिक्षा विभाग ने 1998 में ही सभी सरकारी स्कूलों में पहली कक्षा से ही अंग्रेजी पढ़ाने के हुक्म दिए थे। अब तक इसका कोई पाठ्यक्रम तैयार नहीं किया गया और न ही कोई पाठ्य पुस्तक तैयार की गई। अखबार की एक रिपोर्ट के मुताबिक जिला फरीदकोट में 15 हजार से अधिक बच्चों को दूसरी कक्षा से तीसरी में उत्तीर्ण करार दे दिया जबकि उनकी अंग्रेजी विषय में कोई प्रवेश-परीक्षा नहीं ली गयी। अंग्रेजी विषय को पढ़ाने के लिए पर्याप्त संख्या में अध्यापक भी नियुक्त नहीं किए। जो हुए भी उनकी नियुक्तियां भी अदालत ने संदिग्ध पाई और उन पर रोक लगा दी, क्योंकि उनके चयन में लाखों रुपये रिश्वत के तौर पर लिए व दिए गए थे।

सरकार बहादुर को अंग्रेजी से अचानक मोह कैसे हो गया। कारण है कि कस्बे तथा छोटे शहरों में लोगों की मानसिकता में तेजी से बदलाव आए हैं। निजी अंग्रेजी माध्यम विद्यालय बेतहाशा से बढ़ते जा रहे हैं। इन स्कूलों की इमारतें अच्छी होती हैं, स्टाफ जागरूक होता है और स्कूल में पक्के व हवादार कमरों के साथ-साथ एक पक्की चारदीवारी होती है। विद्यालय प्रबंधक अध्यापकों से कसकर काम लेता है क्योंकि सारा धंधा लाभ का है, अगर बच्चे आगे नहीं आयेंगे तो दूसरे स्कूलों से प्रतिस्पर्द्धा कैसे हो पाएगा।

सरकारी स्कूल में हर चीज की हालत बहुत खस्ता है। अध्यापक देर से आते हैं या नहीं भी आते। तभी तो इस बार कई ग्राम पंचायतों ने दसवीं के निराशाजनक परिणामों के बाद कई स्कूलों के मुख्य द्वार मोटे-मोटे ताले लटका दिए। शिक्षक परवाह नहीं करते। उनके अपने काम-धन्धे हैं। सरकारी अध्यापक साल में सात महीने तो अपना तबादला करवाने या रुकवाने के चक्कर में राज्य की राजधानी में चक्कर मारते रहते हैं।

स्कूलों की हालत तो बहुत ही दयनीय है। हर कक्षा के लिए अलग कमरे उपलब्ध नहीं है। बच्चों को ढंग से बिठाने का कोई इंतजाम नहीं। बच्चे घर से टाट या बोरी लेकर आते हैं। इन बोरी वाले स्कूलों में कक्षाएं खेतों से सटे खुले बीहड़ मैदानों में छायादार पेड़ों के नीचे आयोजित की जाती हैं। जहां थोड़े-बहुत कमरे बने हैं वहां एक ही कमरे में तीन-चार कक्षाओं को एक अध्यापक ही बिठाकर रखता है। पढ़ाने की तो बारी ही नहीं आती। बरसात आने की दशा में दो-तीन छोटी कक्षाओं की छुट्टी कर दी जाती है। अध्यापक की अपनी समस्याएं हैं। उसकी रिहायिश का कोई इंतजाम नहीं। हर दूसरे महीने उसका तबादला कर दिया जाता है। तबादला रुकवाने के लिए वह स्थानीय नेताओं के चरणों में लोटपोट होता रहता है। या फिर दस-पंद्रह हजार रुपयों का इंतजाम करता है और ब्लॉक शिक्षा अधिकारी के दफ्तर में देकर अपने लिए एक वर्ष की अवधि को सुनिश्चित करता है।

शिक्षा विभाग पहली कक्षा से ही अंग्रेजी लागू करके सरकारी स्कूलों में घट रही बच्चों की संख्या को बढ़ाना चाहते हैं। जिन लोगों को समझ है, चार पैसे जिनके पास हैं, वे बच्चों को अच्छे निजी स्कूलों में डालते हैं। वहां खूब साफ-सफाई है, अध्यापक बहुत मेहनत करते हैं, अनुशासन है तथा पाठ्यक्रम पूरा पढ़ाया जाता है। वहां की अध्यापिकाएं स्वेटरें नहीं बुनती या दस बजे स्कूल नहीं पहुंचती।

अंग्रेजी कोई जहर नहीं है कि जिससे परहेज किया जाए या जिसे पढ़ने या पढ़ाने से समाज में कुरीतियां फैल जाएंगी। असली बात है इस मामले में सरकार की दोगली नीति। हिन्दी के राजभाषा होने का डंका पीटने के बावजूद हर तरफ आजकल अंग्रेजी का बोलबाला है। आम आदमी यही सोचता है कि उच्च वर्ग के बच्चे तो अंग्रेजी स्कूलों में पढ़कर देश की सारी बागडोर संभाले बैठे हैं, इसलिए वे भी अंग्रेजी के पीछे आंखें बंद कर भागते हैं। अंग्रेजी एक भाषा ही तो है। वह कोई वैतरणी या अमृतकलश तो नहीं है कि जिसे सीखने या बोलने मात्र से ही हम समृद्ध हो जाएंगे और हमारी सारी समस्याएं हल हो जाएंगी। हिन्दी के साथ ऐसा बेहूदा मजाक भी तो नहीं होना चाहिए। इस विशाल भारत को एकता के सूत्र में पिरोने वाली भाषा सिर्फ हिन्दी ही है जो जन-जन की प्राण-संजीवनी है। इसे सजने, संवरने व विकसित होने में बाधा डालने वाली दोगली सरकारी नीतियों पर सार्थक बहस होनी चाहिए।

5/2–डी, रेल विहार, मंसादेवी पंचकुला–134109 (हरियाणा)

अंतराल पीढ़ियों का मिट सकता है

• रामनिवास लखोटिया •

आज के युग में अनेक सामाजिक समस्याओं में से एक है ''पीढ़ियों का अंतराल'' की। बहुधा समाज के वरिष्ठ सदस्यों से यह सुनने में आता है कि नई पीढ़ी वाले बच्चे-बच्चियां, बहुएं आदि अपनी मनमानी करते हैं और बड़ों की बात नहीं मानते। धीरे-धीरे कई परिवारों में पीढ़ियों का अंतराल एक विकराल रूप लेने लगा है और यह कई परिवारों के लिए जटिल समस्या बन गई है। अब प्रश्न यह उठता है ''क्या पीढ़ियों का अंतराल मिटाया जा सकता है?'' मेरे अनुभव से इसका उत्तर ''हां'' में है। यदि पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी दोनों चाहें तो इस अंतराल मिटाया जा सकता है और दोनों पीढ़ियों में सद्भावना कायम रह सकती है। इसलिए प्रस्तुत लेख में मैंने अपने अनुभव के आधार पर इस समस्या के निराकरण हेतु कुछ विचार बिन्दु दिए हैं, जिनके पालन से अधिकांश परिवारों में पीढ़ियों का अंतराल मिटकर उसके स्थान पर सद्भाव और प्रेम का वातावरण कायम रह सकता है।

दृढ़ निश्चय एवं विचार-विमर्श की आवश्यकता : इस समस्या के निराकरण के लिए जो सबसे आवश्यक बात है वह है पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी दोनों के दृढ़ निश्चय की। हम आपसी मतभेद और अंतराल को मिटाने के लिए पूर्ण प्रयत्न करें। जब पिता और पुत्र, सास और बहू, बड़ा भाई और छोटा भाई मिलकर मन में यह दृढ़ निश्चय कर लेंगे कि हम ऐसा कार्य करें कि पारिवारिक एकता बनी रहे और विचारों में मतभेद होते हुए भी मनभेद समाप्त हो जाये तभी इस समस्या का निराकरण हो सकता है। इसलिए सर्वप्रथम आवश्यकता यह है कि पहला कदम परिवार के वरिष्ठ सदस्यों को उठाना होगा। उन्हें यह दृढ़ निश्चय करना होगा कि हमारा नई पीढ़ी के साथ तालमेल अच्छा रहे और हम परिवार को एकता के सूत्र में बांधकर रख सकें। इसके लिए जरूरी है कि परिवार के बड़े बुजुर्ग नई पीढ़ी के सदस्यों के साथ बैठकर विचार-विमर्श करें, एक-दूसरे को समझने की चेष्टा करें। जब यह भावना होगी तभी जाकर इस समस्या का निराकरण हो सकेगा, अन्यथा नहीं।

पिता-पुत्र एक-दूसरे को समझें : पीढ़ियों के अंतराल मिटाने के लिए जो सबसे बड़ी आवश्यकता है वह है पुरानी पीढ़ी का नई पीढ़ी के सदस्यों के विचार, भावनाओं और मन आदि को समझना। ठीक इसी प्रकार से नई पीढ़ी के लिए भी अति आवश्यक है कि वे पुरानी पीढ़ी के ताऊ, चाचा, दादा-दादी आदि की भावनाओं को, उनकी परिपाटियों को समझें और समझने की चेष्टा करें। इसी प्रकार परिवार के छोटे और बड़े सभी सदस्य एक-दूसरे को समझें। अधिकांश परिवारों में गलतफहमी के कारण पीढ़ियों का अंतराल बढ़ता जाता है। यदि हम अपने परिवार के किसी सदस्य की प्रकृति, उसके स्वभाव, उसके व्यवहार को समझ लें तो हमें उसके प्रतिकूल व्यवहार से उतना दुख नहीं पहुंचेगा जितना की अन्यथा होगा। अधिकांश परिवारों में जो अंतराल देखा जाता है उसका मूल कारण है एक-दूसरे को न समझना। मेरे अनुभव में और मेरे विचार से यदि बड़े बुजुर्ग परिवार के नई पीढ़ी के सदस्यों की भावनाओं को और उनके कार्यकलापों को समझ लें और नई पीढ़ी बड़े बुजुर्गों के विचार आदि को समझने की चेष्टा करें तो फिर यह अंतराल आसानी से मिटाया जा सकता है।

सास, बहू को समझे : ज्यादातर परिवारों में जहां विघटन की स्थिति आती है वह सास और बहू के झगड़े को लेकर आती है। इसके लिए सर्वप्रथम आवश्यक है कि सास अपनी बहू को समझे। उसके लिए यह आवश्यक है कि वह जाने कि नई बहू एक-दूसरे परिवेश में पली है जहां का वातावरण, विचारधारा, रीतिरिवाज उसके अपने परिवार से भिन्न हैं या हो सकते हैं। इसलिए सास के लिए यह आवश्यक है कि बहू की भावनाओं की कदर करें, उसको समझें और किसी भी दशा में उसके पीहर वालों का अपमान परिवार में या दूसरों के सामने न करें। सबसे बुरी बात जो नई बहू को लगती है वह है उसके पीहर वालों की बुराई करना। कारण कुछ भी हो, असंतोष के कारण कई हो सकते हैं लेकिन सास यदि धैर्य से काम लेगी, बहू की भावनाओं की कदर करेगी, और बात-बात में उसे टोकेगी नहीं और उसे इतना प्यार देगी जितना उसके पीहर में उसे मिला था या मिलता रहा है तो बहू के मन में अपने आप सास के प्रति आदर की भावना होगी और अंतराल मिटेगा। जिस प्रकार पिता-पुत्र को बैठकर विचार-विमर्श कर एक-दूसरे को समझना जरूरी है उसी प्रकार सास और बहू दोनों को आपस में तालमेल बिठाना उतना ही जरूरी है। लेकिन इसमें पहल करनी होगी सास को। वह हर समय अपने अनुभव, अपनी परिपाटी, अपने रीतिरिवाजों का ही गीत अलापती नहीं रहेगी बल्कि समय के अनुसार, परिस्थितियों के अनुसार थोड़ा बदलाव अपने कार्यों में, अपने स्वभाव में, अपने रीतिरिवाजों में लायेगी और जो परिवार

की मूल बातें हैं उन्हें वह प्यार से, प्रेम से बहू को समझायेगी तथा धैर्य रखेगी तो फिर सास बहू की नई पीढ़ी का और पुरानी पीढ़ी का अंतराल अवश्य ही मिटेगा।

बहू भी सास की भावनाओं की कदर करे : केवल ऐसा नहीं है कि सास ही हर प्रकार से बहू को समझने की चेष्टा करे और उसे खुश रखने की कोशिश करे। बहू चाहे नई हो या पुरानी उसके लिए भी यह नितांत आवश्यक है कि वह यह याद रखे कि उसकी सास ने अपने जीवन के इतने वर्ष एक अलग परिवेश में बिताये हैं। उसकी आदतें पुराने रीति-रिवाजों पर आधारित हैं। नई बहू को यह सोचना चाहिए कि जब वह स्वयं बदलने के लिए तैयार नहीं है तो किस प्रकार वह अपनी सास के पुराने विचार, रीति-रिवाज आदि को बदलने के लिए उसे बाध्य करेगी। बहू के लिए तो यह आवश्यक है कि वह अपनी सास की इज्जत करे, अपने पीहर में कभी भी ससुराल वालों की बुराई न करें। यदि सास को यह पता लगा कि उसकी बहू, उसकी कई बातों को नहीं मानते हुए भी उसकी भावनाओं की कदर करती है और उसे पूरी इज्जत देती है तो फिर वह स्वयं मनभेद और मतभेद को मिटाकर बहू को उतना प्यार देने लगेगी। इसीलिए यह जरूरी है कि बहू कभी भी, किसी भी दशा में सास, ननद, जेठानी या घर के और बुजुर्ग व्यक्तियों की भावनाओं को ठेस न पहुंचाये।

अहं के स्थान पर ''हम'' अति आवश्यक : पीढियों के अंतराल को मिटाने में जो सबसे बड़ी समस्या आती है वह है ''अहं'' की। कई परिवारों में देखा जाता है कि पिता या दादा या सास या जेठानी या ननद यह सोचकर परिवार के दूसरे सदस्यों के विचारों की भावनाओं की कदर नहीं करते कि बस ''मैंने यह कह दिया तो यही होना चाहिए''। अहं और मैं के भाव के स्थान पर यदि नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के व्यक्ति ''हम'' शब्द का हृदय से और विचार से और व्यवहार में प्रयोग करेंगे तो कोई भी समस्या जब आयेगी तो उसका निराकरण करने में वे वास्तविक रूप में सफल हो सकेंगे।

जब भी परिवार में कोई समस्या खड़ी हो तो प्रत्येक सदस्य को यह चाहिए कि वह मैं शब्द के स्थान पर यह कहने का प्रयत्न करे कि ''हम'' इसका निपटारा प्रेमपूर्वक करेंगे और करने की पूरी चेष्टा करेंगे। बस पीढ़ियों का अंतराल मिट गया। फिर कहां रहा भेद, कहां रही पीढ़ियों के अंतराल की समस्या। इसका निराकरण शांति, प्रेम और सौहार्दपूर्ण वातावरण में संभव हो सकता है और होना भी चाहिए। ईश्वर हमारे समाज के पुरानी और नई पीढ़ी के सभी सदस्यों को सद्बुद्धि प्रदान करे और उन्हें पारस्परिक प्रेम, प्यार और सद्भावनापूर्वक एकता के सूत्र में बंधे रहने के लिए प्रेरित करे, यही कामना है।

''लखोटिया निवास'', एस–228, ग्रेटर कैलाश भाग–2,
नई दिल्ली– 110048

राष्ट्र चिन्तन

◆ पाकिस्तान को मुंबई हमले के अपराधियों के खिलाफ कार्रवाही करनी ही होगी। पाक के साथ सार्थक बातचीत तब तक शुरू नहीं हो सकती जब तक कि वह पूरी ईमानदारी से अपने उस वादे को पूरा नहीं करता जिसमें उसने भारत के खिलाफ आतंकी कार्रवाइयों के लिए अपनी जमीन का इस्तेमाल न होने देने का यकीन दिलाया था।

यह पहली बार है कि जब पाकिस्तान ने स्वीकार किया है कि मुंबई पर हुए आतंकी हमले में उसके लोग शामिल थे। भारत को पाकिस्तान के साथ बलूचिस्तान सहित सभी मुद्दों पर बातचीत करने में कोई गुरेज नहीं है, क्योंकि हम बलूचिस्तान के मामले में पाक-साफ हैं और हमारे पास छिपाने को कुछ नहीं है।

डॉ. मनमोहन सिंह, प्रधानमंत्री

◆ हिंसा के वातावरण में पाकिस्तान से शांति वार्ता नहीं की जा सकती। हम पड़ोसी देश पाकिस्तान के साथ अपनी पुरानी नीति पर कायम है तथा तब तक वार्ता नहीं की जाएगी जब तक आतंकवादियों के खिलाफ आवश्यक कार्रवाई नहीं करता। दोनों देशों के नागरिकों को शांतिपूर्ण माहौल में तरक्की करनी चाहिए। भारत की नीति में कोई बदलाव नहीं आया है। आतंकवाद के मुद्दे पर भारत ने न तो अपने रुख में बदलाव किया है और न ही दबाव कम किया है। हमें पूर्वोत्तर देशों म्यांमार और बांग्लादेश के साथ बेहतर पहुंच और व्यापारिक संबंध बनाने चाहिएं। चीन सीमा विवाद पर उच्च स्तर की वार्ता चल रही है और उम्मीद है कि आम सहमति से नतीजा निकल आएगा। अमेरिका के साथ असैन्य परमाणु समझौता भारत के लिए काफी उपयोगी है और दुनिया के अन्य देशों के साथ भी इस तरह का समझौता किया जाएगा। एंड यूजर प्रौद्योगिकी व्यवस्था से हमने देश की संप्रभूता के साथ कोई समझौता नहीं किया है। हज यात्रियों के यात्रा प्रबंधन में भी शीघ्र ही सुधार किया जाएगा।

एस.एम. कृष्णा, विदेश मंत्री

मासूमों पर कहर

• नरेन्द्र देवांगन •

नौ महीने की मासूम रिया उन बच्चों में से एक है जिसे नौकरानी के भरोसे छोड़ माता-पिता दोनों काम पर चले जाते थे। कुछ ही समय में रिया के माता-पिता को यह महसूस हुआ कि उनकी बच्ची नौकरानी के पास जाने से न केवल कतराने लगी, बल्कि उसे देखकर ही उसके चेहरे पर डर के भाव भी आने लगे। दिन भर घर से बाहर रहने वाले माता-पिता को शक हुआ और उन्होंने घर पर कैमरा लगाकर नौकरानी पर स्टिंग ऑपरेशन किया। उसके बाद जो कुछ सामने आया, उसे देखकर वे हैरान रह गए। 45 मिनट के इस वीडियो में उन्होंने देखा कि उनकी गैर-मौजूदगी में नौकरानी रिया के साथ किस कदर बदसलूकी करती थी। किस तरह वह मासूम की पिटाई करते हुए डांट-डपटकर उसे जबरदस्ती सुलाने की कोशिश करती थी। किसी भी अभिभावक का दिल दहला देने वाली दिल्ली के नानकपुरा इलाके की यह घटना देशभर में चर्चा का विषय रही।

तीन साल की वैशाली की मम्मी उसे नौकर के भरोसे छोड़कर ब्यूटी पार्लर जाती है। आने पर बेटी की हालत देखकर उनके होश ही उड़ जाते हैं। वैशाली के सारे कपड़े उतरे हुए हैं, उसके जननांगों से खून बह रहा है, वह जोर-जोर से रो रही है और नौकर गायब है। एक अनजान पर भरोसा करने की सजा आज उनकी मासूम बेटी को भुगतनी पड़ेगी, उन्होंने सपने में भी ऐसा नहीं सोचा था।

छह वर्षीय निश्चय जब अपनी आया के साथ अकेले रहने से मना करता है तो उसकी मम्मी उसे डरपोक कहकर चिढ़ाती हैं। असहाय, मासूम निश्चय का जब शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक शोषण होता है तो वह समझ नहीं पाता कि उसके साथ क्या हो रहा है। उसे लगता है कोई उसकी परवाह नहीं करता, कोई उसे प्यार नहीं करता।

आमतौर पर नौकरों के भरोसे पर बिल्कुल अकेले रहने वाले ज्यादातर बच्चे वे होते हैं, जिनके माता-पिता दोनों नौकरीपेशा हैं। किसी जमाने में इन बच्चों की जिम्मेदारी घर के बड़ों की हुआ करती थी। पर संयुक्त परिवारों में आए बिखराव ने इन मासूमों को नौकरों के सहारे छोड़ने के हालात पैदा कर दिए हैं। गौरतलब है कि बीते दो दशकों में ऐसी कामकाजी माताओं की संख्या में तेजी से बढ़ोतरी हुई है, जिनके बच्चे तीन साल से कम उम्र के हैं। एक ओर जहां कामकाजी महिलाओं की संख्या में इजाफा हुआ है, वहीं दूसरी ओर बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारी उठाने वाले परिवारों की संख्या में काफी कमी आई है। यानी संयुक्त परिवारों का वह ताना-बाना टूट गया है, जिसमें कामकाजी माताओं के बच्चों का पालन-पोषण बड़े-बुजुर्गों की देखभाल में बड़ी आसानी से हो जाता था। अब पारिवारिक विघटन से उनका स्वास्थ्य और सुरक्षा दोनों दांव पर लगे हुए हैं। जाहिर है कि उनके जीवन में संस्कार और प्यार की कमी तो है ही, असुरक्षा और मानसिक प्रताड़ना भी कुछ कम नहीं है।

परिवार को समय दें

अक्सर कामकाज की भागदौड़ या अन्य जरूरी कामों की फेहरिस्त में परिवारजनों के लिए समय निकालना आपके लिए मुश्किल हो जाता है। लेकिन इसकी कमी आपको तब समझ में आती है जब बच्चे बड़े होकर नौकरी या अन्य कारणों से कहीं और चले जाते हैं और फिर हमें महसूस होता है कि हमने बच्चों के साथ तो वक्त गुजारा ही नहीं? यह भी हो सकता है कि समय न दे पाने से आप अपने बच्चों और परिवार से दूर होते चले जाएं। ऐसा हो इससे पहले संभल जाइए। व्यस्तता और काम तो कभी खत्म होंगे ही नहीं। अगर आप उनके खत्म होने की राह देखते रहें तो कभी भी वक्त ही नहीं निकाल पाएंगे। कोशिश कीजिए और कुछ पल सिर्फ और सिर्फ अपने परिवार के लिए चुरा लीजिए। फिर चाहे वह घर की छत पर साथ बैठकर तारे देखते हुए बच्चों को कहानी सुनाने का सुख हो या बच्चों के स्कूल के कार्यक्रम में शामिल होने का। और कुछ नहीं तो रोज साथ बैठकर भोजन करने का समय ही नियत कर लीजिए और एक-दूसरे की दिनचर्या से जुड़ी बातों को बांटिए। ये खुशियां आपकी जिंदगी भर की दौलत बन जाएगी।

नौकरों के भरोसे न रहें

माना कि आप कामकाजी या व्यस्त रूटीन वाले हैं, लेकिन बच्चों को कभी भी पूरी तरह नौकरों या आया के भरोसे न छोड़ें। एक तो इससे वे आपके करीब नहीं आ पाएंगे, दूसरे वे उनके शोषण का भी शिकार हो सकते हैं, जिसके भरोसे आप उन्हें छोड़ रहे हैं। याद रखिए आया या नौकर के लिए आपके बच्चों का ध्यान रखना आजीविका का एक साधन है,

लेकिन आपके लिए यह जिम्मेदारी है। यह भी सच है कि भावनाओं तथा ममता के बल पर कई बार आया और बच्चों में काफी गहरे अपनत्व भरे बंधन बंध जाते हैं, लेकिन हर व्यक्ति बच्चों पर ऐसी सच्ची ममता लुटाने वाला नहीं होता।

मां समय नहीं दे पातीं

एसोचैम के सामाजिक विकास न्यास के नवीनतम अध्ययन के अनुसार कामकाजी माता-पिता दिनभर में मात्र आधा घंटा ही बच्चों के साथ बिता पाते हैं। तीन हजार शहरी अभिभावकों से की गई बातचीत में जो सामने आया, उसके अनुसार कामकाजी माताओं ने पूरी ईमानदारी के साथ यह स्वीकार किया कि वे बच्चों को बहुत कम समय दे पाती हैं और उन्होंने बच्चों की देखभाल के मामले में अपने आपको दस में से दो नंबर दिए। मनोचिकित्सकों का मानना है कि यदि पति-पत्नी दोनों नौकरीपेशा हैं, तो बिल्कुल अकेले बच्चे नौकरों के साथ शारीरिक और मानसिक दोनों ही तरह से सुरक्षित महसूस नहीं करते। ऐसे बच्चे बड़े होकर जिद्दी, चिड़चिड़े मितभाषी या अकेलेपन का शिकार बन सकते हैं। मनोवैज्ञानिक भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि छोटा-सा बच्चा भी अपने साथ होने वाले अच्छे या बुरे व्यवहार को अच्छी तरह समझता है और आगे चलकर इसका असर उसके पूरे व्यक्तित्व पर पड़ता है।

मानसिक शोषण का कुप्रभाव

साधारण शब्दों में यदि मानसिक शोषण को परिभाषित किया जाए तो कहा जा सकता है कि बच्चों के प्रति किया गया ऐसा व्यवहार जो उसके लिए मानसिक रूप से ठीक न हो या उसके विकास में बाधा डाले, उसे मानसिक शोषण कहा जाता है। बच्चों के लिए शारीरिक पीड़ा से कहीं ज्यादा तकलीफदेह है मानसिक पीड़ा, क्योंकि शरीर के जख्म तो भर जाते हैं, पर जुबां से निकले शब्द सीधे दिल पर लगते हैं और दिमाग को प्रभावित करते हैं। अतः इसका असर कभी खत्म न होने वाला होता है। इस तरह के बच्चे आत्मकेन्द्रित हो जाते हैं, व्यावहारिक नहीं होते, संकोची व डरपोक किस्म के होते हैं, जिंदगी में जोखिम लेने से डरते हैं। चुनौतियों से घबराते हैं, मन से विद्रोही हो जाते हैं, उनमें उत्साह की कमी होती है, उनमें उदासीनता आ जाती है। ऐसे बच्चे जल्दी ही डिप्रेशन का शिकार हो जाते हैं। इन्हें हर जगह प्यार की तलाश होती है। ये जल्दी से संतुष्ट नहीं होते। इनमें असुरक्षा की भावना भी बहुत ज्यादा होती है, मन पर बोझ लेकर घूम रहे इन बच्चों में एकाग्रता की कमी होती है। इन्हें रिश्ते बनाने में मुश्किलें आती हैं, इनका व्यक्तित्व उभरकर नहीं आता।

नरेन्द्र फोटो कॉपी,
पोस्ट – खरोरा, जिला – रायपुर, (छत्तीसगढ़) 493225

झाँकी है हिन्दुस्तान की

- उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरपुर नगर जिले में जहरीली शराब में लिप्त लोगों की धर-पकड़ के लिए पहुंचे आबकारी विभाग के दल को उस समय अपनी कार्यवाही रोकनी पड़ी जब इस धंधे में जुड़ी कई महिलाएं निर्वस्त्र होकर दल के सामने आ गयी। जहरीली शराब के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के तहत यह दल जहरीली शराब में लिप्त लोगों को गिरफ्तार करवाने हेतु पहुंचा था।

- देश में 74000 से अधिक अखबार भारत सरकार के रजिस्ट्रार ऑफ न्यूज पेपर (आर.एन.आई.) से पंजीकृत हैं। उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक अखबार पंजीकृत हैं। वहां कुल 11,787 अखबार पंजीकृत हैं। दिल्ली का स्थान उसके बाद आता है जहां 10,066 पंजीकृत अखबार हैं। महाराष्ट्र 9,127 अखबारों के पंजीयन के साथ तीसरे स्थान पर है।

- फैजाबाद के एक परिवार ने दूसरों द्वारा हड़पी गयी अपनी जमीन को मुक्त कराने हेतु तीन पीढ़ी तक मुकदमा लड़ा। बाबा के समय में शुरू हुए मुकदमें में 52 वर्ष बाद वादी को चकबंदी न्यायालय से न्याय मिल पाया है।

- देश में 2009-2010 के दौरान व्यस्तम समय में बिजली की मांग और आपूर्ति का अंतर 2008-2009 के 11.9 प्रतिशत की तुलना में बढ़कर 12.6 प्रतिशत होने की आशंका है। हालांकि पिछले तीन वर्षों से प्रति व्यक्ति बिजली की खपत में लगातार वृद्धि जारी है, देश में बिजली की भारी कमी है।

- अलीगढ़ के गांव ककोला में बुजुर्ग की मौत पर शोक जताने आए 45 लोग फूड प्वाइजनिंग के शिकार हो गए। इनको इलाज के लिए जेएन मेडिकल कॉलेज लाया गया। जहां चार लोगों ने दम तोड़ दिया। कई की स्थिति गंभीर है। शोक जताने के लिए आए लोगों के लिए दोपहर का भोजन बनाया गया था। इसे खाने के बाद वह लोग विदा हो गए। थोड़ी ही दूर पहुंचने पर उन्हें उल्टियां होने लगीं और सबकी तबीयत बिगड़ गई।

चलो चलें उस पार कबीरा

• डॉ. निज़ामउद्दीन •

आज भौतिकतावाद का युग। नवीन-नवीन उत्पाद हमारे सामने आ रहे हैं, सुविधाओं का अंबार लगा है। कुछेक को देखकर आंखें चौंधिया जाती हैं। आदमी की उपलब्धियों पर खुशी और हैरत दोनों होती हैं। 'अर्थ' को एक पुरुषार्थ माना गया है और 'मोक्ष' की प्राप्ति का साधन भी। 'बी.पी.एल.' वर्ग वाला व्यक्ति भी दो जून रोटी का जुगाड़ कर लेता है। उसके बालक भी पाठशाला जाते हैं, भले ही उसने कभी पाठशाला का मुंह न देखा हो, कभी 'क-ख-ग' तक सीखने का मौका न मिला हो। गांव अब प्रायः पक्की सड़कों, पक्के खड़ंजों से जुड़े हैं। गांवों का बाहरी ढांचा बदल गया है। 50 वर्ष पूर्व जिस व्यक्ति की मृत्यु हो गई हो, यदि वह जीवित होकर अपने गांव में पुनः प्रवेश करे तो उसे यक़ीन न होगा कि यह उसी का अपना गांव है। इसमें आपको आश्चर्य-चकित होने की ज़रा भी ज़रूरत नहीं है, क्योंकि संसार की प्रत्येक वस्तु परिवर्तनशील है। परिवर्तन अपना मार्ग स्वयं चुनता है, आदमी की क्या मजाल कि उसमें दख़ल दे! आदमी का हुलिया धीरे-धीरे समय के/परिवर्तन के पद-चाप से ऐसा बदलता है कि वह अपने आपको (पुराने फोटो देखकर) पहचानने से चकित रह जाए तो इसमें चकित होने की आवश्यकता नहीं। 'परिवर्तन' शीर्षक से सुमित्रानंदन पंत ने एक कविता रची है उसमें वह कहते हैं

अहे! निष्ठुर परिवर्तन
तुम्हारा ही ताण्डव नर्तन
विश्व का करुण विवर्तन
तुम्हारा ही नयनोन्मीलन
निखिल उत्थान-पतन।

उधर जयशंकर प्रसाद ने न जाने किस अवसाद से अभिग्रस्त होकर कहा था ले चल मुझे भुलावा देकर, मेरे नाविक धीरे-धीरे।

यही बदलाव या परिवर्तन है और इसी से नए क्षितिज उद्घाटित होते हैं, नए जीवन का सूत्रपात होता है, एकरसता समाप्त होती है। एक अंग्रेज कवि ने ठीक ही कहा है पुरातन पर ही नवीन की नींव रखी जाती है, रात्रि बीतने पर भोर आता है।

डर के आगे जीत है; हां, जो साहसी हैं, निर्भय हैं उन्हीं की जीत होती है। बुराई व दुराचार, अन्याय व हिंसा को बढ़ावा इसीलिए मिलता है कि हम सही वक्त पर बोलने का साहस नहीं बटोर पाते, कुछ मसलहत के कारण अन्याय, अत्याचार का प्रतिरोध नहीं कर पाते। हमारी अंतरात्मा जैसे मुर्दा हो गई है, या उसे हमने गिरवी रख दिया है। यह एक बड़ा कारण है अपराधों को प्रोत्साहन देने का।

क्या कभी हमने किसी को दान आदि देते हुए सोचा है कि ऐसा कुछ क्यों न किया जाए जिससे इसे फिर हाथ फैलाने की जरूरत न पड़े? एक बार जब निराला सड़क पर जा रहे थे, किनारे पर बैठी एक बूढ़ी स्त्री ने कहा "बेटा! कुछ इस बेसहारा बुढ़िया को भी दे।" यह सुनकर निरालाजी ने आवेशातिरेक में उसका गला दबाकर कहा "निराला की मां होकर भीख मांगती है।" महाकवि निराला ने उसे सबकुछ दे दिया। विचारणीय बात यह है कि भूखे को अनाज (भोजन) देना ठीक है, लेकिन उत्तम यही है कि उसे अनाज पैदा करना सिखाया जाए, या कोई हुनर, कला, दस्तकारी सिखाई जाए, ताकि वह अपना जीवन निर्वाह सुचारु रूप से कर सके। हमारे बेरोजगार युवक इधर-उधर नौकरी के लिए भागदौड़ कर रहे हैं, शिक्षा भी अच्छी पाई मगर वह 'रोजगार परक' नहीं तो क्या होगा! उधर शिक्षा ऐसी कि उसमें नैतिकता का पुट नहीं, बिना नैतिकता के मनुष्य और पशु में कोई भेद है क्या? जहां देखो हिंसा, भ्रष्टाचार, बलात्कार, चोरी-डकैती की घटनाएं बढ़ती नज़र आती हैं। हम कुछ समय निकाल कर 'सत्संग' में भी चले जाते हैं, लेकिन साधु-संतों के प्रवचन, उनकी संतवाणी सुनकर भी पत्थर बने रहते हैं, हमारे हृदय पर, आचार-व्यवहार पर कोई

प्रभाव नहीं पड़ता। वर्षा से पत्थर पर क्या प्रभाव पड़ता है? जीवन-मूल्य क्या हैं, इसका हमें पता ही नहीं।

कभी सोचा है जितना हम बोलते हैं उसमें कुछ सार की बातें भी कहते हैं क्या? पढ़ते तो खूब हैं, पर क्या उसे पचाते भी हैं, उस पर चिंतन-मनन कर उस पर अमल भी करते हैं? सोचा है कभी कि हमारी कथनी-करनी में कितना अंतर है? हमने न परीक्षण जाना, न अनुभव करना सीखा, न सच्चे अर्थों में जीना सीखा, बस जिंदा रहना सीखा है, और जिंदा हैं लेकिन जिंदगी कैसे जिएं यह गुर अभी हम सीख नहीं पाए। क्योंकि जो जीना जानते हैं उनके पास बैठकर कुछ सीख हासिल करने का सौभाग्य हमें प्राप्त नहीं।

कबीर को ''शायरे फरदा'' कहना ठीक है यानी ऐसा इकलौता कवि जो भविष्यद्रष्टा है। उन्होंने समाज का प्रत्येक कोण से एक्स-रे किया। वह समाज की नब्ज को, दिल की धड़कन को भलीभांति देखते थे, अनुभव करते थे। आज उन जैसा नब्बाज़ (नब्ज़-पारखी) आपको कहीं दिखाई देता है? देश पर शासन करने वाले, केवल शासन करते हैं, देश को कम जानते हैं। दूर क्यों जाइए देश के कर्णों को देखिए। उनमें से एक बड़ी संख्या चापलूसों की है, स्वार्थी लोगों की है। हिंसक, बाहुबलियों, धन-बलियों की उनमें कमी नहीं। वे स्खलित होते हैं, कदम-कदम पर फिसलते हैं। जो स्वयं गिरता हो वह दूसरों को गिरने से कैसे बचा सकता है? कहते हैं एक संत ने एक बार राह में चलते बच्चों को कीचड़ में खेलते देखा तो उनसे कहा ''बच्चो! कीचड़ में मत खेलो, फिसल कर गिर पड़ोगे और कपड़े गंदे हो जाएंगे, चोट भी लग सकती है।'' संत की बात सुनकर एक समझदार-से बच्चे ने कहा ''श्रीमान्! आप कीचड़ से बचकर चलिए, आप गिर पड़े तो सारा समाज फिसल सकता है।'' कहने का मतलब यह कि हमें सीधे मार्ग पर चलना चाहिए, किसी भी रूप में सत्य और विवेक के मार्ग को नहीं त्यागना चाहिए। ज्ञानी-ध्यानी, दाता, जपिया-तपिया तो बहुत मिल सकते हैं लेकिन 'शीलवंत कोई एक'। यहां हम अपने चारों ओर देखते हैं तो अजीब तरह की घुटन होती है, एक अजीब तरह का दुःख होता है। समाज के, मनुष्य जाति के दुख को कोई विरला ही समझता है। साधु, संतात्मा धर्म-संप्रदाय, जात-पात से ऊपर होते हैं। वे मनुष्य को समान रूप से देखते हैं और सबका कल्याण करना चाहते हैं, मानो पर-कल्याणार्थ ही उन्होंने जीवन धारण किया है। साधु-संत को देखने मात्र से हमें सत्य मार्ग के दर्शन होते हैं और ईश्वर का स्मरण हो उठता है। वे मछली की भांति धारा के विपरीत चलते हैं, धारा के साथ बहते नहीं चले जाते। मनुष्य को चाहिए कि संसार के अरण्य में सोच-समझकर विचरण करे। कबीर भी यही कहते हैं

''हिरना! समझि-बूझि वन चरना।''

मोहल्ला – साजगारीपोरा
पोस्ट – श्रीनगर (जम्मू–कश्मीर)

मुक्तक-मुक्ता

1. उत्सर्ग

भीड़ में-से मुझे मनुष्यों का वर्ग चाहिये।
त्याग की नींव पर बना दुर्ग चाहिये।
कौन है तैयार जो मिटा दे खुद को?
उत्कर्ष के लिये उत्सर्ग चाहिये।।

2. व्यवस्था

जीवन-व्यापारों का समुचित-नियोजन चाहिये।
प्रत्येक आयोजन का प्रशस्त-प्रयोजन चाहिये।
समाज और संस्था की धुरी है व्यवस्था,
कार्यों का विभाजन और समायोजन चाहिये।।

3. लोरियां

निज गौरव अक्षुण्ण भले ही हलाहल पिया।
पौरुष के पावक में भस्म हुईं लाचारियां।
अत्यंत मुश्किल है भटक जाना चकाचौंध में,
दृढ़ सुसंस्कार बनी है मां की लोरियां।।

4. असंतुलन

आदमी सांसों में पीता है धुआं-धूल।
लाशों पर अर्पित होते हैं महकते फूल।
असंतुलन की जिम्मेदार हैं विडंबनाएं,
चंदन की चिता देख हंसता है बबूल।।

5. शकुन

मेरे देश की धूल मानो गुलाल-कुमकुम है।
वृक्ष की पत्तियां जैसे हरे-हरे कुसुम हैं।
शील-सादगी की प्रतिमूर्ति होती विधवाएं,
अज्ञान-अंधविश्वास कि वे अपशकुन हैं।।

● **डॉ. दिलीप धींग**
द्वाराः कन्हैयालाल धींग
पोस्ट–बम्बोरा–313706
जिला–उदयपुर (राज.)

विधायिका बनाम न्यायपालिका

• सत्यनारायण सिंह •

भारतीय संविधान में वास्तविक सत्ता जनता में निहित की गई है। आम जनता की आवश्यकताओं एवं इच्छाओं को ध्यान में रखकर विधायिका एवं कार्यपालिका से अपेक्षा की गई है कि वह संविधान में निहित मौलिक अधिकारों व नीति निदेशक तत्वों को ध्यान में रखकर, जनता के प्रतिनिधियों व संसद को विश्वास में लेकर कानून निर्मित करें। मंत्री परिषद् प्रधानमंत्री के नेतृत्व में कार्य करती है। राष्ट्रपति की सलाह पर की गई कार्यवाही को भी न्यायालय में अनुच्छेद 74(1) व (2) के अंतर्गत चुनौती देना संभव नहीं है।

संसद अनुच्छेद 105(3) के तहत सदन और उसके सदस्यों की शक्तियों व विशेषाधिकारों की रूप रेखा तय करती है और कानून बनाती है। अनुच्छेद 142 में सुप्रीम कोर्ट को अपने सामने प्रस्तुत दस्तावेज और रिकॉर्ड मंगाने और अवमानना पर सजा देने का अधिकार है। हमारे संविधान में शासन के तीनों स्तंभों न्यायपालिका, विधायिका और कार्यपालिका के पृथक-पृथक दायित्व, कर्त्तव्य एवं अधिकार निर्धारित किये गये हैं एवं अलग-अलग भूमिका तय की गई है और शक्ति, विशेषाधिकार व दायित्वों के संबंध में भी कोई संदिग्धता नहीं रखी गयी है।

संसद को कानून एवं नियम बनाने, कार्यपालिका को उनको लागू करने और न्यायपालिका को संविधान के तहत समझने एवं व्याख्या करने का अधिकार है। इन स्तम्भों की जिम्मेदारियों व अधिकारों को तय करने का अधिकार भी है। अनुच्छेद 121 के अंतर्गत न्यायाधीशों के आचरण पर संसद में बहस नहीं की जा सकती। अनुच्छेद 122 के तहत सांसदों पर कार्यवाही के संबंध में न्यायपालिका हस्तक्षेप नहीं कर सकती। संसद की सीमा संबंधी प्रस्ताव को अदालत में चुनौती नहीं दी जा सकती। राष्ट्रपति व राज्यपालों के अभिभाषण भी न्यायिक समीक्षा के दायरे में नहीं आते।

संविधान में आशा की गई है कि विधि सम्मत प्रावधानों पर अदालत हस्तक्षेप नहीं करें। जनहित में संविधान का सम्मान हो। यह अपेक्षा की गई है कि आरक्षण विशेषकर पिछड़ा वर्ग का आरक्षण, सांसदों का सदन से निष्कासन, लाभ के पद, राष्ट्रपति व राज्यपालों द्वारा मृत्युदंड के पश्चात् दी गई माफी, नगरीय विकास आदि से संबंधित न्यायपालिका के फैसलों से तनाव बढ़ा है और आरोप लगने लगे हैं कि न्यायपालिका की सक्रियता संविधान की भावना के विरुद्ध है एवं इससे अतिक्रमण हो रहा है। अनुसूचित जाति व जनजाति में क्रीमीलेयर लागू करना, अन्य पिछड़ा वर्ग को उच्च शिक्षा व शिक्षण संस्थाओं में आरक्षण दिये जाने, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के प्रबंधन संबंधी प्रश्न प्रमुख रहा है।

लोकसभा अध्यक्ष ने भी विधायिका के कार्यों एवं शक्तियों पर अतिक्रमण का आरोप लगाया है। सीमाएं परिभाषित किये जाने के बावजूद फैसलों के अमल पर विवाद हो रहा है। ब्रिटेन में संसद सर्वोपरि है एवं उसके फैसलों को न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती। अमेरिका में न्यायिक फैसलों से विधायिका व कार्यपालिका भी पाबंद हो जाती है। विधायिका को जनता की आशाओं व आकांक्षाओं से सर्वोपरि मानकर सत्तारूढ़ राजनैतिक दलों को अपने एजेंडे जिसकी बिनाह पर वे चुनकर आये हैं, निर्णय मानने होते हैं। समय पर, किये गये वायदों की पूर्ति नहीं होने पर सरकार की स्थिरता पर असर पड़ता है। इसलिए विधायिका व कार्यपालिका जनता के प्रति उत्तरदायी है और इसलिए सर्वोच्च सत्ता संसद में निहित मानी गयी है। संसद द्वारा सर्वसम्मति एवं बहुमत से पारित विधेयकों और संशोधनों पर रोक से संवैधानिक प्रश्न खड़े हो रहे हैं। न्यायपालिका ने अदालत के अधिकार, वेतन, सहूलियतें आदि के संबंध में अपने स्तर से बगैर सरकार की दुविधा व असमर्थता को ध्यान में रखते हुए निर्णय किये हैं।

सरकार आरक्षण के प्रावधानों को सामाजिक न्याय के प्रावधानों के अनुसार संविधान की 9 वीं सूची में डालना चाहती है। संविधान निर्माताओं एवं अनेक न्यायिक फैसलों में भी मूलाधिकारों को स्थिर माना है व नीति निदेशक तत्त्वों को लक्ष्यों की पूर्ति के लिए आवश्यक समझकर महत्त्व दिया है। अनुच्छेद 356 के संबंध में भी उच्च न्यायालय व उच्चतम न्यायालय ने हस्तक्षेप किया है। राज्यपालों के अधिकारों पर भी अंगुली उठाई है। उच्चतम न्यायालय ने अनुच्छेद 124 व 214 के अंतर्गत न्यायाधीशों की नियुक्ति, कार्यपालिका के अधिकारों को वस्तुतः समाप्त कर दिया है। कार्यपालिका रोक लगा सकती है परन्तु नियुक्ति में उसका महत्त्व नहीं रहा है।

विधायिका एवं कार्यपालिका के स्तर में गिरावट से भी न्यायिक सक्रियता बढ़ी है। महाराष्ट्र व दिल्ली में निर्मित कॉलोनियों में तोड़फोड़, सिलिंग अभियान आदि अनेक मामलों में मानीटरिंग कमीशनर व जांच दल गठित करने के फैसलों से भी न्यायिक सक्रियता जाहिर हुई हैं। शहरों के मास्टर प्लान बनाना, उस पर अमल करना कार्यपालिका का कार्य है। संसद व विधानसभा के सदस्यों के निष्कासन व सांसदों के लाभ के पद की व्याख्या संबंधी एवं क्षमादान संबंधी मामलों पर भी सवाल उठाये गये हैं।

संसद को संशोधन द्वारा संविधान के मूल ढांचे को बदलने व मूल भावना के विपरीत कार्य करने का अधिकार नहीं है। अनेक जनहित याचिकाओं पर महत्त्वपूर्ण फैसलों से जनहित में लाभ मिला है। परन्तु लोकतंत्र में संविधान एवं संसद सर्वोच्च है। आमजन के नजरिये में कानून बनाने व कार्य करने के लिए संसद सर्वोपरि है और उसके निर्णयों में सीधा हस्तक्षेप संविधान की मूल भावना के अनुकूल नहीं है। न्यायपालिका की अधिक सक्रियता से संविधान के तीनों स्तम्भों में दरार पड़ सकती है।

4/45, सूर्य पथ जवाहरनगर, जयपुर 302004 (राजस्थान)

सबसे बड़ा रुपया

• डॉ. बी.एन. पांडेय •

आज सारी दुनिया में पैसे को लेकर हाय-हाय मची हुई है। हमारा देश भी हाय-तौबा की गिरफ्त में है। जब से पैसे का आविष्कार हुआ है, उसका महत्त्व दिनोदिन बढ़ता ही जा रहा है। लेकिन, अब तो पैसा कमाना ही जिंदगी का मुख्य लक्ष्य बन गया है। चोरी करो, डाका डालो, झूठ बोलो, किसी को धोखा दो, कुछ भी करो पर पैसा कमाओ। जिसमें पैसा नहीं वह काम नहीं करना चाहिए। आर्थिक उदारीकरण का सबसे बड़ा प्रभाव यही हुआ है। अब हर चीज का मूल्य पैसे में है। आटे की कीमत पैसे में/दाल की कीमत पैसे में/नमक की कीमत पैसे में/नमक हलाली की कीमत पैसे में/नमक हरामी की कीमत पैसे में।

अगर नमक हरामी की कीमत भी पैसा है, तो नमक हलाल और नमकहराम में फर्क क्या हुआ? फर्क है सिर्फ पैसा। पैसा कम हो जाए तो हलाल को हराम होने में देर नहीं लगती। विश्वास से बड़ा है पैसा। वफादारी से बड़ा है पैसा। जी हां, आज पैसा हर योग्यता से बड़ा है। भगवान् वही बड़ा जिसका मंदिर बड़ा। पंडित बड़ा जिसकी दक्षिणा बड़ी/कर्मचारी बड़ा जिसकी तन्ख्वाह बड़ी/नेता बड़ा जिसका घोटाला बड़ा।

आज हर चीज बड़ी हो सकती है अगर पास में बड़ा पैसा हो। पंडित के दिमाग में ज्ञान नहीं है, चलता है। कर्मचारी के स्वभाव में जिम्मेदारी नहीं है, चलता है। नेता के पास नीति नहीं है, चलता है। और कुछ हो न हो पर पैसा हो सब चलता है। आजादी मिलने से पहले नेता राजनीति में जाते थे, देश सेवा करने। आजादी के बाद देश का माहौल बदल गया। देश की सेवा अपनी सेवा हो गई। क्योंकि आजादी मिलने के बाद अचानक नेताओं की राजनीति की असलियत समझ में आ गई। अचानक उन्होंने देखा कि यहां तो पैसे की इफरात है। तो सूखी देश सेवा में क्या रखा है? पैसा कमाओ बाप! और देश सेवा का क्या? देश सेवा गई तेल लेने! देश की सेवा ही क्या, आज तो हर सेवा तेल लेने भेज दी गई है। क्योंकि पैसा देश से बड़ा, पैसा देश भक्ति से बड़ा, पैसा इन्सान से बड़ा, पैसा विवेक से बड़ा।

अच्छा हुआ हम 1947 में आजाद हो गए। अगर स्वतंत्रता संग्राम आज हुआ होता तो धंधे की तरह होता। आंदोलन करने से पहले नेता हिसाब लगाते-धरना देने के कितने पैसे? जेल जाने के कितने? जनरल डायर को गोली मारने के कितने? और फांसी चढ़ने के कितने? क्या हुआ हिसाब लगा सकते हैं, क्रांति के बिगुल बजाने के लिए कितना पैसा मिलना चाहिए था? हाय पैसा!!

अगर स्वतंत्रता संग्राम भी धंधा बन जाता तो हमारे नेता आजाद हिन्द डिपार्टमेंटल स्टोर ही खोल लेते। वैसे जो आजादी मिलने से पहले नहीं खुला, वह मिलने के बाद खुल गया। आज राजनीति में पैसा फेंककर देखिए हर नाप का नेता मिलता है। पैसा जब जरूरत से ज्यादा होता है तो 'अय्याशी' के काम आता है। रिश्वत खिलाने के काम आता है। सुपारी देने के काम आता है। शिक्षा को नष्ट करने के काम आता है। संस्कृति को नष्ट करने के काम आता है। पैसे से रोटी मिलेगी, इसकी कोई गारंटी नहीं। पैसे से भूख नहीं मिटती। लेकिन मजे की बात यह है कि पैसे की भूख उन्हीं को ज्यादा लगती है जो भूख से मर नहीं रहे होते। गुनाह गरीबी की बीमारी है। ज्यादा गरीबी के बोझ से दबा आदमी भी गुनाह की ओर मुड़ता है। यानी अमीर होकर भी आदमी गरीबी की बीमारी से बच नहीं पाता। कहते हैं कि पैसा हाथ का मैल होता है। जानते हो इसका असली मतलब क्या होता है जिसके पास ज्यादा पैसे उसके हाथ ज्यादा मैले।

बी–68, हरदेव नगर, दिल्ली–110084

हमारे कदम डगमगा तो नहीं रहे

● धर्मचंद जैन 'अनजाना' ●

बासठ वर्षीय गणतंत्र पौरुष को कान्ति व कीर्तिमय बनाने में कहीं हमारे कदम डगमगा तो नहीं रहे। कहीं हम विकासपथ की भूल-भुलैया में भटक तो नहीं रहे। सत्ता, धन या यशलोलुपता में आदमी, आदमी को, आदमी की तरह पहचानने में चूक तो नहीं कर रहे। 'स्व' के तंत्र को ही स्वतंत्रता मान राष्ट्रीय उद्देश्यों को कहीं छिटका तो नहीं रहे।

लगता है अतीत का कर्म आधारित जातिवाद वोट की राजनीति के जरिये जहर उगल रहा है। कुरूपता, सरूपता के लिबास में बेहिचक प्रसार पा रही है और सुरूपता, कुरूपता के वेश में बेचारी बेबस लाज बचाने में असमर्थ है!

खेल, सीमा समस्या, आवंटन, प्रतिभाचयन, रक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य, चिकित्सा, न्याय व योजनाएं कोई भी हो राजनैतिक उठापटक, दखल व भाई-भतीजावाद। अहिंसा के आधार पर मिली आजादी को हिंसा, आतंक व भय के कंटीले शूल से भेदकर सिसकने को मजबूर होती यह आजाद जनता।

न्यायालय के निर्णयों की इतनी विलम्बता कि पीढ़ियां बीत जाती हैं। खूनी व हत्यारा बरी हो जाता है। अपराधी जेल के शिकंजे से बेधड़क भाग छूटता है। भयाक्रांत गवाही देने से पीछे सरक जाता है। बयान बार-बार बदलने का सिलसिला जारी है। लोकसभा एवं विधान सभाओं में होने वाले हंगामें, शोरगुल, हाथापाई, पैसे लेकर सवाल पूछना एवं नहीं पूछना, फर्नीचर फैंक किस प्रकार की आजादी को प्रदर्शित करते हैं।

दुश्मन से बचने की भरपूर तैयारी पर देश-द्रोहियों द्वारा लग रहे आजादी पर पहरों से बचना कठिनतर। खुली बिक्री से मद्यपान को प्रोत्साहन। गांवों के बाहर मंदिरों के बजाय मदिरालय, ड्रग्स से विलुप्त होती युवा शक्ति, रिश्वत से रोता आम आदमी, नारी को पूजने वाली देवरमणा धरा भारती में बेनकाब होती अबलाएं, अनियंत्रित व्यक्तिवाद, अबोधों की हृदयविदारक मौत, बालश्रमिकों का लुटता बालपन, अनगिन बालाओं की भ्रूण हत्या, बेसहारा व भयभीत होते लोग, वंचनापूर्वक व्यवहार, फिरौती की फुफकार और लुटती मानवता। यह सब कुछ, आजादी पर होती ज्यादतियां नहीं तो और क्या? आवश्यक है कहीं न कहीं शासन, न्याय, रक्षा, शिक्षा व चिकित्सा को राष्ट्रीय चरित्र के परिप्रेक्ष में आजादी के तहत बदला जाए, न्यायसंगत सोचा जाए।

कहती है आजादी भौतिक विकास की चकाचौंध में मानवीयता को अंधकार में भटकने से रोका जाए। आदमी अभय का अनुभव करे। सही समय पर निर्णय नहीं मिले। सृजनात्मक व सकारात्मक नेतृत्व के तले आजादी का प्रसाद सबको मधुरता दे। शिक्षा, दीक्षा व रक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान कर लोकतंत्र के हाथों को मजबूत करने को राष्ट्र का एक-एक नागरिक प्राण-प्रण से जुड़े तभी भारतीय आजादी के भाल पर लगा यह विजय तिलक विश्व पटल पर सुशोभित हो सकेगा। 62 वर्ष की आजादी को अंतर की आंख से देखना है। उसकी रक्षा करनी है। आर्थिक व सामाजिक परतंत्रता के प्रसार को रोकना है।

ध्यान रहे परतंत्रता के परों से उड़ा नहीं जा सकता और न ही अच्छे भविष्य पथ का निर्माण ही किया जा सकता। मात्र कांटों भरी उलझी व संकड़ी तंग पगडंडियों में रेंगते हुए जीवन जीने की मजबूरी, बिखरता परिवार, टूटता जीवन, खंडित होता समाज व राष्ट्र के प्रति घटता प्रेम। फिर कैसे होंगे आजादी के गांधी और आचार्य महाप्रज्ञ के सपने साकार?

आजाद रह कर आजादी को सोचें। अहिंसा को आत्मसात करें और असली आजादी का स्वाद चखें।

चक्षु–दर्शन कुटीर, थामला, जिला–उदयपुर (राजस्थान)

पंचभुजी

● भगवान दास एजाज ●

जो कल तक थे कंगले
आज उन्हीं के बंगले
बन गए लोग नवाब
और गरीब की हो गई
मिट्टी और खराब!

●●●

जिन्हें न अपना घर पता
वो तेरा घर पूछते
तू मुट्ठी मत खोल
खड़े खड़े बिक जाएगा
औने-पौने मोल!

●●●

घड़ियाली आंसू लिये
जनता के दुख दर्द में
हमदर्दी जतलाभ
नेता कुर्मी से उठे
सड़क छाप बन जाय!

●●●

दिल में इक हसरत रही
कद होता आकाश तक
लंबे होते हाथ
हम भी रात गुजारते
कुछ तारों के साथ!

टी–451, बलजीत नगर,
नई दिल्ली – 110008

स्वतंत्र देश का आत्मचिंतन

• प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा •

नव स्वतंत्रता प्राप्त एक देश की घटना प्रसिद्ध है। स्वतंत्रता मिलने के तत्काल बाद, वहां एक वृद्ध महिला प्रसन्नचित्त, सड़क के बीच में चलने लगी। इससे आनेजाने वाले वाहनों तथा यात्रियों को बड़ी असुविधा हुई। उन्होंने वृद्धा को निवेदन किया कि वह सड़क के एक ओर चले। मगर वृद्धा ने उनकी बात को यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि वह अब एक स्वतंत्र देश की नागरिक है और इसलिए, वह जैसे चाहे सड़क पर चल सकती है। इस पर दूसरे लोगों ने तर्क दिया कि अगर उसे मनचाहे ढंग से सड़क पर चलने की स्वतंत्रता है तो दूसरे लोगों को भी मनचाहे ढंग से चलने या अपने वाहन चलाने की स्वतंत्रता होगी। तब तो उस वृद्धा सहित अन्य किसी भी व्यक्ति के प्राण सुरक्षित नहीं रह सकेंगे। बड़ी कठिनाई से वृद्धा को मनाया जा सका।

आज हमारे देश में जो परिस्थिति है, उसे देख कर लगता है, जैसे हम सभी उस वृद्ध महिला के समान आचरण करने लगे हैं। दफ्तरों में कर्मचारी, कारखानों में मजदूर और शिक्षण संस्थाओं में छात्र, जब चाहें तभी हड़ताल और तोड़फोड़ के लिए आमादा हो जाते हैं। अपने कार्य-स्थान पर रहते हुए भी वे निष्ठा और उत्तरदायित्व के साथ काम करते हों, ऐसा कम ही होता है। व्यापारी अपने ग्राहकों को हर प्रकार से शोषण करने और मनचाहा लाभ उठाने को अपना अधिकार समझ बैठे हैं। कर्मचारियों की दृष्टि सामान्यतः, प्राप्त होने वाली सुविधाओं पर ही रहती है, कर्त्तव्यों के पालन पर नहीं। छात्रों का संबंध ज्ञानार्जन से अपवाद स्वरूप ही रह पाता है। अव्यवस्था, अनुशासनहीनता और

अशिष्टता को ही वे अपनी दिनचर्या मान बैठे हैं। राजनीति का अर्थ भी अब केवल कुर्सी की उठापटक और आपाधापी बनकर रह गया है। भ्रष्टाचार जीवन का एक अंग बन गया है। भ्रष्टाचार में लिप्त होते समय या उसका शिकार बनते समय अब शायद ही किसी को उसका अहसास होता है। इस पर भी तुर्रा यह है कि ये सभी दूसरों को ईमानदार और कर्त्तव्यनिष्ठ रहने का उपदेश देते हैं। हमारी कथनी और करनी में बड़ा अंतर आ गया है। उपदेश सब देते हैं, मगर उनका पालन सामान्यतः नहीं होता। ऐसी परिस्थिति में देश का माहौल शनैः-शनैः उच्छृंखलता के आगोश में समाता हुआ सा प्रतीत होता है।

सड़कों पर अक्सर नारे सुनने को मिलते हैं 'तानाशाही नहीं चलेगी।' अथवा 'हमारी मांगें पूरी हों' या 'हम अपने अधिकार लेकर रहेंगे।' बात ठीक है। तानाशाही नहीं चलनी चाहिए। उचित मांगें पूरी होनी चाहिएं और प्रत्येक व्यक्ति को उसके अधिकार मिलने चाहिएं। मगर प्रश्न यह है कि यदि देश में सचमुच ही कहीं कोई तानाशाही होती तो क्या वे ऐसे नारे लगाने का साहस कर सकते थे? शायद नहीं। उस स्थिति में उनमें से अधिकांश या तो अपने दड़बे में छुपे होते या तानाशाहों के तलवे सहलाते रहते। विरोध करने का साहस बिरले ही कर पाते। आज हर कोई व्यक्ति इस प्रकार के अनापशनाप नारे लगा देता है, जिनका अर्थ वह स्वयं भी नहीं जानता और जानने की कोशिश भी नहीं करता। दूसरा प्रश्न इस संदर्भ में यह उठता है कि अपने अधिकारों की मांग के साथ क्या हम कर्त्तव्य पूर्ति पर भी ध्यान देते हैं? कर्त्तव्यों की उपेक्षा और अधिकारों की मांग किसी भी दृष्टि से तर्कसंगत नहीं हो सकती। यह स्थिति हमें वृद्ध महिला वाला स्वरूप ही प्रदान कर देती है। आज का मजदूर मूल्यवृद्धि के कारण अपनी वेतन-वृद्धि की मांग करता है और उसके लिए हड़ताल करता है। हड़ताल से उत्पादन गिरता है, जिससे मूल्यवृद्धि और अधिक होती है। इससे वेतन-वृद्धि की मांग पुनः उठ खड़ी होती है। फलस्वरूप हम एक अजीब से दुष्चक्र में फंस जाते हैं। साधारण मजदूर इन बातों को नहीं समझते। उनके नेता यह सब उन्हें समझाना नहीं चाहते। वे अपने ही स्वार्थों में और पदलिप्सा में डूबे रहते हैं। मजदूरों के कल्याण का दायित्व जिन लोगों पर है, वे भी निजी स्वार्थों के

इर्दगिर्द घूमकर, अपने वास्तविक दायित्वों की उपेक्षा करते हैं। पूंजीपति और उद्योगपति भी केवल अपनी जमापूंजी को बढ़ाने की तरफ ध्यान रखते हैं, मजदूरों के हितों की तरफ नहीं।

जनतंत्र नागरिकों को केवल अधिकार ही नहीं देता, उस पर उत्तरदायित्व भी डाल देता है। व्यक्ति को अपना प्रत्येक कार्य करते समय यह सोचना होगा कि उसके उस कार्य से कहीं समाज को कोई हानि तो नहीं होगी। वह अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए या सस्ती लोकप्रियता प्राप्त करने के लिए समाज के वातावरण को दूषित तो नहीं कर रहा? इन प्रश्नों का उत्तर यदि वह स्वयं अपनी अंतरात्मा से पूछेगा तो निश्चित ही उसकी शुद्ध आत्मा, उसे धोखा नहीं देगी। सत्य को जानने का महात्मा गांधी ने भी यही एकमात्र मार्ग बतलाया था।

विदेश-यात्रा से लौटे हुए व्यक्ति, कुछ देशों के बड़े प्रेरणादायक संस्मरण सुनाते हैं। उदाहरणार्थ अखबारों की दुकान पर विक्रेता का न होना या बसों में कंडेक्टर का न होना। व्यक्ति निर्धारित स्थान पर पैसे डालकर अखबार ले लेता है या बस में यात्रा कर लेता है। वर्तमान परिस्थितियों में, हमारे यहां, यह कल्पना की बात लगती है। सत्य, ईमानदारी या धर्म आदि के बारे में जितने उपदेश हमारे यहां दिए जाते हैं, उतने शायद ही अन्यत्र दिये जाते हों। मगर हमारी करनी इसके सर्वथा विपरीत है। दुर्भाग्यवश स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद हमारे यहां जनसाधारण के सामने राजनेताओं द्वारा न तो उचित आदर्श रखे गए और न उन्हें राष्ट्र के प्रति दायित्व-बोध करवाया गया। इससे हमारा राष्ट्रीय चरित्र निरंतर गिरता चला गया और हम केवल अपने धर्म, जाति भाषा या क्षेत्र की सीमा तक सिकुड़ते चले गए। अतएव आज की हमारी सर्वप्रथम आवश्यकता तो यह है कि हमारे समाज के अग्रणी व्यक्ति अपने को सुधारें। ये अग्रणी व्यक्ति राजनीति, समाज, शिक्षा, व्यापार, पत्रकारिता सभी क्षेत्रों में हैं। इन्हें अपने कार्यों के माध्यम से जनता के समक्ष आदर्श उपस्थित करने होंगे। इन सभी अग्रणी व्यक्तियों के लिए कठोर आचरण संहिता हो, जिसका पालन कानूनी रूप से आवश्यक हो।

दूसरी आवश्यकता जनता को सही रूप में शिक्षित करने की है। आज हमारी शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य शब्द-ज्ञान और सूचना-ज्ञान देना मात्र है। छात्रों में राष्ट्रीय चरित्र को उभारने की ओर ध्यान नहीं दिया जाता। वास्तव में शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य छात्रों में राष्ट्रीय चरित्र को उभारना ही होना चाहिए। छात्रों को सिद्धांत और व्यवहार में यह सिखलाना होगा कि राष्ट्र सबसे ऊपर है तथा धर्म, जाति, भाषा या क्षेत्र आदि उसके सामने गौण हैं। प्राथमिक शिक्षा मुफ्त और सबके लिए अनिवार्य हो। शिक्षा में शब्द-ज्ञान और सूचना-ज्ञान भी आवश्यक हैं, मगर दूसरे क्रम पर। प्रथम क्रम पर तो राष्ट्रीयता का ज्ञान ही होना चाहिए।

तीसरी बात यह है कि अपराधी व्यक्ति के लिए न केवल उचित दंड की व्यवस्था हो, अपितु इस बात की भी व्यवस्था हो कि न्याय में विलम्ब न हो तथा कोई भी अपराधी उस दण्ड से बच न सके, चाहे वह कितना ही बड़ा, प्रभावशाली और विशिष्ट क्यों न हो। यही स्वस्थ और सच्चे लोकतंत्र का तकाज़ा है।

10/611, मानसरोवर
जयपुर – 302020 (राजस्थान)

प्रेरणा

घमण्ड किस पर ?

• डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी •

आल्सिबाइडिस नाम का एक व्यक्ति बहुत धनाढ्य जमींदार था। उसे अपनी सम्पत्ति और जागीर का बड़ा गर्व था। एक दिन सुकरात के पास जाकर उसने अपने गुणों का बखान प्रारंभ कर दिया। सुकरात उसकी बात कुछ देर चुपचाप सुनते रहे। कुछ देर बाद उन्होंने पृथ्वी का एक नक्शा मांगा। नक्शा फैलाकर वे उस धनाढ्य से बोले, ''अपना यूनान देश इसमें आप देखते हैं?''

''यह रहा यूनान!'' धनाढ्य ने नक्शे पर अंगुली रखी।

''और फिर अपना एंटिका प्रांत?'' सुकरात ने प्रश्न किया।

बड़े संकट मन से कुछ देर में धनाढ्य जमींदार अपने छोटे-से प्रांत को ढूंढ सका। परन्तु उससे फिर पूछा गया ''इसमें आपकी जागीर की जमीन कहां है?''

''महोदय! नक्शे में इतनी छोटी जागीर कैसे बतायी जा सकती है?'' जमींदार ने उत्तर दिया। अब सुकरात ने कहा, ''भाई! इतने बड़े नक्शे में जिस भूमि के लिए एक बिन्दु भी नहीं रखा जा सकता, उस नन्हीं-सी भूमि पर तुम इतना घमण्ड करते हो? इस पूरे ब्रह्माण्ड में तुम्हारी भूमि और तुम कहां कितने हो, यह सोचो और और विचार करो कि यह घमण्ड किस पर? कितनी क्षुद्रता की बात है।''

86/323, देवनगर, कानपुर (उ.प्र.) 208003

भय का दूसरा नाम है ईश्वर

• लक्ष्मी रानी लाल •

आज आतंकवाद के जिस दौर से हम गुजर रहे हैं कि तनाव ने हमें अपनी गिरफ्त में बुरी तरह से कैद कर लिया है। हमारे चारों तरफ हिंसा का इतना तांडव नृत्य हो रहा है कि भय ने हमारे संपूर्ण अस्तित्व को लील लिया है। इस दहशत भरी जिंदगी में खुलकर हम सांस भी नहीं ले सकते।

हमारे मन में व्याप्त भय ने हमारी सोच को नकारात्मक बना दिया है। नकारात्मक सोच की वजह से हम निराशा के दलदल में धंसने लगते हैं। दुश्चिंताएं हमारे मन को भयग्रस्त एवं अवसादग्रस्त बना देती हैं।

इस भौतिकवादी युग में हमने बहुत प्रगति की है। इस प्रगति और भय में अटूट संबंध है। हमारे वैज्ञानिकों ने अनेक प्रकार के आविष्कार किए। जैसे-जैसे भौतिक प्रगति हुई उसके दुगुने अनुपात में भय भी प्रगति करता रहा।

मनुष्य का जीवन आवेश-प्रधान है। आवेश में आकर वह अपनी शांति स्वयं ही नष्ट करता है। असंयमित एवं अशांत मन में अनेक नकारात्मक सोच भरने लगती है और वह उससे त्राण पाने के लिए भयभीत होकर ईश्वर को पुकार उठता है

''पाहिमाम करुणा कर परमेश्वर सर्वेश्वर।''

अपने स्वभाव की उग्रता एवं असहिष्णुता से हमारा अपना ही नुकसान होता हैं हम बात-बात में उग्र होकर दूसरों से उलझकर तकरार करने लगते हैं। धीरे-धीरे वातावरण हिंसात्मक हो उठता है। पहले तो हम अपने हिंसक स्वभाव की वजह से भय को स्वयं ही निमंत्रण देते हैं और परिणाम सामने आने पर आर्तनाद कर उठते हैं 'हे भगवान रक्षा करो!''

कहावत है, ''खाली दिमाग शैतान का घर'' खाली दिमाग व्यर्थ की बातों को सोचकर भविष्य की आशंका से भयभीत हो उठता है। हमेशा उसे कुछ छिन जाने का भय सताने लगता है। प्राण, कुटुम्ब, आर्थिक संपन्नता सब कुछ छिन जाने की आशंका से उसे भय दबोच लेता है और वह ईश्वर को पुकार उठता है।

आज प्रायः सभी भय के चंगुल में फंसे हुए हैं। स्वास्थ्य खराब न हो जाए और रोग हमें न सताए इस आशंका से भयभीत होकर हम सभी योग-शिविरों की ओर भाग रहे हैं। संतान के सुखद भविष्य की चिंता में दो वर्ष का होते ही उसे प्ले-स्कूल में भेज देते हैं। कुछ निर्मूल आशंकाएं हमें व्यर्थ ही भयभीत करती हैं। इसी कारण ज्योतिषियों के पौ-बारह हो रहे हैं। यही भय हमें ईश्वर के करीब पहुंचा रहा है।

जब हम कुछ गलत काम करते हैं तो हमें नसीहत दी जाती है ''ईश्वर से डरो।'' हम जानते हैं कि ईश्वर अन्तर्यामी है, इसलिए गलत काम करने से डरते हैं।

भर्तृहरी ने वैराग्य शतक में लिखा है ''प्रत्येक वस्तु में कुछ न कुछ भय होता है। मनुष्य के लिए जगत में सब बातें भययुक्त है। केवल वैराग्य ही अभय देने वाला है। अगर अपने व्यक्तित्व को गला दोगे तो भय, शंका सभी का अंत हो जाएगा।'' महाराष्ट्र के संत भगवान नित्यानंद ने कहा है ''भय एक प्रकार का द्रव्य है। उसे जो जीतता है वही सुखी होता है। तुम दृढ़ता से साथ आगे बढ़ते रहो फिर एक ऐसी स्थिति आ जाएगी कि भय गल जाएगा। योगदर्शन पढ़ो, सत्संग करो और विचार भी करो।''

संत मंसूर कहते हैं

मुसल्ला छोड़, तसबी तोड़, किताबें डाल पानी में।

पकड़ दस्त तू फरिश्तों का, गुलाम उनका कहाता जा।।

संत मंसूर कहते हैं कि और सभी बातों को छोड़कर फरिश्तों यानी साक्षात्कारी संतपुरुषों जिनको भगवान ने उपदेश देने का अधिकार दिया है उनकी शरण में जाओ। वे जैसा कहें वैसा करो। तू अपने मन से मानी हुई बात को छोड़ दे, आगे बढ़।

इस तरह से हम देखते हैं कि भय और ईश्वर पर्यायवाची शब्द हैं तथा भय का दूसरा नाम ईश्वर है। भय की वजह से ही हम ईश्वर की शरण में जाते हैं। यदि हमें भयमुक्त होना है और कुछ शाश्वत प्राप्त करने की इच्छा हो तो अपनेपन को मिटा दो। किसी कवि ने ठीक ही कहा है

''खुदी को न मिटाओ तब तक खुदा नहीं मिलता।''

24, एम.आई.जी., आदित्यपुर–02
जमशेदपुर – 831013

दूसरों को दुःख देकर कोई भी अपने को सुखी नहीं बना सकता।

• आचार्य तुलसी •

संप्रसारक :

एम.जी. सरावगी फाउंडेशन

41/1-सी, झावूतल्ला रोड, बालीगंज-कोलकाता-700019

• दूरभाष : 22809695

कब आएगा भारतीय राजनीति में प्रकाश पर्व ?

• गोवर्धनलाल पुरोहित •

देश को स्वतंत्र हुए छः दशक हो चले, इस अवधि ने देश के विचारकों के सामने अनेक ज्वलंत प्रश्न खड़े कर दिए हैं। देश की राजनीति पर अंधकार के बादल छाए जा रहे हैं। अंधकार वास्तव में है क्या? अज्ञान, असत्य, अधर्म, अनीति, अन्याय, स्वार्थपरता एवं अत्याचार ही तो अंधकार के प्रतीक हैं। इसे हटाने के लिए ही तो हमारे ऋषि-मुनियों ने ईश्वर से प्रार्थना की थी "असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय।" अर्थात् हम अंधकार को त्याग कर, ज्योतिर्मय सद्मार्ग पर चलें।

1947 में जब देश आजाद हुआ था तब स्वप्न संजोए थे कि जो गरीबी के अंधकार से त्रस्त हैं, उनके जीवन में प्रसन्नता का प्रकाश ला देंगे। परंतु सत्ता के नशे में राजनेता इस ओर कुछ न कर पाए। पूज्य बापू को यह आभास हो गया था कि सत्ता पाने की चाह में, राजनेता राजनीति के स्वच्छ स्वरूप को ही मैला कर देंगे। इसीलिए तो उन्होंने सत्ता से दूर रहकर प्रबुद्ध लोगों को लोक मंगल के लिए कार्य करने का निर्देश दिया था। कांग्रेस को भंग कर राजनीतिज्ञों को जन-सेवा की ओर अग्रसर होने का सुझाव दिया था। परंतु राजनेता इसके लिए तैयार नहीं हुए।

इसके विपरीत त्यागमय जीवन और सेवाभाव जैसे बिंब आजादी के पूर्व थे, वे सब ध्वस्त हो गए। स्पष्ट शब्दों में आज की राजनीति भ्रष्टाचार का पर्याय बन गई है। भ्रष्टतम देशों में हमारा स्थान प्रथम है। भ्रष्टाचार के आरोपों की बौछार होने पर भी राजनेता पद पर चिपके रहते हैं। नैतिकता और जनसेवा की बड़ी-बड़ी बातें करने वालों का असली चेहरा सामने आ गया है। अकाल, बाढ़ के समय गरीबों के लिए मिलने वाली सहायता पर हाथ साफ करने से राजनेता बाज नहीं आते हैं। समाचार-पत्र भिन्न-भिन्न प्रकार के घोटालों से भरे पड़े हैं। कोयला, लोहा, खाद की रकम राजनेता हड़प जाते हैं। यह अंधकार नहीं है, तो क्या है? सांसद प्रश्न पूछने के लिए लोगों से धन ऐंठते हैं। मानव तस्करी में लिप्त हैं। कोई दल ऐसा नहीं है जो दूध का धुला हो।

लोकतंत्र में चुनाव मुख्य व्यवस्था है। यह मूल्यों के आधार पर लड़ा जाता है। परंतु इसमें भी भ्रष्टाचार चरम सीमा पर है। इस संदर्भ में राजाजी ने बहुत पहले हमें सचेत कर दिया था कि "आजादी के बाद तत्काल चुनाव होंगे, उसका भ्रष्टाचार, अन्याय, धन की सत्ता, पाशविकता तथा प्रशासन की अज्ञानता हमारे जीवन को नरक बना देगी।"

राजनीतिक दल तरह-तरह की रैलियां निकाल कर, लंबे-लंबे भाषण देते हैं। कंबल और साड़ियां बांटते हैं। इनकी छीना-झपटी में कई लोग मर जाते हैं। शराब पिलाते हैं आपस में लड़ाते-भिड़ाते हैं। राजनीति गरीबों के रहे-सहे स्वाभिमान को भी ध्वस्त करने में लगी हैं। बापू ने तो सर्वदा साधन की पवित्रता पर जोर दिया था। परंतु राजनेता जिस प्रकार के हथकंडे चुनाव में अपना रहे हैं, उससे राजनीति में अंधेरा ही छाता जा रहा है। इस संदर्भ में राष्ट्र कवि स्व. दिनकरजी ने राजनीतिज्ञों को फटकारा है

"उन्हें पुकारो, जो गांधी के सखा-सहचर हैं,
कहो, पावक में आज उनका कंचन पड़ा हुआ है।
प्रभापूर्ण निकला तो वह पूजा जाएगा,
मलिन हुआ तो, भारत की साधना बिखर जाएगी।"

आज देश का कोई सर्वमान्य नेता नहीं है। कोई दक्षिण का है तो कोई उत्तर का। कोई सवर्णों का है तो कोई दलितों का। अपनी-अपनी सेना बनाकर गरीबों को परस्पर लड़ाना ही राजनीति का उद्देश्य रह गया है। बेशर्म नारों से जनता को भड़काया जा रहा है। आरक्षण के नाम पर जनता को मूर्ख बनाया जा रहा है। आरक्षण की आग दावानल की भांति देश में फैल रही है। यह सब हमारी वोट की राजनीति का परिणाम है। संविधान में आरक्षण की व्यवस्था दस वर्ष रखी गई थी। परंतु स्वार्थवश इसे अब तक बढ़ाया जाता रहा है। सरकार में निर्णयशक्ति का पूर्णतः अभाव है। जो लोग पुलिस महानिरीक्षक बन गए, उनकी संतानों को आरक्षण का लाभ देने में क्या औचित्य है? योग्य व्यक्ति पिछड़ रहे हैं। जाति के नाम पर अयोग्य व्यक्तियों को आरक्षण का लाभ दिया जा रहा है। स्वर्गीय दिनकरजी ने इस वेदना को समझा

"जो कहीं, पुण्य यदि नहीं बढ़ा शासन में,
आग सुलगती रही, जनता के मन में।
तामस बढ़ता गया, धकेल प्रभा को,
निर्बंध, पंथ, यदि मिला नहीं प्रतिभा को।
रिपु नहि यह अन्याय हमें मारेगा,
अपने घर में फिर स्वदेश तरेगा।

देश को हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई आदि धर्मों में बांटा जा रहा है। भाषा के नाम पर देश बंट रहा है। राष्ट्र भाषा की घोर उपेक्षा है। संसद में राजनेता अंग्रेजी में भाषण देते हैं। आम जनता को इससे क्या लाभ है? जापान

जर्मनी, सोवियत रूस आदि देश अपनी भाषा के बल पर ही आगे बढ़े हैं। परंतु यहां तो अंग्रेजी के वर्चस्व से हम पुनः गुलामी के अंधकार की ओर बढ़ रहे हैं। अधिकाधिक पदों के लिए देश को छोटे-छोटे राज्यों में बांटा जा रहा है। संविधान में निर्दिष्ट निर्देशों के विपरीत मंत्री-मंडल का विस्तार हो रहा है, नाम-मात्र का काम सौंपकर विधायकों को मंत्री जैसी सुविधाएं दी जा रही हैं। उच्चतम न्यायालय ने कहा, ''विधायकों को मंत्री जैसी सुविधा देना एक धोखा-धड़ी है। मंत्रीमंडल का विस्तार विधान-मंडल की कुल संख्या के पंद्रह प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए।'' परंतु यहां तो 'अंधा बांटे रेवड़ी फिर फिर घरवालों को देय वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। भाई-भतीजावाद ने तो स्वस्थ लोकतंत्र को ही मिट्टी में मिला दिया है। सच पूछा जाए तो राजनीति सेवा न रहकर व्यवसाय बन गया है। जहां राजनीति व्यवसाय बन जाती है, उस देश को अंधेरे के गर्त में पड़ने से भगवान भी नहीं बचा सकते।

आजादी के लिए संजोए सुनहरे सपनों को भ्रष्ट राजनीति ने नदारद कर रख दिया है। आजादी के रथ को सत्ताधीशों ने अपने आंगन में बांध लिया है। बापू और विनोबा के ग्राम स्वराज्य के विचार त्यागकर शहरों और पूंजीपतियों को बढ़ावा दिया जा रहा है। उद्योगों के नाम पर गरीब किसानों की जमीन छीनी जा रही है, विरोध करने पर उन्हें गोलियों से भूना जा रहा है। इस संदर्भ में विनोबाजी ने कहा था कि 'शेफर्ड की बनी छुरियों के स्थान पर अलीगढ़ की छुरियों से गले कट रहे हैं। छुरी देशी हो या विदेशी गले तो गरीबों के ही कट रहे हैं।'' सच पूछा जाए तो स्वराज्य पददलित लोगों को ऊंचा उठाने के लिए प्राप्त किया था। अमीर एवं धनी तो अंग्रेजी राज में भी सुखी था। इस संदर्भ में राजगोपालाचार्य ने ठीक ही कहा, ''हमने गायों के लिए चारागाह बनाने की कल्पना की थी, परंतु उसमें तो अब सांड चरने लग गए हैं।''

सच तो यह है कि भोगवादी राजनीति हमें प्रकाश की ओर नहीं ले जा सकती। संसद में जो आए दिन धींगा-मस्ती हो रही है, वह राजनीति का अंधकार ही तो है। गरीब जनता की गाढ़ी कमाई को पानी की तरह बहाया जा रहा है। संसद ठप्प होने पर भी सांसद वेतन के साथ एक हजार रुपए प्रतिदिन दैनिक भत्ता भी उठा रहे हैं। जिन लोगों के माध्यम से चुनकर आते हैं, उनके पास दो जून रोटी के भी साधन नहीं है। ऐसी स्थिति में राजनेताओं का मौज-मस्ती में रहना, राजनीति का काला पक्ष ही तो है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने बिहार में दीन महिला के पास एक साड़ी भी सुलभ नहीं थी, तो उन्होंने स्वयं एक धोती से तन ढंकना शुरू कर दिया। यही कारण है कि उनकी एक अंगुलि के इशारे मात्र पर देश के लिए अपना जीवन होम देने को तैयार रहते थे। आज के नेताओं द्वारा गला फाड़-फाड़ कर भाषण देने पर, उनकी कोई सुनने वाला नहीं है। सरकारी बसों से लाया जाता है। भारत में लोकतंत्र प्राचीन काल में था, परंतु उनका एकमात्र उद्देश्य जनकल्याण था। तब ही भारत ज्ञान का पुंज और विश्व गुरु था। आज वह दास की भांति देश-देश के सामने भीख मांग रहा है।

आज देश में जो कुछ हो रहा है, वह किसी से छिपा नहीं है। चारों ओर फैले भ्रष्टाचार, संप्रदायवाद, आतंकवाद, रिश्वतखोरी, कमिशन-बाजी जैसे कुकृत्यों से हम अंधकार की ओर अग्रसर हो रहे हैं। एक शायर ने ठीक ही कहा है

'जरा मुल्क के रहबरों को बुलाओ,
ए गलिएं ए कूंचे, ए मंजर दिखाओ।

अंत में विचार आता है

''कहां उजाले ने दिया हमें छोड़,
आजादी की गली में सौ-सौ अंधे मोड़।''

स्वतंत्रता की साफ तस्वीर को राजनेताओं ने धुंधली करके रख दिया है। चारों तरफ भ्रम रूपी मायाजाल है।

''पंछी समझते हैं, चमन बदला है,
हंसते सितारों का गगन बदला है।
श्मशान की खामोशी, मगर कहती है,
है, लाश वही, सिर्फ कफन बदला है।''

अभी हाथ से कुछ नहीं निकला है। देश-हित को ध्यान में रखकर, निजहितों के लिए देश-तोड़ने की प्रवृत्ति त्याग दी जाए तो अभी भी सुधार हो सकता है। प्रकाश पर्व पर प्रतिवर्ष रोशनी की नई आशा का संचार किया जाता है। काश! इस पर्व से राजनीति के आंगन में छाते जा रहे अंधेरे को प्रकाश में बदलने की पहल की जाए, तो भारत का भविष्य उज्ज्वल हो सकता है। अंत में मां, सरस्वती तथा लक्ष्मीजी से प्रार्थना है कि भारत सुनिर्मल राजनीति से जगमगा उठे।

''शक्तेमर्देन दुष्टे न, संकीर्ण स्वार्थ बुद्धिना।
रहिता विद्यायोपेता, राजनीति सुनिर्मला।।
यथा वाचि तथा कार्ये, सिद्धांतमिमआश्रिता।
सत्याहिंसापरा यत्र भारतं तद्धि राजताम्।।

राष्ट्र के कार्यों के नाम पर जिसमें स्वार्थपरायणता नहीं है, एकमात्र न्याय के पक्षपात से लोक-कल्याण में तत्पर है, शक्ति के दुष्ट-मद से और संकीर्ण स्वार्थों की बुद्धि से जो रहित है, जैसा वाणी में वैसा कार्य में, इस सिद्धांत पर जो आश्रित है, और जो सत्य-अहिंसा में परायण है, ऐसी विद्या से युक्त सुनिर्मल राजनीति जहां बरती जाती है, वह आदर्श भारत देदीप्यमान हो।

76, प्रताप नगर–तृतीय,
जयपुर 302018 (राजस्थान)

नदी की धार में – शिबू टी.

• रजनीकांत शुक्ल •

स्कूल के सभी बच्चों का उत्साह देखते ही बनता था। अपने-अपने स्तर पर सभी तैयारियों में लगे थे। कोई नाटक के संवाद याद करने में लगा था, कोई सुंदर गीत को गाने का अभ्यास कर रहा था। खेल प्रेमी बच्चे पी.टी. और योग क्रियाओं के प्रदर्शन की तैयारी कर रहे थे। स्काउट और एन.सी.सी. के बच्चे समारोह में व्यवस्था की जिम्मेदारी संभालने को तत्पर थे।

केरल के पालक्कड़ जिले के चेरपुल्लसरी स्कूल में ''युवा उत्सव'' मनाया जाना था। 23 सितंबर 2004 को आयोजित इस उत्सव में जिले के शिक्षा विभाग के अधिकारी भाग लेने वाले थे। इसका उद्देश्य बच्चों को देश और समाज के प्रति जागरूक बनाना था। निश्चित समय पर सुबह से सब आ जुटे। कार्यक्रम समय पर शुरू हो चुका था। साबू और शिबू दोनों भाई इसी स्कूल के छात्र थे। वे अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक संगठन स्काउटिंग के सदस्य थे। साबू इसमें बढ़ते-बढ़ते राज्य पुरस्कार प्राप्त कर चुका था जबकि छोटा शिबू उसकी तैयारी में लगा था।

शिबू अपने स्कूल के स्काउट ट्रुप का असिस्टेंट ट्रुप-लीडर था। वह आगे चलने वालों में से था। समारोह के दौरान अतिथियों का स्वागत और अनुशासन व्यवस्था के लिए उसने अपने साथियों की ड्यूटी तो लगाई ही थी नशे के खिलाफ एक नाटक में मुख्य भूमिका भी अभिनीत की थी। कार्यक्रम की समाप्ति के बाद सभी ने उसकी प्रशंसा की। मुख्य अतिथि ने उसे व अन्य प्रतिभाशाली बच्चों को पुरस्कृत किया। पंद्रह वर्षीय साबू आज बहुत खुश था।

कार्यक्रम सकुशल सम्पन्न हो गया। धीरे-धीरे सभी अतिथि स्कूल से विदा हुए। सामान को यथा-स्थान पहुंचाकर विदा होते-होते बारह-एक बज गए। अध्यापक से विदा ले साबू, शिबू और उनके कुछ मित्र अब खाली थे। उन्हें बस घर ही जाना था। उन्होंने तय किया चलो नदी में नहाते हैं फिर घर चलेंगे। स्कूल के समीप थोड़ी ही दूर पर थूथापूजा नदी बहती थी। उसके पानी को रोककर अन्नाकल सिंचाई परियोजना के माध्यम से नहर निकाली गयी थी।

ये सारे दोस्त व अन्य लोग भी अक्सर वहां जाते घूमते, नहाते। वहीं नजदीक एक सुंदर बगीचा भी लगाया गया था। नदी के साथ ही एक मंदिर की स्थापना भी की गई थी। स्थानीय लोग उसमें पूजा-पाठ भी करते थे। पानी के कारण वहां आसपास का क्षेत्र हरा-भरा रहता जो देखने में भी अच्छा लगता। साबू और उसके दोस्त जब वहां पहुंचे तब तक दोपहर के डेढ़ बज गए थे। उन सभी ने अपने कपड़े उतारे और नदी में किनारे की ओर नहाने के लिए उतर पड़े।

उनकी आपस में बातचीत होने लगी। उसका विषय स्कूल का ''युवा उत्सव'' ही था। साबू के साथी उसकी कार्यकुशलता की सराहना करने लगे।

साबू ने कहा ये कार्यकुशलता मैंने स्काउट का सदस्य बन कर सीखी है जो देश और समाज के लिए प्रतिक्षण सेवा करने के लिए तैयार रहते हैं। तेरह वर्षीय शिबू अपने भाई की बातों को बड़े ध्यान से सुन रहा था।

साबू ने आगे बताया हमारे सर कहते हैं, स्काउटिंग श्रेष्ठ नागरिक बनाने का प्रशिक्षण प्रदान करता है। पहले मैं भी लापरवाह हुआ करता था। यही सब बातें करते हुए वे नदी में नहा रहे थे। अचानक बातें करते-करते साबू का पांव लड़खड़ाया और उसका संतुलन बिगड़ गया। स्वयं को संभालने के प्रयास में वह पानी के बहाव के बीच आ गया और उसके पैर उखड़ गए। दुर्भाग्य से साबू को पानी में तैरना नहीं आता था। बचाव के लिए जब उसने उल्टे-सीधे हाथ-पांव मारे तो वह डुबकी खा गया और पानी की धारा में आगे की ओर बह चला।

साबू के दोस्तों और छोटे भाई शिबू ने यह सब देखा तो सन्न रह गये। अभी-अभी पल भर में हंसी-खुशी की बातें करते यह अचानक क्या हो गया। स्थिति विषम थी उनमें से किसी को तैरना नहीं आता था। बिना तैरना जाने बहते नदी के पानी में छलांग लगाने की उनकी हिम्मत नहीं हो रही थी। शिबू ने एक पल में देखा उसका भाई उसकी आंखों के सामने मौत के मुंह में समाने जा रहा है। बचने के लिए कोशिश करते साबू के प्रयास निरर्थक सिद्ध हो रहे थे। हर संभव प्रयास के बावजूद नदी की तेज धारा साबू को अपने साथ खींचे ले जा रही थी।

शिबू उस समय साबू के नजदीक था और बाकी मित्र थोड़ी दूरी पर। साबू जब अपने पूरे प्रयासों से किनारे तक आ पाने में असफल सिद्ध हुआ तो शिबू आगे बढ़ा। दरअसल शिबू को भी तैरना बिलकुल नहीं आता था। इसीलिए वह थोड़ा हिचक रहा था। परन्तु जब उसने देखा कि साबू अपने प्रयासों से बाहर निकल पाने में समर्थ नहीं होगा तो वह तत्क्षण उसे बचाने के लिए आगे बढ़ गया। उसने साबू को पकड़ने के लिए आगे हाथ बढ़ाया लेकिन वह उसकी पहुंच से दूर रहा। किनारे-किनारे से बढ़ते शिबू ने साबू की तरफ बढ़ने की कोशिश की तो वह स्वयं लड़खड़ा गया और वह भी साबू के साथ धारा की गिरफ्त में आ गया।

शिबू को भी साबू के साथ नदी की धारा में बहते हुए जाता देखकर नदी के तट पर हाहाकार मच गया। उसके साथी जोर-जोर से चिल्लाने लगे। अरे! कोई है? बचाओ। वे दोनों डूब रहे हैं। चीखते हुए वे बहते हुए उन दोनों के साथ-साथ नदी के किनारे-किनारे भागने लगे। इस बीच बच्चों की चीख-पुकार सुनकर कुछ लोग जब तक दौड़कर नदी के पास तक आए। पानी की धारा उन दोनों को काफी आगे तक बहा ले गई।

लोग उन्हें बचाने के लिए नदी में कूद पड़े लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। बहाव में वे आगे बह गए थे। लोग उन तक पहुंचे परंतु वे दोनों ही जीवित नहीं थे। उनके शव ही नदी से निकाले जा सके। अपने भाई की जान बचाने के लिए शिबू ने अपनी जान दे दी। सबकी आंखों में आंसू थे। यद्यपि शिबू को तैरना नहीं आता था और वह डूब भी नहीं रहा था किन्तु सिर्फ अपने भाई की जान बचाने के जज्बे ने उसे नदी में कूदने के लिए मजबूर कर दिया। बेशक वह अपनी इस कोशिश में सफल नहीं हो सका, लोग उसकी भावना दूसरे की जान बचाने की ललक, हिम्मत और बहादुरी की बात सोच-सोच कर भावुक हो रहे थे।

जरा-सी देर में वहां लोगों का हुजूम इकट्ठा हो गया। जो नहीं देखो वही, उन दोनों के सद्गुणों की प्रशंसा किए जा रहा था। काल पर किसका वश चला है। मरने के बाद लोगों की अच्छाइयां और बुराइयां ही लोगों को याद रह जाती हैं। स्कूल के बच्चे, उनके माता-पिता के साथ-साथ अभी शहर पहुंचे जिले के शिक्षा अधिकारी स्कूल अध्यापक आदि अनेक लोग वहां एकत्र हो गए। तैरना न जानते हुए भी जान बचाने के लिए कूद पड़ने वाले शिबू के जज्बे की हर कोई प्रशंसा कर रहा था।

शिबू की इसी बहादुरी की भावना को मान्यता देने के लिए जिले के उपशिक्षा निदेशक ने नेल्लया के ग्राम पंचायत अध्यक्ष और पुलिस सुपरिंटेन्डेंट की संस्तुति पर उसका नाम राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार के लिए भेजा। साथ ही केरल राज्य बाल कल्याण परिषद ने भी उसका नाम चयन के लिए राष्ट्रीय स्तर पर भेजा। राष्ट्रीय बाल दिवस 14 नवंबर के अवसर पर घोषित सूची में शिबू का नाम मरणोपरांत राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार के लिए चुन लिया गया।

प्रधानमंत्री के हाथों राजधानी नई दिल्ली में यह पुरस्कार शिबू की ओर से उसके पिता कृष्ण कुमार ने ग्रहण किया। पुरस्कार में रजत पदक प्रशस्ति पत्र व नकद पांच हजार रुपए की धनराशि लेते समय शिबू की याद कर उनकी आंख में एक बार फिर आंसू आ गए।

प्यारे बच्चो

''नन्हें दिल ने किया हौसला
छोटी आंखें ख्वाब बड़े,
मन की ये सुनने वाले हैं, तन
तो मन के साथ बढ़े,
जीवन के अनगिन सपने,
साकार उसी ने कर पाए,
अंधकार में बने उजाले, मौत
पे जो हो गए खड़े।''

एफ–380–एफ, सेक्टर–12,
विजयनगर, गाजियाबाद (उ.प्र.)

हमारा विगत और वर्तमान

• प्रो. महेन्द्र रायजादा •

विश्व के संपूर्ण देशों में भारत वर्ष की अपनी अलग पहचान है। विश्व की विविध संस्कृतियों में भारतीय संस्कृति अपना विशिष्ट स्थान रखती है। भारत की संस्कृति प्राचीनतम है। भारतीय संस्कृति उदात्त जीवन मूल्यों पर आधारित है। 'वसुधैव कुटुम्बकम' और 'सर्वे भवन्तु सुखिना' की अवधारणाएं भारतीय जीवन मूल्यों का आधार रही हैं। समन्वयवाद और सर्वहितकारी अवधारणा भारतीय संस्कृति की विलक्षणता एवं विशेषता है। किन्तु वर्तमान समय में औद्योगिक क्रांति के पश्चात हमारे समाज में अनेक प्रकार की विसंगतियां और अंतर्विरोध उत्पन्न हो गये हैं। आज लगता है व्यक्तियों की कथनी एवं करनी में बहुत अंतर आ गया है। यह एक चिंतनीय विषय है।

हमारे जीवन में जो विसंगतियां उत्पन्न हुई हैं, इसका मूल कारण हमारी मानवीय संवेदना में निरंतर स्खलन होना है। संवेदनशीलता में क्षरण हो रहा है। वर्तमान काल में व्यक्ति आत्मकेन्द्रित अधिक है समाज अथवा समष्टि के प्रति व्यष्टि की उदासीनता में लगातार वृद्धि हो रही है। बहुधा यह देखने में आता है कि दीन-दुःखी तथा पीड़ित व्यक्तियों की उपेक्षा होती है। दया, करुणा तथा ममता आदि के श्रेष्ठ भावों में कमी हो रही है।

प्राचीन काल में मनुष्यों में मेल-जोल, भाईचारा, सौहार्द तथा आत्मीयता का भाव अधिक था, क्योंकि तब व्यक्ति इतना आत्मकेन्द्रित नहीं था। एक कारण यह था कि हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था व्यवसायजनीन थी। एक वर्ण के लोग दूसरे वर्ण वालों से वस्तुओं का आदान-प्रदान (विनिमय) करते थे। सौहार्द तथा पारस्परिक स्नेह से पोषित लेन-देन स्वार्थपरता से रहित होता था। आज व्यक्ति अधिक स्वार्थी हो गया है। वैश्वीकरण और वर्तमान समय के बाजारवाद ने मानव को स्वार्थी और आत्मकेन्द्रित बनाया है।

विज्ञान और आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा के प्रचार-प्रसार के बावजूद आज मानव जिन संवेदनहीन, अमानवीय तथा बर्बरतापूर्ण कृत्यों में लिप्त है उन्हें समाचार-पत्रों द्वारा जानकर तथा सुनकर हमारे रौंगटे खड़े हो जाते हैं। आज व्यक्ति की जीवन शैली तथा कार्य धनार्जन प्रेरित हैं। बहुधा समाचारों में तथा दूरदर्शन से प्रसारित वारदातों में जघन्य हत्याओं के समाचार सुनने तथा दुर्घटनाएं देखने को मिलती हैं, जिन्हें असामाजिक, अमानवीय तथा बर्बरतापूर्ण कहा जा सकता है। इनके अलावा अपहरण तथा शिशुओं की भ्रूणहत्या के समाचार भी बहुधा पढ़ने और सुनने को मिलते रहते हैं। गुरु और शिष्य के पवित्र सम्बन्धों को दूषित एवं कलंकित करने के दुःखद समाचार भी यदाकदा मिल जाते हैं। कुछ समय पूर्व हुए निठारी हत्याकाण्ड ने तो समस्त अमानवीय, अनैतिक एवं पाशविक दुष्कृत्यों की पराकाष्ठा ही कर दी है। अबोध बच्चों के साथ कुकर्म और उनकी जघन्य हत्या कर देने से बड़ा कोई अन्य अपराध नहीं हो सकता है। ऐसे दुराचारी अपराधी व्यक्तियों को तो कठोर से कठोर दण्ड दिया जाना चाहिए।

राजनीति के क्षेत्र में महात्मा गांधी, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, जयप्रकाश नारायण तथा लाल बहादुर शास्त्री जैसे निष्ठावान, ईमानदार एवं चरित्रवान महापुरुष हुए थे। किन्तु वर्तमान काल में राजनीति में क्षेत्रवाद, जातिवाद तथा भाई-भतीजावाद का बोलबाला है। देश तथा देश की जनता से दल को बड़ा माना जा रहा है। वर्तमान समय में अपने दल की सत्ता बनाये रखने के लिए बहुधा निम्न तथा औछे हथकंडे अपनाये जाते हैं। खराब छवि वाले एवं बाहुबली व्यक्ति अक्सर विधानसभाओं तथा संसद के सदस्य बन रहे हैं। संसद तथा विधानसभाओं में विभिन्न दलों के बीच हाथापाई एवं अभद्र व्यवहार के दृश्य देखने को मिलते हैं। सामाजिक संस्थाओं में भी ईमानदारी तथा निष्पक्षता से कार्य करने वाले बहुत कम लोग पाये जाते हैं।

विगत 23 मार्च को देश में शहीदे आजम भगतसिंह, सुखदेव तथा राजगुरु का बलिदान दिवस मनाया गया। ये तीनों युवक देश की आजादी के लिये फांसी के फंदे पर झूल गये थे। इनके अतिरिक्त चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, अश्फाकउल्ला, खुदीराम बोस, गणेश शंकर विद्यार्थी तथा सुभाष चन्द्र बोस आदि ने अपने प्राणों का उत्सर्ग अपनी मातृभूमि भारतवर्ष के लिए कर दिया था। किन्तु वर्तमान समय में देशप्रेम का वह जज्बा लोगों में देखने को नहीं मिलता है।

उपर्युक्त राजनैतिक तथा सामाजिक विसंगतियां आज हमारे राष्ट्र में व्याप्त हैं। किन्तु अच्छे, निष्ठावान, कर्त्तव्य परायण, ईमानदार लोग हमारे देश में हैं, अतः विश्वास है शनैःशनैः देश पर मंडराती ये दुराचार और पाशविकता एवं अराजकता की काली घटायें तिरोहित होंगी। वर्तमान काल का प्रबुद्ध, सुशिक्षित, सहिष्णु तथा कर्त्तव्यनिष्ठ एवं देशप्रेमी, संवेदनशील मानव समाज एवं देश के हित में कार्य करेगा।

5–ख–20, जवाहरनगर,
जयपुर – 302004 (राजस्थान)

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा उद्घोषित

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह

(5 सितंबर से 11 सितंबर 2009)

अणुव्रत आंदोलन न सम्प्रदाय है न कोई परम्परा। असाम्प्रदायिक और शाश्वत धर्म है अणुव्रत। इसके परिपार्श्व में चरित्र विकास, नैतिक और अहिंसक मूल्यों की पुर्नस्थापना का अभियान विगत 60 वर्षों से गतिशील है। अणुव्रत मानव जाति के विकास के लिए पथ दर्शन है जिसकी शाश्वत अपेक्षा है। अणुव्रत कार्यक्रमों की शृंखला में इस वर्ष अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का क्रम निम्नानुसार निर्धारित हुआ है

◆ 5 सितंबर, 2009 शनिवार : सांप्रदायिक सौहार्द दिवस

दुनिया में संप्रदाय सदा रहे हैं, आगे भी रहेंगे। आवश्यकता है कि संप्रदाय सापेक्षता को समझा जाए तथा इससे जुड़ी संकीर्णता, द्वेष, दुर्भावना आदि को दूर किया जाए। विभिन्न संप्रदाय के प्रमुखों तथा अनुयायियों के साथ मिलकर संप्रदायों की सापेक्षता पर विचार किया जाए एवं सांप्रदायिक सौहार्द का वातावरण बनाया जाए। इस दिवस पर सर्वधर्म सम्मेलन, गोष्ठियां, सेमिनार आदि आयोजित हों।

◆ 6 सितंबर, 2009 रविवार : अहिंसा दिवस

वर्तमान में बढ़ती हुई हिंसा को रोकने के लिए अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने अहिंसा समवाय के माध्यम से अहिंसा प्रशिक्षण का प्रवर्तन किया है। इस दिन गोष्ठियों, सभाओं, शिविरों द्वारा अहिंसा के स्वर को जन-जन तक पहुंचाया जाए। अहिंसा में विश्वास रखने वाले व्यक्तियों/संगठनों से संपर्क किया जाए एवं सामूहिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएं।

◆ 7 सितंबर, 2009 सोमवार : अणुव्रत प्रेरणा दिवस

जन-जन को अणुव्रत आचार-संहिता, वर्गीय आचार-संहिता की जानकारी दी जाए। अणुव्रती बनो अभियान संचालित हो। अणुव्रत समिति का गठन किया जाए। 'अणुव्रत' आधारित भाषण, निबन्ध, चित्रकला प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएं।

◆ 8 सितंबर, 2009 मंगलवार : पर्यावरण शुद्धि दिवस

शुद्ध पर्यावरण स्वस्थ जीवन के लिए आवश्यक है। पर्यावरण चेतना को जन-जन तक पहुंचाया जाये यही इस दिवस का उद्देश्य है। इस दिन स्थान-स्थान पर यात्राएं, भाषण, चित्रकला, नाटक, गायन प्रतियोगिताएं, प्रदर्शनियां आयोजित की जाएं।

◆ 9 सितंबर, 2009 बुधवार : नशामुक्ति दिवस

नशा नाश का द्वार है। आज नशे के अनेक प्रकार प्रचलित हैं। सभी लोगों को नशे के दोषों, हानियों की जानकारी दी जाये तथा नशामुक्ति का संकल्प कराया जाए। इस कार्यक्रम में चिकित्सकों, नशामुक्ति से संबंधित सरकारी विभागों तथा स्वयंसेवी संस्थाओं का सहयोग भी लिया जाए। नुक्कड़-नाटक, गीत, प्रदर्शनी, भाषण आदि के विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाएं।

◆ 10 सितंबर, 2009 वृहस्पतिवार : अनुशासन दिवस

अनुशासन व्यक्ति और समाज का मूलाधार है। अनुशासन के अभाव में जीवन बिखर जाता है। इस दिन अनुशासन के संदर्भ में जानकारी दी जाये एवं अनुप्रेक्षाओं के प्रयोग भी करवाए जायें।

◆ 11 सितंबर, 2009 शुक्रवार : जीवन विज्ञान दिवस

शिक्षा का सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक रूप जीवन में निखरे। शिक्षा को मूल्यपरक बनाने के लिए जीवन विज्ञान विकल्प है। इस दिन शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों शिक्षक-शिक्षिकाओं को जीवन-विज्ञान की जानकारी दी जाये एवं प्रयोग भी करवाये जायें।

अणुव्रत महासमिति

अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110002 ● दूरभाष : (011) 2323 3345
फैक्स : (011) 2323 9963 ● E-mail: anuvrat_mahasamiti@yahoo.com

बढ़ें संयम पथ पर

Golchha Organisation
INDUSTRY • COMMERCE • WELFARE

लोकमान्य गोल्छा

अध्यक्ष
गोल्छा ऑर्गेनाइजेशन
एवं
समस्त गोल्छा परिवार

गोल्छा हाउस, काठमांडो (नेपाल)

फोन नं. : 4250001/4249939 (D)

फैक्स : 00977-1-4249723

दूरस्थ शिक्षा में प्रामाणिकता की आवश्यकता : आचार्य महाप्रज्ञ

लाडनूं। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित द्विदिवसीय क्षेत्रीय समन्वयक कार्यशाला के समापन पर क्षेत्रीय समन्वयकों को संबोधित करते हुए कहा दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से आज लाखों छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इसमें पाठ्य सामग्री विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय द्वारा दी जाती है। अतः पाठय सामग्री भी गुणवत्ता से पूर्ण हो इसके लिए लेखकों को पाठ्य सामग्री निर्माण में प्रामाणिकता बरतनी चाहिए। इस शिक्षा में सम्पर्क कक्षाओं में भी अध्यापन होता है अतः इन सम्पर्क कक्षाओं में अध्यापन करने वालों को भी प्रामाणिक होना चाहिए। इस शिक्षा में परीक्षा केन्द्र दूर-दूर होते हैं। अतः दूर स्थित केन्द्रों पर सम्यक् रूप से परीक्षा का आयोजन करना आसान नहीं है। परीक्षा के आयोजन में लगे हुए लोगों को प्रामाणिक होना चाहिये तथा परीक्षार्थियों को भी प्रामाणिकता के साथ परीक्षा देने की प्रेरणा मिलनी चाहिए। दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता लाने के लिए हर स्तर पर प्रामाणिकता अपेक्षित है।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा भारतीय वाङ्मय में शिक्षा के चार उद्देश्य बताये गए हैं श्रुतज्ञान, चित्त एकाग्र, सन्मार्ग में प्रतिष्ठित होना तथा दूसरों को सन्मार्ग में प्रतिष्ठित करना। इसके अतिरिक्त भी शिक्षा का उद्देश्य आत्म निर्भर बनाना है। भारत जैसे देश में जहां जनसंख्या को देखते हुए उच्च शिक्षा केन्द्रों की कमी के कारण सबको नियमित शिक्षा देना संभव नहीं है वहां इस शिक्षा की कमी को दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से दूर किया जाता है। आज के इस तकनीकी युग में तकनीकी विकास के कारण टेली-कॉन्फ्रेंसिंग, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग इत्यादि विधियों से दूरस्थ शिक्षा अत्यन्त उपयोगी साबित हो रही है। जरूरी है इस शिक्षा को जन-जन तक पहुंचाने में लगे क्षेत्रीय समन्वयकों की सक्रियता की। इनके प्रयास के माध्यम से यह शिक्षा और अधिक उपयोगी हो सकती है। उन्होंने अपेक्षा की कि क्षेत्रीय समन्वय अणुव्रत के मूल्यों का पालन करते हुए अपने कार्यों को पूरी प्रामाणिकता के साथ करें।

कार्यक्रम की अध्यक्षा कुलपति डॉ. समणी मंगलप्रज्ञा ने कहा हमारे विश्वविद्यालय का महत्वपूर्ण अंग है दूरस्थ शिक्षा निदेशालय। जिसके माध्यम से पूरे देश में दूरस्थ शिक्षा पाठयक्रम संचालित हो रहा है। हमें गर्व है कि हमारे अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ हैं, जो सम्पूर्ण मानवता को अहिंसा शांति का संदेश दे रहे हैं। कुलपति ने इस अवसर पर आचार्यश्री की अहिंसा यात्रा की उपलब्धियों का जिक्र भी क्षेत्रीय समन्वयकों से किया तथा आह्वान भी किया कि आप लोग अपने-अपने क्षेत्रों में दूरस्थ शिक्षा के साथ अहिंसा एवं शांति की आवाज बुलंद करें।

उपनिदेशक डॉ. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने कार्यशाला का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए कहा कार्यशाला में जहां एक तरफ विश्वविद्यालय की सभी गति-विधियों से क्षेत्रीय समन्वयकों को परिचित करवाया गया, वहीं दूसरी तरफ उनके विचार और सुझाव लिये गये हैं। जिसके आधार पर दूरस्थ शिक्षा के संदर्भ में ठोस भावी योजना तैयार की जायेंगी। कार्यशाला का प्रारंभ समणी दिव्यप्रज्ञा के मंगल संगान से हुआ। विश्वविद्यालय के कुलसचिव गोपाल स्वरूप श्रीवास्तव ने सभी संभागियों से कार्यशाला का लाभ उठाने की बात कही। निदेशालय द्वारा पूर्व में स्मृति विकास एवं क्रोध नियंत्रण प्रतियोगिता के प्रतियोगियों को पुरस्कृत भी किया गया। जम्मू के महेशचन्द्र एवं इन्दौर के दक्षदेव गौड को प्रथम कानपुर के डॉ. राजीवनयन एवं मेहकर के डॉ. नंदकुमार नाहर द्वितीय तथा दिल्ली के राजेश भयाना एवं रतलाम के नित्येन्द्र को तृतीय पुरस्कार से नवाजा गया। ज्ञातव्य है कि प्रथम को पांच हजार, द्वितीय को तीन हजार रुपये तथा तृतीय को दो हजार रुपए का नकद पुरस्कार के साथ प्रमाण पत्र दिये गये। इसके अतिरिक्त पांच प्रतियोगियों को एक-एक हजार रुपए के सांत्वना पुरस्कार प्रदान किये गये। इस अवसर पर फरीदाबाद के जे.एस. भाटिया सांचौर की वीना शर्मा एवं कोलकाता के तरुण सेठिया ने अपने अनुभव सुनाए। आभार ज्ञापन डॉ. संजीव गुप्ता ने किया।

परीक्षक दबावमुक्त होकर मूल्यांकन करें

लाडनूं। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय लाडनूं के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित एक दिवसीय परीक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन प्रो. मुनि महेन्द्र कुमार के सान्निध्य में आयोजित हुई। कार्यशाला में 20 परीक्षकों को प्रशिक्षण दिया गया। इस अवसर पर प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार ने परीक्षकों को संबोधित करते हुए कहा विद्यार्थियों का समुचित मूल्यांकन परीक्षकों को करना चाहिए। उन्हें सभी प्रकार के दबावों से मुक्त होकर मूल्यांकन करना चाहिए। दबाव न तो क्षेत्रीय समन्वयकों का होना चाहिए और न ही विद्यार्थियों का।

उपनिदेशक डॉ. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने कहा परीक्षक प्रायोगिक परीक्षा लेने के पूर्व संबंधित पाठ्यक्रम का पूर्व में अध्ययन कर विद्यार्थियों का परीक्षण करें तो सही परीक्षण हो सकता है। परीक्षण के पूर्व परीक्षक विद्यार्थी की उपस्थिति का अवश्य परीक्षण कर लें कि इसने 75 प्रतिशत उपस्थिति पूरी की है या नहीं। आवश्यक उपस्थिति पूरी करने के बाद ही परीक्षण करें। डॉ. संजीव कुमार गुप्ता ने परीक्षण की विधियों पर विस्तार से प्रकाश डाला।

इस अवसर पर अशोक भास्कर एवं प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने भी परीक्षकों का मार्गदर्शन किया। इसके पश्चात सभी परीक्षकों को अवार्ड लिस्ट देकर परीक्षण करवाया गया तथा परीक्षण के बाद परीक्षकों की समीक्षा की गयी। इस कार्यशाला के समापन पर कुलपति महोदया ने कहा कि दूरस्थ शिक्षा निदेशालय अपने प्रत्येक आयाम को सशक्त करने के लिए कई प्रकार की कार्यशालाओं का आयोजन कर महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। परीक्षक परीक्षण कार्यशाला के माध्यम से परीक्षकों के मूल्यांकन में समता रहेगी।

लिपिकला से ही सुरक्षित रह सकती है साहित्य संपदा : आचार्य महाप्रज्ञ

लाडनूं 24, जुलाई। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित हस्तलिखित पाण्डुलिपि लोकार्पण समारोह में इस सदी की प्रथम भगवती सूत्र की हस्तलिखित पाण्डुलिपी का लोकार्पण किया गया। 273 पन्नों में छह लाख अठारह हजार दो सौ चौबीस अक्षरों से सुसज्जित इस पाण्डुलिपी का लेखन साध्वी कल्पलता ने किया है। इस मौके पर साध्वी कल्पलता ने अपने द्वारा हस्तलिखित आचार्य तुलसी के साहित्य की 450 पन्नों की पाण्डुलिपी भी आचार्य महाप्रज्ञ के चरणों में समर्पित की।

आचार्य महाप्रज्ञ ने समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है भाषा। भाषा के कारण ही मनुष्य और पशु में अन्तर किया जाता है। स्वयं के ज्ञान को भाषा के द्वारा ही दूसरों तक पहुंचाया जा सकता है। कम्प्यूटर के युग में ग्रंथों का हस्त लेखन करना आश्चर्यजनक लगता है, पर लिपिकला के कारण ही साहित्य संपदा को सुरक्षित रखा जा सकता है। हस्तलिखित पाण्डुलिपी 500 वर्ष तक सुरक्षित रहती है और कम्प्यूटर में फीड प्रति वायरस के कारण कभी भी नष्ट हो सकती है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने जैन लिपिकला पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भारतीय साहित्य संपदा को सुरक्षित रखने का सबसे बड़ा कार्य जैन मुनियों, साध्वियों एवं यतियों ने किया है। उन्होंने वर्तमान में पाण्डुलिपि कर्त्ता मुनि सुमेरमल सुदर्शन एवं साध्वी कल्पलता की सुन्दर लिपि की सरहाना करते हुए कहा कि भगवती सूत्र लेखन के समय साध्वी ने कायगुप्ति, वाक्गुप्ति एवं मनोगुप्ति की साधना की है। उन्होंने इस दुरुह कार्य के लिए मुनि सुमेरमल एवं साध्वी कल्पलता को एक वर्ष पर्यन्त तक विगय एवं 101 कल्याणक की बख्शीस दी। आचार्य महाप्रज्ञ ने पाण्डुलिपि कला लुप्त न हो इस पर जोर देते हुए लिपि कौशल पाठ्यक्रम तैयार करने का निर्देश दिया।

युवाचार्य महाश्रमण ने तेरापंथ में सूक्ष्मलिपि के क्षेत्र में मुनि कुन्दनमल के उल्लेखनीय कार्य की चर्चा करते हुए कहा कि भगवती सूत्र का लेखन कर साध्वी कल्पलता ने महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। उन्होंने मुनि सुमेरमल द्वारा लिखित पाण्डुलिपी भी प्रदर्शित की।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि पाण्डुलिपि का लेखन कर साध्वी कल्पलता ने श्रम साध्य कार्य किया है।

मुनि सुमेरमल सुदर्शन ने तेरापंथ में पाण्डुलिपि कला पर प्रकाश डालते हुए आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा स्थापित लिपियों की चर्चा की।

साध्वी कल्पलता ने अपने लेखन का ज्ञान कराने में साध्वी कमलूजी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहने की चर्चा करते हुए कहा कि यह भगवती सूत्र पांच वर्षों में पूर्ण हुआ है। इसका लेखन आचार्य महाप्रज्ञ की प्रेरणा शक्ति के कारण संभव हुआ है।

प्रो. प्रेमसुमन जैन ने कहा पाण्डुलिपि लेखन का इतिहास भी समृद्ध है। प्रारंभ में जैन ग्रंथों का लेखन करना दुरुह कार्य था। उन्होंने भगवती सूत्र के लेखन कार्य की सरहाना करते हुए इसको ऐतिहासिक बताया।

विश्वविद्यालय की कुलपति समणी डॉ. मंगलप्रज्ञा ने किसी साध्वी द्वारा लिखी गई पाण्डुलिपियों का महत्त्वपूर्ण स्थान बताया। इस मौके पर साध्वियों एवं समणियों ने गीतों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में कोलकाता से समागत प्रो. बनर्जी समेत अनेक प्राकृत के विद्वान उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. जिनेन्द्र जैन ने किया।

संस्कारी बालक ही सुखी परिवार का आधार

लाडनूं 26, जुलाई। युवाचार्य महाश्रमण ने जैन विश्व भारती में गुवाहाटी से समागत ज्ञानशाला के बालक-बालिकाओं एवं जन-समुदाय को संबोधित करते हुए कहा बाल पीढी में संस्कार निर्माण किया जाये तो सुखी परिवार का सपना साकार हो सकता है। संस्कारी बालक सुखी परिवार का आधार है। जो माता-पिता अपने पुत्र को संस्कारी नहीं बनाते हैं उन्हें साहित्य जगत में शत्रु कहा गया है। ज्ञानशाला के साथ बच्चों को जोड़ने वाले कार्यकर्त्ता, अभिभावक प्रशिक्षक साधुवाद के पात्र हैं। सत्य को जीवन में लाने के लिए सरलता जरूरी है। सरलता के अभाव में सत्य प्राप्त नहीं हो सकता।

ज्ञानशाला के गुरुदर्शन यात्रा के प्रायोजक बिमलकुमार नाहटा एवं आंचलिक संयोजक विजयसिंह चौरड़िया के नेतृत्व में 70 व्यक्तियों का संघ उपस्थित हुआ। ज्योति सुराना, हितेश चौपड़ा, शुभम पुगलिया, कोमल सेठिया, स्वाति संचेती, श्रद्धा बोथरा ने लघु नाटिका के द्वारा ज्ञानशाला की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। ललिता श्यामसुखा, विजयसिंह चौरड़िया ने गीत की प्रस्तुति दी। इस मौके पर गुवाहाटी सभा की तरफ से प्रायोजक बिमल कुमार नाहटा के प्रति आभार व्यक्त किया।

अणुव्रत मासिक संगोष्ठी

दिल्ली 25, जुलाई। दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति के तत्वावधान में ओसवाल भवन विवेक विहार में शासन गौरव मुनि ताराचंद के सान्निध्य में ''अणुव्रत मासिक संगोष्ठी'' आयोजित हुई। संगोष्ठी का विषय था 'व्यवसाय में अणुव्रत की भूमिका'।

शुभारंभ अणुव्रती बहनों द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। भाजपा जिला प्रकोष्ठ के अध्यक्ष एवं अणुव्रत महासमिति के संयुक्त मंत्री बाबूलाल गोलछा ने विषय पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर अन्य वक्ताओं ने भी अपने विचार रखे। दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति के अध्यक्ष बाबूलाल दूगड़ ने मुख्य वक्ता डॉ. जीवनमल जैन का परिचय देते हुए साहित्य द्वारा उनका सम्मान किया। डॉ. जीवनमल जैन ने कहा समाज के साधु-साध्वियों ने समाज को जागरूक करने के लिए ठोस कदम उठाया है। नैतिकता व प्रामाणिकता जो समाज की पहचान थी वह धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही है। आज खाद्य-पदार्थों एवं दवाइयों में मिलावट की जा रही है। डॉ. जिसे भगवान के बाद दूसरा दर्जा प्राप्त है। वह भी पैसे कमाने के चक्कर में अपना कर्त्तव्य भूलता जा रहा है। मुनि सुमतिकुमार ने कहा आज लोग पैसा बहुत कमा रहे हैं लेकिन उसके लिए झूठ-सच, दगा-फरेब सब समान हैं। बहुत कम व्यक्ति प्रामाणिक मिलते हैं। अणुव्रत का घोष है व्यवसाय के साथ प्रामाणिकता बरतनी सीखें। पैसा कमाना बुरी बात नहीं पर पैसा कमाओ सच्चाई, ईमानदारी और नैतिकता से। वेदों में भी लिखा है सो हाथों से कमाओ तथा हजार हाथों से दान दो। कार्यक्रम का संचालन राज गुनेचा ने किया।

राष्ट्रव्यापी बन गई है शराब की समस्या

जयपुर, 13 जुलाई। शाकाहार अहिंसा का पर्यायवाची है। अहिंसा और शाकाहार एक-दूसरे के पूरक हैं। मानसिक एकाग्रता संकल्प शक्ति के आधार से ही व्यक्ति शाकाहार व व्यसनमुक्त बन सकता है। व्यसन आज फैशन का रूप ले चुका है। आज का युवा वर्ग इसमें संलग्न होता जा रहा है। शराब की समस्या आज राष्ट्रव्यापी है। इस पर नियंत्रण करने के लिए मानसिक संकल्प आवश्यक है। ये शब्द विख्यात गांधीवादी चिंतक एस.एन. सुब्बाराव ने अणुविभा केन्द्र मालवीय नगर में मुनि विनयकुमार 'आलोक' के सान्निध्य में राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति द्वारा आयोजित शाकाहार व व्यसनमुक्ति पर परिचर्चा करते हुए व्यक्त किए। डॉ. सुब्बाराव मुनि विनयकुमार 'आलोक' से मिलने आये थे। डॉ. सुब्बाराव ने आगे कहा शराब की समस्या गहराती जा रही है। पहले निम्न वर्ग के लोग इसका प्रयोग करते थे, पर आज तो यह उच्च वर्ग में भी विशेष रूप से अड्डा जमा चुकी है। देश की बर्बादी को रोकने के लिए इस समस्या का समाधान जरूरी है।

मुनि विनयकुमार 'आलोक' ने कहा यह समस्या विकराल बनती जा रही है। इसका निदान न सरकार के पास है न सामाजिक संस्थाओं के पास। इसका निदान दृढ़ इच्छाशक्ति के द्वारा व्यक्ति स्वयं ही कर सकता है। जन चेतना का जागरण आवश्यक है। जब तक जनता में जागृति नहीं आयेगी तब तक संदिग्ध रहेगी। जनता के जागरण के लिए सभी संस्थाएं एकजुट होकर कार्य करें तो उसका समाधान निकल सकता है।

राजस्थान समग्र सेवा समिति के अध्यक्ष सवाई सिंह ने कहा यह मुद्दा महत्वपूर्ण बन गया है। इस पर अब केवल विचार ही नहीं क्रियान्विति आवश्यक है। रामवल्लभ अग्रवाल अध्यक्ष नशाबन्दी समिति ने महत्वपूर्ण सुझाव देते हुए कहा यह कार्य असंभव नहीं है, शक्ति का नियोजित उपयोग होना चाहिए। जिससे कारगर रूप सामने आए।

साहित्यकार नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' ने कहा 51 व्यक्तियों की नशामुक्ति वाहिनी बनाई जानी चाहिए। वे लोग अपनी शक्ति का समुचित उपयोग करें।

पूर्व राज्यपाल जस्टिस नवरंगलाल टिबरेवाल ने कहा चिंतन की अपेक्षा कर्म की आवश्यकता है। कार्य शुरू होना चाहिए परिणाम तो आयेंगे ही। परिचर्चा में राष्ट्रीय योजना के मंत्री हनुमान सहाय शर्मा, युवा कांग्रेस राजस्थान के मंत्री मदनलाल यादव, कर्नल एन.के. शर्मा, अल्पसंख्यक आयोग के पूर्व अध्यक्ष सरदार जसवंत सिंह, शान्ति बहन, रामेश्वर विद्यार्थी, वीणा जैन, बलराम सिंह, जी.एल. नाहर, इत्यादि ने परिचर्चा में भाग लिया। इस अवसर पर राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष जी.एल. नाहर ने डॉ. सुब्बाराव का साहित्य द्वारा सम्मान किया।

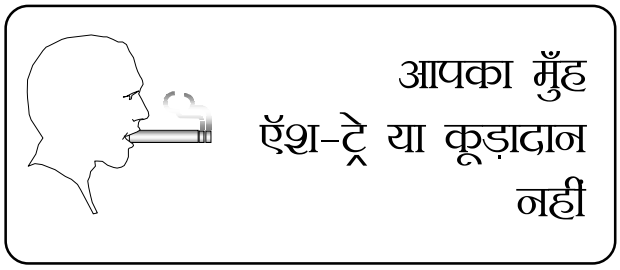

जी.एल. नाहर द्वारा संगठन यात्रा

जयपुर, 3 जुलाई। राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष जी.एल. नाहर ने राजस्थान की संगठन यात्रा के अंतर्गत निम्न क्षेत्रों का दौरा किया

28-6-2009 से दिनांक 1-7-2009 के मध्य उन्होंने मदनगंज-किशनगढ़, जोधपुर, पाली, सिरियारी, बगड़ी एवं आसपास का क्षेत्र, बालोतरा, जसोल इत्यादि क्षेत्रों का स्पर्श करते हुए इस दौरान वहां के स्थानीय कार्यकर्तओं से संपर्क साधते हुए साध्वी सरस्वती, साध्वी चांदकुमारी व सरोजकुमारी, मुनि सागरमल, मुनि मणिलाल, साध्वी विद्यावती, साध्वी मधुस्मिता, मुनि रविन्द्रकुमार का दर्शन लाभ लिया। साथ ही क्षेत्र में अणुव्रत की गतिविधियों को सुचारु एवं गति देने हेतु विचार-विमर्श किया गया। वहां विराजित चारित्रात्माओं को भी अणुव्रत से संबंधित विशेष कार्यक्रम आयोजित करने की अर्ज की गयी।

दिनांक 1-7-2009 को पाली में साध्वीश्री के सान्निध्य में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम के दौरान जी.एल. नाहर ने ''अणुव्रत की प्रासंगिकता'' पर विचार व्यक्त किए। साध्वीश्री ने भी अणुव्रत की महत्ता पर सारगर्भित वक्तव्य दिया। बालोतरा में धनराज ओस्तवाल एवं उनकी धर्मपत्नी कमला ओस्तवाल का विशेष सहयोग रहा। पाली में सुरेन्द्र दूगड़ मंत्री अणुव्रत समिति पाली का विशेष सहयोग रहा। साथ ही अणुव्रत से जुड़े कई महानुभावों विशेषकर सुरेन्द्र कुमार सालेचा, गुमान भंसाली से अणुव्रत के विभिन्न पहलुओं पर वार्ता हुई। बगड़ी में निर्मल रांका, गौतम सेठिया, राजेन्द्र पोखरना से अणुव्रत के संबंध में बातचीत हुई। 2 जुलाई 09 को पुनः जयपुर पहुंचे।

अणुव्रत समिति की नई कार्यकारिणी

उदयपुर, 8 जून। अणुव्रत समिति उदयपुर की चुनाव संबंधी साधारण सभा की बैठक एस.एस. इंजीनियरिंग कॉलेज उमरड़ा में आयोजित हुई। समिति का वार्षिक चुनाव डॉ. यशवंत कोठारी की देखरेख में संपन्न हुआ। आगामी सत्र के लिए गणेश डागलिया को पुनः अध्यक्ष चुना गया। इस दौरान पुनःनिर्वाचित अध्यक्ष डॉ. गणेश डागलिया ने अपनी नयी कार्यकारिणी की घोषणा की

संरक्षक : राजीव दासोत, उपाध्यक्ष : डॉ. कैलाश मानव, मानिक नाहर, शब्बीर के. मुस्तफा एवं मदन तातेड़, मंत्री : अरुण कोठारी, कार्यवाहक मंत्री : डॉ. निर्मल कुणावत, संयुक्त मंत्री : अशोक राठोड़, प्रचार मंत्री : राजेन्द्र सेन, कोषाध्यक्ष : सुरेश सियाल एवं संगठन मंत्री : जमनालाल दशोरा, लेखक मंच संयोजक : एच.एल. कुणावत, साम्प्रदायिक सौहार्द संयोजक : मोहम्मद तारिक खान, पर्यावरण संरक्षण संयोजक : आर.के. जैन, नशामुक्ति संयोजक : वैद्य शोभालाल ओदिच्य, जीवन विज्ञान व प्रेक्षाध्यान संयोजक : डॉ. रंगलाल धाकड़। कार्यकारिणी सदस्यों के रूप में मनमोहन राज सिंघवी, अरविंद चित्तौड़ा, डॉ. जयराज आचार्य, प्रदीप मोगरा, सुबोध कोठारी को नियुक्त किया।

अध्यक्ष गणेश डागलिया ने स्वागत वक्तव्य में वर्षभर किये गये कार्यक्रमों की जानकारी दी। सभा में अरूण कोठारी, डॉ. रंगलाल धाकड़, सुबोध कोठारी, मनमोहन राज सिंघवी, डॉ. शोभालाल ओदिच्य, अभय सिंघवी, रूपशंकर पालीवाल, एस. एस. शेखावत, राजेन्द्र सेन, डॉ. निर्मल कुणावत ने भाग लेते हुए भविष्य में होने वाले अणुव्रत कार्यक्रमों हेतु सुझाव रखे।

समिति एवं कॉलेज द्वारा वृक्षारोपण

उदयपुर। अणुव्रत समिति उदयपुर एवं एस.एस. इंजीनियरिंग कॉलेज उमरड़ा के संयुक्त तत्वावधान में कॉलेज परिसर में 501 पौधों का रोपण जेल अधीक्षक एस.एस. शेखावत, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष गणेश डागलिया, कॉलेज संस्थापक मनमोहन राज सिंघवी एवं शांतिलाल सरूपरिया के सान्निध्य में किया गया। राजेन्द्र सेन ने बताया कि उक्त रोपित पौधों में नीम, मोलसरी, बकायन, फाइकस प्रजाति एवं फल-फूल के छायादार पौधे लगाए गए हैं। इस अवसर पर डॉ. रंगलाल धाकड़, प्रदीप मोगरा, अरुण कोठारी, डॉ. निर्मल कुणावत, डॉ. शोभालाल ओदिच्य, डॉ. यशवंत कोठारी, अरविन्द चित्तौड़ा, जमनालाल दशोरा, राजेन्द्र सेन, सुरेश सियाल, राकेश चित्तौड़ा, नजमा मेवाफरोश, ममता दशोरा, भंवर भारती, भगवती नागर, सुबोध कोठारी, रूपशंकर पालीवाल, सुनील खोखावत, रामप्रसाद गुप्ता, अभय सिंघवी, सुनील लूणावत, पीयूष सरूपरिया ने वृक्षारोपण किया।

निःशुल्क अणुव्रत प्रशिक्षण केन्द्र

नाभा (पंजाब)। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र नाभा (पंजाब) के तत्वावधान में ग्राम अलौहरा कला में कक्षा-1 से कक्षा-7 तक के बच्चों को पढ़ाने हेतु निःशुल्क प्रशिक्षण केन्द्र खोला गया। इसका उद्घाटन स्थानीय सरपंच बीबी परमजीतकौर द्वारा किया गया। इस अवसर पर राज रानी, जरनैल सिंह, गुरजंत सिंह, सरदार बलवीर सिंह, नाभा सभा के सदस्य, नाभा अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र के सदस्य एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। नाभा प्रशिक्षण केन्द्र के निदेशक अजयकुमार यादव ने कहा वर्तमान में बच्चों के लिए शिक्षा बहुत जरूरी है। अगर बच्चे शिक्षित होंगे तो देश का भविष्य उज्ज्वल होगा। बालकों के बौद्धिक विकास के साथ-साथ भावात्मक विकास भी जरूरी है। हमारा मुख्य लक्ष्य हो कि बच्चों में नैतिकता का विकास हो। अणुव्रत कोचिंग सेंटर के सभी बच्चों में नैतिकता, सद्संस्कार बीज की भांति उगेगा। जिस तरह बीज से वृक्ष तैयार होता है उसी तरह अणुव्रत की एक अलग पहचान बनकर देश-विदेशों में नाम रोशन होगा। इस प्रशिक्षण केन्द्र का उद्देश्य है कि बच्चों को बौद्धिक शिक्षा के साथ-साथ भावात्मक शिक्षा का भी प्रशिक्षण दिया जायेगा। आज बड़े-बड़े पब्लिक स्कूलों में बौद्धिक विकास पर तो जोर दिया जा रहा है लेकिन बच्चों में संस्कार निर्माण नहीं हो पा रहा है। इसलिए जरूरी है कि बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ जीवन विज्ञान का भी प्रशिक्षण दिया जाय, ताकि उनका समग्र विकास हो सके। इस अवसर पर बच्चों को आसन, महाप्राण ध्वनि, अणुव्रत गीत, हंसने की क्रिया एवं प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान के प्रयोग इत्यादि के प्रयोग करवाए। इस प्रशिक्षण केन्द्र में सभी बच्चों ने पढ़ने की इच्छा जताई। इस प्रशिक्षण केन्द्र में शिक्षिका के रूप में अमनदीप कौर, संदीप कौर, रमनदीप कौर, गुरजिन्द्र कौर, सुखविन्द्र कौर अपनी सेवाएं दे रही हैं।

राजेश गुप्ता ने कहा कि बड़े-बुजुर्गों का सम्मान व सेवा करने से आयु, विद्या, यश, बल आदि की प्राप्ति होती है। जिससे मनुष्य सदैव उन्नति की ओर अग्रसर होता है। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र के प्रशिक्षक अजय कुमार यादव ने सभी पधारे हुए लोगों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

कन्या भ्रूणहत्या रोकथाम रैली

गोगुन्दा, 17 जुलाई। साध्वी विद्यावती की प्रेरणा से अभा महिला मंडल के निर्देशन में कन्या भ्रूण-हत्या रोकथाम रैली निकाली गयी। रैली में सु.बा. मंदर उ.प्रा. विद्यालय, रा.क. उ.मा. विद्यालय तथा रा.मा. विद्यालय की बालिकाओं ने भाग लिया। रैली मगन ज्ञान मंदिर से रवाना होकर मुख्य मार्गों से होते हुए प्रताप चौक, ब्रह्मपुरी के रास्ते बस स्टैण्ड होते हुए वापिस मगन ज्ञान मंदिर पहुंची। रैली में कन्या भ्रूणहत्या के विरोध में उद्घोष एवं नारों की स्वर लहरी गूंज रही थी। तत्पश्चात मगन ज्ञान मंदिर सभा भवन में गोष्ठी का आयोजन किया गया।

साध्वी सूर्ययशा ने कहा कन्या भ्रूण-हत्या एक महापाप है। इसका मुख्य कारण दहेज प्रथा है। साथ ही उन्होंने कन्याओं एवं बहिनों को संकल्प करवाया कि जिस घर में दहेज की मांग हो उस घर में बहू के रूप में नहीं जाएं। साध्वी कौशलप्रभा ने गीत के माध्यम से कन्या भ्रूण-हत्या के कारण व निवारण पर विचार रखे। मुख्य अतिथि चिकित्सा अधिकारी गोगुन्दा डॉ. रायपुरिया, विशिष्ट अतिथि नेमीचंद सुराणा ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम की अध्यक्षता चतर सिंह फत्तावत ने की। इस अवसर पर सोहनलाल कोठारी, कुसुम व्यास, कन्हैया मोहन आदि ने विचार रखे। संचालन राजकुमारी खोखावत ने किया। आभार व्यक्त महिला मंडल की अध्यक्षा अनोखा पोरवाल तथा सीमा भोलावत ने किया।

कन्या भ्रूणहत्या रोकथाम सेमिनार

भीलवाड़ा, 14 जुलाई। आज की ज्वलंत समस्या कन्या भ्रूणहत्या की रोकथाम जनजागृति से ही संभव है। ये विचार साध्वी भीखाजी ने महिला मंडल द्वारा आयोजित कन्या भ्रूणहत्या निषेध सेमिनार को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। साध्वी प्रमिलाकुमारी ने कहा सारी समस्या की जड़ यह है कि मनुष्य प्रकृति से संस्कृति की ओर एवं संस्कृति से विकृति की ओर मुड़ता जा रहा है। हृदय में यदि करुणा का सागर हो तो व्यक्ति कभी गलत काम नहीं कर सकता। साध्वी पुण्यप्रभा ने कन्या भ्रूणहत्या के कारण एवं निवारण पर विस्तार से चर्चा की।

मुख्य अतिथि डॉ. संगीता काबरा ने भ्रूणहत्या के दुष्परिणामों के चिकित्सकीय पहलुओं पर प्रकाश डाला। विशिष्ट अतिथि अमृत सांसद कीर्ति बोरदिया एडवोकेट ने भ्रूणहत्या से संबंधित कानूनी प्रावधानों की व्याख्या की। कमला शिशोदिया ने स्वागत किया। विमला रांका, उषा शिशोदिया, आनंदबाला टोडरवाल, ललिता रांका ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। संचालन अंजना रांका ने किया।

व्यक्ति पहले नैतिक बने

जगराओ, 19 जुलाई। आज आवश्यकता है कि व्यक्ति पहले नैतिक बने फिर धार्मिक। तभी धर्म के स्वरूप में निखार आ सकता है। ये विचार मुनि रमेशकुमार ने सभा भवन में आयोजित प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

मुनिश्री ने कहा कि धर्म का अर्थ है जीवन को समग्रता से धारण करना। धर्म आनंद की यात्रा है। आचार्य तुलसी एवं वर्तमान आचार्य महाप्रज्ञ ने अणुव्रत, जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं अहिंसा प्रशिक्षण के द्वारा राष्ट्र को नैतिकता व आध्यात्मिकता से समृद्ध बनाने के लिए मानव जाति को ये अवदान दिये हैं।

वार्ता में पत्रकार ओमप्रकाश भंडारी, विशाल दिड़ाना, सुखदेव गर्ग व हरविन्दर सिंह सगु ने भाग लिया। स्थानीय सभा की ओर से साहित्य एवं प्रतीक चिह्न द्वारा उनका सम्मान किया गया। स्वागत बलवीर सिंह बांसल ने किया। अशोक जैन, प्रवीण जैन, सुरेश जैन, दिनेश जैन, नारी रत्न निर्मला जैन, प्रीति जैन कार्यक्रम में उपस्थित थे।

साध्वीप्रमुखा के काव्य में युगबोध व आत्मबोध

नई दिल्ली, 15 जुलाई। महिला मंडल दिल्ली के तत्वावधान में साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा की काव्यकृति ''सांसों का इकतारा'' पर समीक्षात्मक गोष्ठी का आयोजन हिन्दी भवन में आयोजित हुआ। समारोह में अपने विचार व्यक्त करते हुए अखिल भारतीय महिला कांग्रेस की अध्यक्षा एवं राज्यसभा सांसद प्रभा ठाकुर ने कहा साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा के काव्य में युगबोध व आत्मबोध दोनों हैं। उनकी कविताएं क्रांति या राजनीतिक उथल-पुथल की छाया से दूर है। उनमें आस्था व भावुक मन की पीड़ा के बिम्ब तैर रहे हैं।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता एवं आकाशवाणी के निदेशक डॉ. लक्ष्मी शंकर वाजपेयी ने कहा साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा के गीत आस्था, हौसला व विश्वास के साथ मंजिल का पता देते हैं।

मुख्य अतिथि गीतकार डॉ. कुंवर बेचैन ने कहा पानी में पानी ढूंढना कलाकारी नहीं है, रेगिस्तान में पानी ढूंढना कलाकारी है। सुप्रतिष्ठित कवि डॉ. बलदेव बंशी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा साध्वीप्रमुखा की ये कविताएं पूरी सदी के अंधकार की देहरी पर प्रभाती हैं। आज ज्ञान यश की अत्यन्त जरूरत है।

जैन विश्व भारती की कुलपति समणी डॉ. मंगलप्रज्ञा ने साध्वीप्रमुखा के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। जया बोथरा ने गीतों की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम को सान्निध्य प्रदान करते हुए मुनि सुमतिकुमार ने कहा साध्वीप्रमुखा दुर्लभ विशेषताओं का संचित कोष है।

कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण से हुआ। महिला मंडल की मंत्री सरोज छाजेड़ ने युवाचार्य महाश्रमण के संदेश का वाचन किया एवं अध्यक्ष रजनी बाफणा ने स्वागत भाषण दिया। मुनि आदित्यकुमार व कवि राजेश चेतन ने अपनी भावनाएं व्यक्त की। अतिथियों का मंडल की ओर से साहित्य एवं प्रतीक चिह्न द्वारा सम्मान किया गया। संचालन सुनिता जैन ने किया।

पंच दिवसीय संस्कार निर्माण शिविर

पाली। साध्वी सुदर्शना के सान्निध्य में पंचदिवसीय संस्कार निर्माण शिविर आदर्श नगर के गौतम भवन में रखा गया। इसमें ज्ञानशाला, कन्या मंडल व किशोर मंडल के 80 बच्चों ने भाग लिया। साध्वीश्री ने कहा बच्चों का जीवन कोमल, सरल, निर्मल होता है। उनमें जिस प्रकार के संस्कार दिए जाएं वे उन्हीं के अनुरूप ढल सकते हैं। बच्चों को संस्कारी बनाने में मुख्य भूमिका अभिभावकगण की होती है। अभिभावकों को चाहिए कि वे अपने बच्चों को इस प्रकार के शिविरों में अवश्य भेजें। उन्होंने करुणा, मैत्री, ममता को अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने ज्ञान मुद्रा, महाप्राण ध्वनि का उच्चारण किया। साध्वी पुनीतयशा ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग एवं मुद्रा ध्वनि का प्रशिक्षण दिया। साध्वी लक्षितप्रभा ने बच्चों को तत्वज्ञान, शुद्ध प्रतिलेखन ज्ञानवर्धक गेम्स खिलाए। हेमराज ने आसन, प्राणायाम एवं हास्य के प्रयोग रोचक ढंग से करवाये। प्रतियोगिता में भाग लेने वालों में नैतिक, सिमरन, मोहित, सोनल, दीक्षा, विद्या, मोहित, मुस्कान ने प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्रमिला तृप्ति निधि ने परिसंवाद कर शिविर गीतिका का संगान किया। डूंगरमल ने सारगर्भित वक्तव्य के साथ आभार व्यक्त किया।संचालन भेरचंद गोगड़ ने किया।

कर्नाटक में धर्मगुरुओं की संगोष्ठी

गांधीनगर। सभा भवन गांधीनगर में कर्नाटक सरकार द्वारा प्रस्तावित गोवंश हत्या निषेध विधेयक के समर्थन में धर्मगुरुओं की संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कर्नाटक प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष जुगराज सोलंकी एवं सभाध्यक्ष कन्हैयालाल चिप्पड़ ने समस्त संस्थाओं और समाज की ओर से उपस्थित धर्मगुरुओं एवं अतिथियों का स्वागत किया। मंगलाचरण जगद्गुरु माता महादेवी ने किया। साध्वी कीर्तिलता ने गोष्ठी के लिए प्राप्त पूज्यवरों के संदेशों का वाचन किया। साध्वीश्री ने अपने वक्तव्य में कहा युगपुरुष महावीर ने ''अहिंसा परमोधर्म'' का संदेश दिया। जैन धर्म में किसी के मन को ठेस पहुंचाना, अपने मन में किसी के प्रति बुरे विचार लाना को भी हिंसा माना जाता है। जहां गोवंश की हत्या तो एक बहुत बड़ा पाप है। गोवंश की रक्षा के लिए किये जाने वाले अभियान अत्यन्त सामायिक हैं। जब तक इस देश में गाय की रक्षा होती थी तब तक भारत सोने की चिड़िया कहलाता था और यहां दूध की नदियां बहती थीं। मगर आज भारत की क्या हालत है? इसका कारण है गोवंश की रक्षा न होना। अतः इस विषय पर जो संगोष्ठी रखी गई है इस पर ठोस कदम उठाये जायें यही हमारी भावना है।

संगोष्ठी में कर्नाटक सरकार के गृहमंत्री वी.एस. आचार्य, पशु संवर्धन मंत्री रेणु नायक एवं खाद्य मंत्री हल्प्पा भी उपस्थित थे।

विषय चर्चा के उपरांत सर्वधर्म गुरुओं ने घोषणा पत्र जारी किया। इस घोषणा पत्र के जरिये कर्नाटक सरकार के प्रस्तावित गोवंश हत्या निषेध विधेयक को संपूर्ण समर्थन एवं आशीर्वाद प्रदान किया। घोषणा पत्र में कर्नाटक के सभी माननीय विधायकों से अपील की गयी कि दलगत राजनीति से ऊपर उठकर इस विधेयक को सर्वसम्मति से पारित करें। साथ ही भारत की अन्य राज्य सरकारें भी इस प्रकार के विधेयक को पारित करने की अपील करें।

सभा ने गोवंश हत्या निषेध विधेयक गृहमंत्री को प्रेषित किया। गृहमंत्री ने सभा को आश्वासन दिया कि यह विधेयक पूरी तरह से तैयार है तथा इसे विधान सभा सत्र में प्रेषित किया जायेगा। पशु पालन मंत्री ने इस विधेयक की पूर्व तैयारी में लगे अथक श्रम प्रकाश डाला।

संगोष्ठी में साध्वी कीर्तिलता, श्री बालगंगाधरनाथ महास्वामी आदिचुनचुनगिरि महासंस्थान, पेजावर मठ उडुपी जगद्गुरु मद्धवाचार्य पीठ के विश्वेश्वरा तीर्थ स्वामी, मुनि रविरत्न म.सा., आचार्य शांतिसूरि के सुशिष्य मुनि कल्पतरजी म.सा. पूज्य जगद्गुरु माता महादेवी, मुनि प्रमुख सागर-दिगंबर संत, सम्यायोग आश्रम के योगानन्द स्वामी, मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के प्रमुख के. एम. अनीस उल हक, मुनि ललित सूरी म.सा. ईसाई धर्म से डेनिल क्रिश्टापर, सभा, कर्नाटक प्रादेशिक अणुव्रत समिति, तेयुप, महिला मंडल तथा विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारीगण, समाज के वरिष्ठ भाई-बहिन उपस्थित थे। संचालन दयानन्द स्वामी ने किया।

बच्चों में संस्कार निर्माण जरूरी

अजमेर, 12 जुलाई। सुंदर विलास सभा भवन में साध्वी कानकुमारी के सान्निध्य में चलाई जा रही ज्ञानशाला के बच्चों में संस्कार निर्माण हेतु कार्यक्रम रखा गया। साध्वीश्री ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा जिस प्रकार बीज को अच्छी तरह वपन करने के लिए अच्छी तरह से सिंचित करना पड़ता है। उसी प्रकार बच्चों में अच्छे संस्कारों का निर्माण करने के लिए अभिभावकों को भी जागरूक रहने की जरूरत है। साध्वीश्री ने बच्चों को नियमित ज्ञानशाला में आने का संकल्प करवाया। महिला मंडल की अध्यक्षा सरला कोठारी ने आभार व्यक्त किया।

द्विदिवसीय जीवन विज्ञान प्रशिक्षण

कोलकाता, 12 जुलाई। जीवन विज्ञान अकादमी कोलकाता के तत्वावधान में 12 एवं 13 जुलाई 2009 को जीवन विज्ञान प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन साध्वी कनकश्री के सान्निध्य में हुआ। केन्द्रीय जीवन विज्ञान अकादमी के सहनिर्देशक डॉ. अंशुमान शर्मा एवं महेन्द्र कुमार अकादमी से जुड़े हुए सदस्यों को प्रशिक्षित करने हेतु जैन विश्व भारती, लाडनूं से पधारे।

कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र के अवसर पर भंवरलाल सिंघी, पूर्वांचल शाखा के संयोजक रतन दूगड़, मूलचंद डागा व अकादमी के अध्यक्ष प्रकाश नाहर ने जीवन विज्ञान के ठोस कार्यक्रमों के संबंध में अपने विचार प्रस्तुत किये। डॉ. शर्मा ने अत्यन्त सरल एवं वैज्ञानिक पद्धति से प्रशिक्षण दिया। जीवन विज्ञान के मौलिक तत्व आवश्यकता और प्रासंगिकता की अभिव्यक्ति देते हुए उन्होंने विज्ञान और अध्यात्म को जोड़कर चलने की बातें सरल शैली में प्रस्तुत की। महेन्द्र कुमार ने प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया। कार्यक्रम का संचालन सुनीता सेठिया ने किया। आयोजन को सफल बनाने हेतु विक्रम सेठिया, पुष्पा बैद, ज्योति दूगड़, प्रतिभा पुगलिया, उषा बैद एवं सरिता नाहटा ने अपना पूर्ण सहयोग दिया।

युवक समाज की रीढ है

केलवा, 12 जुलाई। मुनि जतनकुमार 'लाडनूं' ने सभा भवन में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा युवक समाज की रीढ है। जिस समाज का युवक जागृत होता है वह समाज भी जागृत होता है। जिस समाज की युवाशक्ति लुप्त होती है वह समाज भी लुप्त होता है। युवकों में कार्य करने की क्षमता होती है। अगर वह अपने जोश का प्रयोग समाज निर्माण में करे तो समाज का कायाकल्प हो सकता है।

मुनि आनंदकुमार कालू ने कहा युवाओं को चाहिये कि वह अपने समाज हित के बारे में अवश्य चिंतन करे। मुनिश्री ने श्रावक समाज एवं युवाशक्ति को आह्वान किया कि समाज सेवा के लिए हर पल तैयार रहें। सुभाष कोठारी ने स्वागत वक्तव्य दिया। सभी अतिथियों का शॉल एवं साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। संचालन मूलचंद मेहता ने एवं आभार ज्ञापन पूरणचंद गांग ने किया।

नाभा में पत्रकार वार्ता

नाभा। मुनि रमेशकुमार ने कहा पंजाब हरा-भरा सम्पन्न प्रदेश है। जिसको पांच नदियों की धरती होने का गौरव हासिल है। यह गुरुओं की धरती है। लेकिन अफसोस है कि पंजाब के नौजवान बड़ी तेजी से छठा दरिया (नशे का दरिया) में डूबते जा रहे हैं। उन्होंने कहा नौजवानों को रोका नहीं गया तो जीवन और जिंदगी का रस खत्म हो जाएगा। पूरे समाज के लिए यह बहुत ही हानिकारक सिद्ध होगा। ये विचार मुनि रमेशकुमार ने स्थानीय सभा भवन में पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

उन्होंने कहा सामाजिक बुराइयां नशा, हत्या, भ्रूणहत्या रोकने के लिए जन-चेतना को जगाना आवश्यक है। जीवन में अच्छे संस्कार प्राप्त करने से समाज अच्छा बन सकता है। इसके लिए माता-पिता, धर्मगुरु एवं अध्यापक वर्ग तीनों को मिलकर नौजवानों को समझाना होगा, तभी समाज में जागृति आ सकती है।

पत्रकार वार्ता में अजीत समाचार हिन्दी के संपादक डॉ. हरिन्द्र गोयल, अजीत समाचार पंजाबी के संपादक सुरिन्द्र चहल, देश सेवक समाचार के संपादक राजिन्द्रजीत सिंह, दैनिक ट्रिब्यून से राजेश ऋषि, ज्ञान जोतु के संपादक दर्शन सिंह बाजवा, रोजाना स्पीक्स मैन से डॉ. शमशेर सिंह, जगवाणी एवं पंजाब केसरी से विजय कुमार सिंगला शामिल हुए। पत्रकार वार्ता में अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र शेरपुर के प्रभारी संजय भाई ने आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी। दीपक गर्ग ने आभार व्यक्त किया।

गुरु वंदन - छात्र अभिनंदन

डीसा, 9 जुलाई। भारत विकास परिषद् डीसा द्वारा विद्यालय के प्रांगण में गुरु वंदन - छात्र अभिनंदन कार्यक्रम का आयोजन हुआ। मंचासीन अतिथियों में भारत विकास परिषद् के डॉ. तुषारभाई शाह, डॉ. आलोकभाई सिंघल, डॉ. जगदीशभाई ठक्कर, परेशभाई जीवरानी, अमृतभाई दवे, राजेशभाई त्रिपेदी उपस्थित रहे। अतिथियों का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र वितरित किये गये। गुरु-शिष्य की महत्ता बताते हुए जितेन्द्रभाई प्रजापति ने गुरु-शिष्य से संबंधित प्राचीन कथाएं प्रस्तुत की। संचालन मेहुलभाई पटेल ने किया।

अणुव्रत महासमिति द्वारा प्रकाशित अणुव्रत आंदोलन के आधार स्तंभ रहे लोककर्मियों की जीवनी प्रकाशन के क्रम में विगत तीन वर्षों में निम्न पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं

अणुव्रत के लौहपुरुष : जयचंदलाल दफ्तरी संपादक : डॉ. छगनलाल शास्त्री, डॉ. महेन्द्र कर्णावट **मूल्य : 150 रु.**

अणुव्रत महारथी : देवेन्द्र कुमार कर्णावट संपादक : डॉ. छगनलाल शास्त्री, डॉ. महेन्द्र कर्णावट **मूल्य : 300 रु.**

उक्त दोनों ग्रंथ 50 प्रतिशत रियायती मूल्य पर अणुव्रत महासमिति के दिल्ली कार्यालय से प्राप्त किये जा सकते हैं। डाक व्यय 25 रु. अतिरिक्त देय होंगे।

50% छूट

अणुव्रत साहित्य पचास प्रतिशत रियायत पर उपलब्ध

संपर्क सूत्र :

अणुव्रत महासमिति

अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110002

दूरभाष : (011) 23233345 फैक्स : (011) 23239963

E-mail: anuvrat_mahasamiti@yahoo.com

झप्रोसी में प्रेक्षाध्यान शिविर

झप्रोसी (यूक्रेन), 17 जुलाई। मनो-शरीर विज्ञान एवं आत्म-विज्ञान के मतानुसार पूरा शरीर चेतना का केन्द्र है। किन्तु पूरे शरीर में चेतना की सघनता नहीं है। जहां चेतना की सघनता है, जहां विशेष प्रकार के प्राणधारा के प्रकम्पन्न होते हैं उसे प्रेक्षाध्यान की भाषा में चैतन्य केन्द्र कहा जाता है। यही चैतन्य केन्द्र प्रेक्षा के कारण प्रेक्षाध्यान अपने आपको अन्य ध्यान पद्धति से भिन्नता प्रकट कराता है। विज्ञान ने भी इस बात को सिद्ध किया है कि भावधारा को प्रभावित करने में अंतःस्रावी ग्रंथियां अहम भूमिका निभाती है। ध्यान के द्वारा ग्रंथियों के स्राव में अपेक्षित परिवर्तन किया जा सकता है। चैतन्य केन्द्र प्रेक्षा से यह संभव है। ये विचार समण सिद्धप्रज्ञ ने छह दिवसीय प्रेक्षाध्यान अभ्यास शिविर के दौरान शिविरार्थियों के मध्य व्यक्त किये। शिविर में 72 भाई-बहनों ने भाग लिया।

इस दौरान समण सिद्धप्रज्ञ ने कायोत्सर्ग, श्वास प्रेक्षा, अंतर्यात्रा, चैतन्य केन्द्र प्रेक्षा, प्राणायाम, मंत्र ध्यान, लेश्या ध्यान एवं अनुप्रेक्षा की सैद्धांतिक जानकारी देते हुए रशियन भाषा में प्रयोग कराए।

प्रेक्षा इंटरनेशनल के प्रतिनिधि एवं योगा अध्यापक विकास सुराना ने शिविर की सफलता में अहम् भूमिका निभाई। शिविर में प्रेक्षा इंटरनेशनल की विस्तार से जानकारी देते हुए वीसीडी दिखाई गयी। शिविरार्थियों को प्रमाण-पत्र दिये गये। आयोजक की ओर से लुबा ने आभार व्यक्त करते हुए पुनः आगमन हेतु निवेदन किया।

• सींप्रोमोल, 19 जुलाई। समण सिद्धप्रज्ञ ने प्रेक्षाध्यान की विस्तार से जानकारी देते हुए स्ट्रेस मेनेजमेंट, एंगर मेनेजमेंट तथा टाइम मेनेजमेंट का प्रशिक्षण दिया तथा प्रेक्षाध्यान के चार चरण चैतन्य केन्द्र प्रेक्षा, लेश्या ध्यान एवं प्राणयाम के प्रयोग कराए। शिविर में 36 लोगों ने भाग लिया।

प्रेक्षा इंटरनेशनल के मुख्य प्रतिनिधि योगा शिक्षक विकास सुराना ने आसन, कायोत्सर्ग एवं यौगिक क्रियाओं के प्रयोग कराए एवं प्रेक्षाध्यान की वीसीडी दिखाते हुए प्रयोग करवाए। प्रारंभ में अन्जा सिरोन ने समणजी का परिचय देते हुए अंग्रेजी भाषा का अनुवाद किया। झीनापदा एवं आला ने आभार ज्ञापन करते हुए पुनः आगमन हेतु निमंत्रण दिया।

• सींप्रोमोल, 20 जुलाई। हमारा आभामंडल हमारे बारे में जितना जागरूक एवं ज्ञानी है उतने हम स्वयं भी नहीं हैं। शरीर में रोग आने के पहले आभामंडल में आते हैं। इसके पहले की रोग शरीर को पकड़े हम रोग को पकड़ सकते हैं। क्रीनीयल फोटो कैमरे से आभामंडल (ओरा) का फोटो लिया जा सकता है। कैमरे के द्वारा आभामंडल को जाना जा सकता है, पर बदला नहीं जा सकता। लेश्याध्यान अर्थात् रंगों के ध्यान से आभामंडल को न केवल देखा जा सकता है अपितु बदला भी जा सकता है। स्वभाव परिवर्तन के लिए आभामंडल को बदलना जरूरी तथा आभामंडल में परिष्कार हेतु लेश्याध्यान जरूरी है। ये विचार समण सिद्धप्रज्ञ ने युक्रेन के सीम्प्रोपोल स्थित कॉसमॉस स्कूल में प्रेक्षाध्यान अभ्यास शिविरार्थियों के मध्य लेश्याध्यान एवं भाव परिष्कार विषय पर बोलते हुए व्यक्त किए।

प्रेक्षाध्यान एक वैज्ञानिक पद्धति है

लुधियाना। मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' के सान्निध्य में महिला मंडल लुधियाना द्वारा प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन हुआ। सुंदर नगर स्थित अग्रवाल धर्मशाला में आयोजित इस शिविर में बहिनों ने प्रशिक्षण के साथ प्रयोग भी किए।

मुनि उदितकुमार ने शिविर का निर्देशन करते हुए कहा आज आदमी बाहर आनंद की खोज कर रहा है। बाहर तो मात्र भटकाव है, उलझन है। सारा सार हमारे अंदर है, आनंद भी भीतर है, सुख भी भीतर है। इसकी अनुभूति तभी हो सकती है जब नियमित रूप से निरंतर ध्यान के प्रयोग किए जाएं, अनुप्रेक्षा तथा योग से स्वयं को भावित किया जाए।

मुनि उदितकुमार ने कहा आज आदमी विभिन्न कारणों से तनाव के साये में जी रहा है। तनाव का प्रभाव हमारे मन पर पड़ता है। मन यदि प्रभावित हो गया तो उसका असर शरीर पर भी आता है। इसी कारण कुछ ऐसी बीमारियां सता रही हैं जो जांच से समझ में नहीं आ रही है। ऐसी मनः कायकि बीमारियां दवा से नहीं ध्यान के प्रयोगों से ठीक हो सकती हैं। प्रेक्षाध्यान पद्धति एक वैज्ञानिक एवं अनुभूत प्रयोग पद्धति है। महिला मंडल की अध्यक्ष मंजू सिंघी ने आभार ज्ञापन किया।

• मुनि सुमेरमल के सान्निध्य में बच्चों का साप्ताहिक शिविर सुंदरनगर अग्रवाल धर्मशाला में युवक परिषद द्वारा आयोजित हुआ। शिविर में बच्चों को संस्कार का ज्ञान दिया गया। कंठस्थ ज्ञान के साथ उसकी लिखित परीक्षा भी ली गई। साथ ही विविध ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताएं रखी गई। सफल बच्चों व अन्य सभी को प्रोत्साहन स्वरूप प्रदीप दूगड़ ने पारितोषिक प्रदान किए। प्रशिक्षण में मुनि अनंतकुमार का सराहनीय श्रम रहा।

प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन

चेन्नई। मुनि जिनेशकुमार के सान्निध्य में महिला मंडल के तत्वावधान में साहूकारपेठ भवन में एक दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन हुआ। मुनि जिनेशकुमार ने शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए कहा भारतीय संस्कृति में ध्यान को नवनीत कहा गया है। ध्यान के द्वारा विषम परिस्थिति को सम किया जा सकता है। ध्यान के द्वारा सत्य को उद्घाटित किया जा सकता है। ध्यान स्वभाव परिवर्तन, तनावमुक्ति की प्रक्रिया है। प्रेक्षाध्यान के द्वारा अनेक रोगों की चिकित्सा की जा सकती है। ध्यान से चित्त निर्मल होता है। आभामंडल पवित्र होता है। ध्यान से ऊर्जा की प्राप्ति होती है। ध्यान समाधि की ओर ले जाता है। मुनिश्री ने शिविरार्थियों को नियमित प्रेक्षाध्यान करने की प्रेरणा दी।

मुनि परमानंद ने ध्यान विषयक जानकारी प्रदान की। गौतम सुराणा ने कायोत्सर्ग का प्रयोग कराया। रजनी दूगड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का प्रारंभ दीपमाला भंडारी द्वारा प्रस्तुत प्रेक्षा गीत से हुआ। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन पुष्पा हिरण व शान्ता गेलड़ा ने किया। स्वागत भाषण मीना पुनमिया ने दिया।

कत्लखाने : १०० तथ्य

• डॉ. भद्रेश जैन •

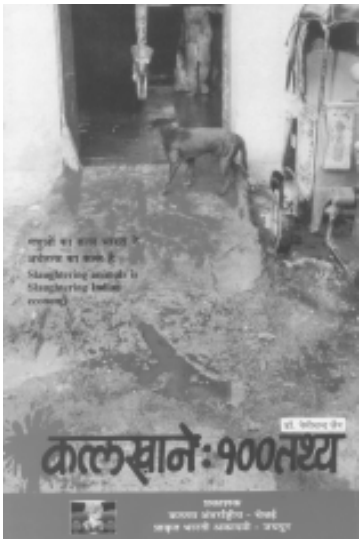

प्रस्तुत कृति कत्लखानों की सचित्र विद्रूपता एवं क्रूरता का दिग्दर्शन करवाने वाली कृति है। इस कृति के इससे पूर्व आठ संस्करण निकले, जिनके माध्यम से लगभग 60,000 प्रतियां पाठकों के मध्य पहुंची तथापि इस पुस्तक की मांग आती ही रही एवं नवम संस्करण का प्रकाशन किया गया है। ''करुणा अंतर्राष्ट्रीय चेन्नई'' एवं ''प्राकृत भारती अकादमी जयपुर'' दोनों संस्थाओं ने संयुक्त प्रकाशन के रूप में यह संस्कारण निकाला है। इस 48 पृष्ठीय पुस्तिका में मानस को झकझोर देने वाले 100 तथ्यों का समावेश किया गया है। यह पुस्तक डॉ. नेमीचंद जैन ने अपने अनुभव तथा शोधपरक तथ्यों के आधार पर लिखकर जता दिया है कि अगर हमारे राष्ट्र में इसी प्रकार का रक्तपात होत रहा तो राष्ट्र में सुख-शांति, अमन-चैन की धारा कैसे संभव है?

चाहे मानव हो या पशु दोनों जीवित रहना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। अपने प्राण सभी को प्रिय हैं, किसी को भी अप्रिय नहीं। कत्लखानों द्वारा की जा रही बर्बरता, उसके परिणाम, कत्लखानों द्वारा फैलाया जा रहा प्रदूषण आदि विषयों को पुस्तिका में स्पष्ट किया गया है। इस पुस्तिका में जितने भी आंकड़े हैं वे पुराने हैं, लेखक के समय के हैं तथापि दिल दहला देने वाले हैं। नये आंकड़े तो और भी अधिक खतरनाक होंगे।

शाकाहार के प्रबल पक्षधर एवं प्रचारक डॉ. नेमीचंद जैन भले ही देह से आज इस दुनिया में नहीं रहे, किन्तु उनकी यह कृति उनके नाम को, काम को युग-युग तक जीवित रखेगी।

इस कृति को अगर आज के तथाकथित नेता, राष्ट्र के कर्णधार, न्यायाधीश, समाज के हितचिंतक आदि अक्षरशः पढ़ लेते हैं तो वे मांसाहार एवं कत्लखानों के कभी भी पक्षधर नहीं होते तथा आज सर्वोच्च न्यायालय यह नहीं कहता कि पशुवध मानव का मूल अधिकार है। जिसे जीवन देना नहीं आता, उसे जीवन लेने का कोई अधिकार नहीं है। आज विदेशी मुद्रा अर्जित करने के लिये नित-नये कत्लखाने खोले जा रहे हैं यही स्थिति जारी रही तो कालांतर में पशुओं का अकाल मंडराने लगेगा तथा हमारी कृषि प्रणाली एवं पर्यावरण पर घातक प्रभाव पड़ेगा।

दृष्टव्य है, भारतीय एवं विदेशी महानायकों के विचार जो आवरण पृष्ठ पर मुद्रित हैं

जवाहरलाल नेहरू ने कभी कहा था ''मैं कसाईखानों को बिल्कुल नापसंद करता हूं। मैं जब कभी किसी बूचड़खाने के पास से गुजरता हूं, मेरा दम घुटने लगता है वहां कुत्तों का झपटना और चील-कौओं का मंडराना घृणास्पद लगता है। पशु हमारे देश का धन हैं। इनके ह्रास को मैं कदापि पसंद नहीं करता। सरकार ने लाहौर में जो कसाईखाना खोलने का निश्चय किया है, मैं इसका घोर विरोध करता हूं। इसके विरोध में देशवासी जो भी कदम उठायेंगे, मैं उनके साथ रहूंगा।'' और प्रबल जन-विरोध के आगे विदेशी सरकार को भी घुटने टेकने पड़े थे तथा प्रस्तावित योजना को रद्द करना पड़ा था।

जॉर्ज अल्बर्ट आइन्स्टाइन का कथन है जब हम खुद मृत प्राणियों की जीती-जागती कब्रें हैं, तब फिर हम इस दुनियां में किन्हीं आदर्श स्थितियों की कल्पना कैसे कर सकते हैं?

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ का कथन है हम हैं कत्ल किये गये जानवरों की जिन्दा कब्रें उन जानवरों की जिन्हें हमने अपनी भूख मिटाने के लिए मौत के घाट उतारा। यदि मनुष्य की तरह पशुओं को भी अधिकार होते तो....?

निष्कर्षतः 40-50 चित्रों से युक्त यह पुस्तक पठनीय ही नहीं, अपितु जन-जन में प्रचारित करने योग्य है तथा प्रचारित कर एक बहुत बड़ा जनमत खड़ा करने में भी यह पुस्तक सहायक बन सकती है। आशा है दोनों संस्थान अपने संयुक्त प्रकाशन से भविष्य में भी पाठकों को लाभान्वित करते रहेंगे, संस्थान एवं संस्थान के पदाधिकारियों को साधुवाद।

कृति	: कत्लखाने 100 तथ्य (सचित्र)
लेखक	: डॉ॰ नेमीचन्द जैन
पृष्ठ	: 36 मूल्य : 30 रुपये,
प्रकाशक	: करुणा अंतर्राष्ट्रीय 70, शम्बुदास स्ट्रीट, चेन्नई-600001 एवं प्राकृत भारती अकादमी 13-ए, मालवीय नगर, जयपुर-302017

राष्ट्रीय सचिव : करुणा अंतर्राष्ट्रीय
70, शम्बुदास स्ट्रीट, चेन्नई–600001